राष्ट्रीय दैनिक

प्रातःकिरण

दिल्ली एवं पटना से प्रकाशित

हर खबर पर पकड़

/Pratahkiran /Pratahkiran /Pratahkiran

11 इंग्लैंड के खिलाफ न्यूजीलैंड की फॉलोऑन खेलते हुए शानदार बल्लेबाजी

कंगना रनौत ने अक्षय कुमार की सेल्फी को बताया फ्लॉप... 12

वर्ष : 13 | अंक : 285 | नई दिल्ली, सोमवार, 27 फरवरी, 2023 | पौष शुक्ल अष्टमी, विक्रम संवत् 2079 | पेज : 12 | मूल्य ₹ : 03.00 | www.pratahkiran.com

शराब नीति केस में सीबीआई की पूछताछ : जेल भी जाना पड़े तो परवाह नहीं : सिसोदिया

नई दिल्ली, एजेंसी

● रोड शो करते हुए पहुंचे, संजय सिंह, गोपाल राय समेत कई आप नेता हिरासत में

दिल्ली के उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने कथित शराब घोटाले में सीबीआई के समक्ष पेश होने से पहले कहा कि वह भगत सिंह के अनुयायी हैं इसलिए कुछ महीने जेल में भी रहना पड़े तो परवाह नहीं है। श्री सिसोदिया ने ट्वीट कर कहा, आज फिर सीबीआई जा रहा हूँ, सारी जाँच में पूरा सहयोग करूँगा। लाखों बच्चो का प्यार व करोड़ो देशवासियो का आशीर्वाद साथ है। कुछ महीने जेल में भी रहना पड़े तो परवाह नहीं। भगत सिंह के अनुयायी हैं। देश के लिए भगत सिंह फाँसी पर चढ़ गए थे। ऐसे झूठे आरोपों की वजह से जेल जाना तो छोटी सी चीज है। मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने कहा, भगवान आपके साथ है मनीष। लाखों बच्चों और उनके अभिभावकों

की दुआयें आपके साथ हैं। जब आप देश और समाज के लिए जेल जाते हैं तो जेल जाना दूषण नहीं, भूषण होता है। प्रभू से कामना करता हूँ कि आप जल्द जेल से लौटें। दिल्ली के बच्चे, अभिभावक और हम सब आपका इंतजार करेंगे। उन्होंने कहा, जिस देश में गरीब बच्चों को अच्छी शिक्षा देने वाले और उन बच्चों का भविष्य बनाने वाले जेल में हों और अरबों का घोटाला करने वाले प्रधानमंत्री के जिगरी दोस्त हों, वो देश कैसे तरक़्क़ी कर सकता है। दिल्ली के पर्यावरण मंत्री गोपाल राय ने दावा किया कि आम आदमी पार्टी के कार्यकताओं को हाउस अरेस्ट किया जा रहा है।

उन्होंने एक ट्वीट में कहा कि सिसोदिया की गिरफ्तारी के लिए मोदी जी की पुलिस मुस्तैदी के साथ तैनात है। आम आदमी पार्टी ने ट्वीट कर कहा, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को आज अरविंद केजरीवाल से डर लग रहा है इसलिए वह मनीष सिसोदिया को गिरफ़्तार करने की तैयारी कर रहें हैं। भाजपा की पुलिस द्वारा हमारे पार्षदों-विधायकों को डिटेन किया जा रहा है।हम देश के लिए एक बार नहीं, हजार बार गिरफ़्तारी देंगे। दरअसल 19 फरवरी को सीबीआई ने श्री सिसोदिया को पूछताछ के लिए बुलाया था लेकिन उन्होंने कुछ दिनों की छूट यह कहते हुए मांगी थी कि वह दिल्ली का वित्त मंत्री होने के नाते बजट बनाने में व्यस्त हैं, जिससे उन्हें छूट मिल गई थी। सीबीआई ने फिर से नोटिस जारी कर रविवार (आज) को पूछताछ के लिए उन्हें बुलाया है।

मौसम

अधिकतम तापमान 26.0°C

न्यूनतम तापमान 12.0°C

बाजार

सोना	56,00
चांदी	53,200
सेंसेक्स	54,406
निफ्टी	22,303

संक्षिप्त खबरें

कोरोना के सक्रिय मामलों में मामूली बढोत्तरी

नई दिल्ली। देश में कोरोना संक्रमण के सक्रिय मामलों में मामूली बढ़त के बीच पिछले 24 घंटों में इनकी संख्या 59 से बढ़कर 2149 हो गयी है। सक्रिय मामलों की दर 0.00 प्रतिशत है। देश में पिछले 24 घंटों में 5841 लोगों का टीकाकरण किया गया। अब तक कुल 220 करोड़ 63 लाख 80 हजार 682 लोगों का टीकाकरण किया जा चुका है। केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय की ओर से रविवार को जारी आंकड़ों के अनुसार इसी अवधि में 154 मरीज स्वस्थ हुए हैं। पुडुचेरी में सबसे अधिक 12 सक्रिय मामले बढ़े हैं, जबकि तमिलनाडु और तेलंगाना में आठ आठ मामले, महाराष्ट्र में आठ व केरल में सात मामले बढे है जबकि ओड़िशा और हरियाणा में दो दो मामले तथा राजस्थान और चंडीगढ़ में एक-एक मामलों में कमी आयी है।

पुलवामा में आतंकवादियों ने व्यक्ति की गोली मारकर हत्या की : पुलिस

श्रीनगर। जम्मू कश्मीर के पुलवामा जिले में आतंकवादियों ने रविवार को करीब 40 वर्षीय व्यक्ति की गोली मारकर हत्या कर दी। पुलिस ने यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि घटना पूर्वाह्न करीब 11 बजे हुई और पीड़ित की पहचान दक्षिण कश्मीर के जिले में अचन इलाके के निवासी संजय शर्मा के तौर पर हुई है। कश्मीर जोन की पुलिस ने ट्विटर पर लिखा, आतंकवादियों ने पुलवामा में अल्पसंख्यक समुदाय से संबंधित अचन निवासी काशीनाथ शर्मा के बेटे संजय शर्मा पर गोली चला दी। घटना के वक्त वह स्थानीय बाजार जा रहे थे।

झारखंड में छह माओवादी गिरफ्तार, विस्फोटक बरामद

चाईबासा (झारखंड)। झारखंड के पश्चिमी सिंहभूम जिले में पुलिस ने एक माओवादी कमांडर समेत छह माओवादियों को गिरफ्तार किया है और उनके पास से गोलाबारूद बरामद किए। पुलिस के एक अधिकारी ने यह जानकारी दी। पश्चिमी सिंहभूम जिले के पुलिस अधीक्षक (एसपी) आशुतोष शेखर ने बताया कि ऐसी सूचना मिली थी कि कुछ माओवादी अपने कमांडर को विस्फोटक की आपूर्ति करने वाले हैं। एसपी ने बताया कि सूचना के आधार पर माओवादियों को पकड़ने के लिए पुलिस की एक टीम बनाई गई। इसके बाद बाद टीम ने बारीपोखरी गांव से सटे मार्ग पर घेराबंदी के बाद व्यापक जांच अभियान शुरू की और बॉज हेंब्रम उर्फ किशुन हेंब्रम को गिरफ्तार किया तथा उसके पास से एक विस्फोटक, जिलेटिन की छड़ बरामद की। पूछताछ के दौरान बॉज से मिली सूचना के आधार पर पुलिस ने टोंटो पुलिस थाना अंतर्गत इलाके से तीन अन्य माओवादियों डुबराज हेंब्रम, तुरी देवगम एवं पाल सिंह हेंब्रम को गिरफ्तार किया और उनके पास से जिलेटिन की छड़ें बरामद कीं।

राहुल गांधी ने बचपन में घर छोड़ने का किस्सा बताया

52 सालों से हमारे पास अपना घर नहीं है: राहुल

भावुक हुईं सोनिया गांधी

नवा रायपुर, एजेंसी

छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर में चल रहे कांग्रेस के 85वें अधिवेशन के तीसरे और आखिरी दिन राहुल गांधी ने 32 मिनट की स्पीच दी। राहुल ने भाषण में भारत जोड़ो यात्रा, अडाणी हिंडनबर्ग मामला, चीन पर जयशंकर के बयान, 2024 लोकसभा चुनाव समेत कई मुद्दों पर बात की। राहुल ने कहा- मैं 1977 में 6 साल का था। मुझे चुनाव के बारे में नहीं पता था। मैंने मां से पूछा कि क्या हुआ? मां ने कहा कि हम घर छोड़ रहे। तब तक मुझे लगता था कि वह हमारा घर है... मैं इस बात पर हैरान था। 52 साल हो गए, मेरे पास घर नहीं है। राहुल गांधी ने कहा, '4 महीने कन्याकुमारी से श्रीनगर तक भारत जोड़ो यात्रा हमने की। वीडियो में आपने मेरा चेहरा देखा, लेकिन हमारे साथ लाखों लोग चले। बारिश, गर्मी और बर्फ में हम सब एकसाथ चले। बहुत कुछ सीखने को मिला। आपने देखा हो कि पंजाब में एक मैकेनिक आकर मुझसे मिला। मैंने उसके हाथ पकड़े और सालों की उसकी तपस्या, उसका दर्द और दुख मैंने पहचान लिया। लाखों किसानों के साथ जैसे ही हाथ मिलाता था, गले लगता था एक ट्रांसमिशन सा हो जाता था। शुरूआत में बोलने की जरूरत होती थी कि क्या करते हो, कितने बच्चे हैं, क्या मुश्किलें हैं। एक-डेढ़ महीना ये चला और उसके बाद बोलने की जरूरत नहीं पड़ती थी। जैसे ही हाथ पकड़ा, गले लगे उनका दर्द एक सेकंड में समझ आ जाता था। जो मैं उनसे कहना चाहता था, बिना कुछ बोले वो समझ जाते थे।' राहुल गांधी ने कहा, 'आपने बोट रेस देखी होगी। मैं बोट में बैठा था। मेरे पैर में भयंकर दर्द था। मैं उस फोटो में मुस्कुरा रहा हूं, मगर मेरे दिल के अंदर रोना आ रहा था। मैंने यात्रा शुरू की। फिट आदमी हूं। 10-12 किलोमीटर ऐसे ही दौड़ लेता हूं। घमंड था कि 20-25 किलोमीटर चलने में कौन सी बड़ी बात है। पुरानी चोट थी। कॉलेज में चोट लगी थी फुटबॉल खेलते वक्त। मैं दौड़ रहा था दोस्त ने अड़ंगी मार दी थी। वो दर्द गायब हो गया था। जैसे ही यात्रा शुरू की, दर्द वापस आ गया। आप मेरा परिवार हो तो आपसे कह सकता हूं कि सुबह उठकर सोचता था कैसे चला जाए। उसके बाद सोचता था कि 25 किलोमीटर नहीं 3 हजार 500 किलोमीटर चलना है, कैसे चलूंगा। फिर कंटेनर से उतरता था चल देता था। लोगों से मिलता था। पहले 10-15 दिन में अहंकार और घमंड गायब हो गया। क्यों गायब हुआ। क्योंकि भारत माता ने मैसेज दिया था कि तुम निकले हो कन्याकुमारी से कश्मीर के लिए तो अपने दिल से अहंकार मिटा दो। नहीं तो मत चलो। मुझे ये बात सुननी पड़ी। मुझमें इतनी शक्ति नहीं थी कि ये बात ना सुनूं।' उन्होंने कहा, 'मैंने धीरे-धीरे नोटिस किया कि मेरी आवाज चुप होती गई। जम्मू-कश्मीर पहुंचा तो बिल्कुल चुप हो गया। मेडिटेशन करता हूं जैसे वैसे ही चुप हो गया। मां बैठी हैं। मैं छोटा था, 1977 की बात है। चुनाव आया, मुझे उसके बारे में कुछ नहीं मालूम था। घर में अजीब सा माहौल था। मैंने मां से पूछा मम्मी क्या हुआ। मां कहती हैं कि हम घर छोड़ रहे हैं। तब तक मैं सोचता था कि वो घर हमारा था। मैंने मां से पूछा हम घर क्यों छोड़ रहे हैं।

संकल्प सिर्फ कागजों पर नहीं, जमीनी स्तर पर भी हो : प्रियंका गांधी

कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा ने रविवार को कहा कि यह अच्छा है कि पार्टी नए संकल्प लेकर आई, लेकिन इन्हें धरातल पर लागू करना भी जरूरी है। प्रियंका गांधी ने रायपुर में चल रहे कांग्रेस के 85वें पूर्ण अधिवेशन को संबोधित किया। हम अपने संगठन को मंडल और ब्लॉक स्तर तक ले जाना चाहते हैं, लेकिन यह केवल कागजों में नहीं होना चाहिए, और नेताओं को लोगों तक पहुंचना चाहिए और उन्हें बताना चाहिए कि कांग्रेस पार्टी आम लोगों के बारे में क्या सोचती है। कांग्रेस के प्रतिनिधियों को प्रत्येक घर में जाना चाहिए और हमारे कार्यक्रमों के बारे में बात करनी चाहिए ताकि लोगों को पता चले कि पार्टी उनके लिए क्या कर रही है। उन्होंने सरकार पर हमला किया और कहा कि कांग्रेस नेताओं के पीछे एजेंसियां हैं, अगर वे हमें दो दिनों के लिए पूछताछ के लिए बुलाते हैं तो कार्यकताओं को महीनों तक जेल में रखा जाता है। पूर्ण सत्र के दौरान ईडी छत्तीसगढ़ में छापेमारी कर रही है। कांग्रेस ने पार्टी में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग, अल्पसंख्यक और महिलाओं को 50 फीसदी आरक्षण देने का फैसला किया है। पार्टी ने कहा, कांग्रेस पार्टी ने शनिवार को राज्य स्तर (पीसीसी) और राष्ट्रीय स्तर (एआईसीसी) पर प्रतिनिधियों सहित सभी पार्टी पदों पर अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग, महिलाओं और अल्पसंख्यकों के लिए 50 प्रतिशत आरक्षण सुनिश्चित करने के लिए पार्टी के संविधान में संशोधन किया।

अडानी जैसा एक व्यक्ति आज हाथी जैसा मोटा बन गया है: खड़गे

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने रविवार को कहा कि मौजूदा समय में पार्टी के समक्ष कई चुनौतियां हैं जिनसे निपटने के लिए एकता, अनुशासन और दृढ़ संकल्प की जरूरत है। पार्टी के 85वें महाधिवेशन के समापन पर उन्होंने यह भी कहा कि यह नई कांग्रेस का आगाज है। खरगे ने माना कि पार्टी के समक्ष आज तमाम चुनौतियां हैं, लेकिन उन्होंने यह भी साफ कर दिया कि ऐसी कोई चुनौती नहीं है जिसका कि समाधान कांग्रेस नहीं निकाल सकती। इसके लिए खड़गे ने एकता, अनुशासन और दृढ संकल्प को जरूरी बताया। उन्होंने कहा, पार्टी की ताकत में ही हमारी ताकत है। हम जो आचरण राष्ट्रीय स्तर पर करेंगे उसका संदेश हमारे करोड़ों साथियों तक हर स्तर पर जाएगा। खड़गे ने नफरत फैलाने वाली विचारधारा का मजबूती से मुकाबला करने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि सरकार जो गलतियां करती है, उसे हम बताते रहेंगे, डरेंगे नहीं। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने मोदी सरकार और देश के बड़े बिजनेसमैन गौतम अडानी पर जमकर निशाना साधा है। खड़गे ने कहा, चंद लोग इस देश की संपत्ति को लूट रहे हैं। हमारा पैसा और संपत्ति भी हमारी और उस पैसे से एक-एक (संपत्ति) खरीद कर मोदी जी एक व्यक्ति को दे रहे हैं। उस अडानी को इतना बड़ा बना रहे हैं कि वह एक व्यक्ति आज हाथी के जितना मोटा बन गया है। बता दें कि इस समय रायपुर में कांग्रेस का राष्ट्रीय अधिवेशन चल रहा है। इस दौरान कांग्रेस सांसद राहुल गांधी और महासचिव प्रियंका गांधी ने भी मोदी सरकार को घेरा। राहुल ने कहा, एक और बात समझ नहीं आई। पार्लियामेंट में अडानी जी पर सवाल किया। मैंने पूछा कि अडानी जी 609 नंबर से दूसरे नंबर पर कैसे आए। आपकी जो फॉरेन पॉलिसी बनती है, सब जगह उनको फायदा मिलता है। मैंने सिर्फ मोदी जी से पूछा कि बता दो कि रिश्ता क्या है।

अडाणी मामले की सच्चाई आने तक सवाल पूछते रहेंगे : राहुल गांधी

कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने रविवार को कहा कि अडाणी समूह से जुड़े मामले की सच्चाई सामने आने तक उनकी पार्टी सवाल पूछती रहेगी। उन्होंने पार्टी के 85वें अधिवेशन में संबोधन के दौरान आरोप लगाया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उद्योगपति गौतम अडाणी एक ही हैं। राहुल गांधी ने भविष्य में भारत जोड़ो यात्रा की तरह के किसी अन्य कार्यक्रम का संकेत देते हुए कहा कि कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे तपस्या का कार्यक्रम बनाएं, उसमें सभी लोग शामिल होंगे। कांग्रेस नेता ने दावा किया कि कांग्रेस के लोग सत्याग्रही हैं, जबकि भाजपा-आरएसएस के लोग सत्ताग्रही हैं। राहुल गांधी ने अडाणी मामले का उल्लेख करते हुए आरोप लगाया कि अडाणी और मोदी एक ही हैं और पूरा धन एक ही व्यक्ति के पास जा रहा है। उन्होंने कहा, संसद की कार्यवाही से हमारी बातों को हटा दिया गया..हम सवाल पूछते रहेंगे। हम एक बार नहीं, हजार बार सवाल पूछेंगे। जब तक अडाणी जी की सच्चाई नहीं सामने आएगी तब तक सवाल पूछते रहेंगे। राहुल गांधी ने महाधिवेशन में कहा कि नरेंद्र मोदी जी ने श्रीनगर में भाजपा के महज 15-20 लोगों के साथ तिरंगा फहराया था, लेकिन हमने कश्मीर के लाखों युवाओं के जरिये तिरंगा फहराया। उन्होंने चीन के संदर्भ में विदेश मंत्री एस. जयशंकर के एक बयान का हवाला देते हुए कहा, जो आपसे कमजोर है उससे ही लड़ोगे तो इसे कायरता कहा जाता है, यह राष्ट्रवाद नहीं है।

शिवराज ने नड्डा से की मुलाकात

भोपाल, एजेंसी। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) अध्यक्ष जे पी नड्डा से मध्यप्रदेश के मुख्मयंत्री शिवराज सिंह चौहान ने मुलाकात कर विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की। श्री चौहान ने दिल्ली में कल रात मुलाकात के बाद ट्वीट किया है। श्री चौहान ने बताया कि उन्होंने श्री नड्डा से सौजन्य भेंट कर राज्य में चल रही विकास यात्रा, विभिन्न योजनाओं और राजनैतिक गतिविधियों की जानकारी दी। इस दौरान सीएम जनसेवा अभियान, सीएम जनसेवा मित्र और अन्य कल्याणकारी योजनाओं के बारे में भी बताया गया।

डेनमार्क के शहजादे फ्रेडरिक आंद्रे हेनरिक क्रिश्चियन चार दिवसीय यात्रा पर भारत पहुंचे

नई दिल्ली, एजेंसी। डेनमार्क के शहजादे फ्रेडरिक आंद्रे हेनरिक क्रिश्चियन और शहजादी मैरी एलिजाबेथ रविवार को चार दिवसीय यात्रा पर भारत पहुंचे। पिछले दो दशकों में डेनमार्क के शाही परिवार से यह भारत की पहली यात्रा है। विदेश मंत्रालय (एमईए) के अनुसार, दोनों उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ के निमंत्रण पर भारत के दौरे पर आए हैं। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता अरिंदम बागची ने ट्वीट किया कि यात्रा दोनों देशों के बीच घनिष्ठ व मैत्रीपूर्ण संबंधों को और मजबूत बनाएगी। बताया जा रहा है कि डेनमार्क के विदेश मंत्री लार्स लोके रासमुसेन, पर्यावरण मंत्री मैगनस हेउनिके और जलवायु, ऊर्जा मंत्री लार्स आगार्ड भी शाही दंपति के साथ हैं।

सावरकर सम्मान के मोहताज नहीं, वे तो हैं ही भारत रत्न: देवेन्द्र फडणवीस

● इंदौर में बृहन्महाराष्ट्र मंडल के 71वें अधिवेशन में शामिल हुए महाराष्ट्र के उप मुख्यमंत्री

इंदौर, एजेंसी। महाराष्ट्र से बाहर बसे मराठी भाषियों की संस्था बृहन्महाराष्ट्र मंडल के 71वें अधिवेशन के दूसरे दिन शनिवार को महाराष्ट्र के उप मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस इंदौर पहुंचे तो मराठी भाषियों ने एक स्वर में 'वीर सावरकर यांना भारत रत्न मिळायलाच पाहिजे (वीर सावरकर को भारत रत्न मिलना ही चाहिए) के नारे लगाए। इस पर फडणवीस ने कहा कि 'वीर सावरकर सम्मान के मोहताज नहीं हैं। उनको भारत रत्न मिले या न मिले, वे तो भारत रत्न ही हैं। उन्होंने कहा कि महाराष्ट्र सरकार पहले ही केंद्र सरकार को प्रस्ताव भेज चुकी है कि वीर सावरकर को भारत रत्न दिया जाए, लेकिन अभी इसकी घोषणा होना बाकी है।' दरअसल, इंदौर के राऊ स्थित एमरल्ड हाइट्स स्कूल में जारी बृहन्महाराष्ट्र मंडल के तीन दिवसीय अधिवेशन का आयोजन हो रहा है।

मन की बात समाज के योगदान से देश की शक्ति बढ़ती है, मन की बात बना जनभागीदारी का मंच, सांस्कृतिक विरासत को जिंदा रखने के प्रयासों का उदाहरण है त्रिबेनी कुंभो...

पहाड़ी क्षेत्र के लोगों के लिए ई-संजीवनी बन रही जीवन रक्षा ऐप : प्रधानमंत्री

प्लास्टिक की जगह कपड़े के बैग अपनाएं, होली पर रखें वोकल फॉर लॉकल का ध्यान

नई दिल्ली, एजेंसी

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को अपने मासिक रेडियो कार्यक्रम के माध्यम से टेली मेडिकल सेवा प्रदान करने वाली ऐप ई-संजीवनी का जिक्र किया। इसे डिजिटल इंडिया की शक्ति बताते हुए उन्होंने कहा कि पहाड़ी क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के लिए यह जीवन रक्षा ऐप बन रही है। 'मन की बात' के 98वें संस्करण में प्रधानमंत्री ने कहा कि ई-संजीवनी के माध्यम से स्वास्थ्य परामर्श पाने वालों का आंकड़ा 10 करोड़ को भी पार कर चुका है। कोरोना काल में यह ऐप वरदान साबित हुई थी। अपने रेडियो कार्यक्रम में उन्होंने ई-संजीवनी ऐप का इस्तेमाल करने वाले डॉ और मरीज से संवाद भी किया और जाना की कैसे ऐप लोगों के जीवन को बदल रही है। डिजिटल इंडिया की शक्ति का जिक्र करते हुए प्रधानमंत्री ने हाल के दिनों में भारत के यूपीई और सिंगापुर के पेनाउ की क्रास बॉर्डर कनेक्टवीटि ऐप के बारे में भी बताया। इसके माध्यम से दोनों देशों के लोग आपस में सस्ती दरों पर सुलभ पैसे ट्रांस्फर कर सकते हैं। प्रधानमंत्री ने कहा कि समाज के योगदान से देश की शक्ति बढ़ती है और उन्हें हर्ष है कि कार्यक्रम के माध्यम से की गई जनभागीदारी की अपील में लोग बढ़चढ़ का हिस्सा लेते हैं। खेल, खिलौनों और स्टोरी टेलिंग से जुड़ी उनकी अपील में देशभर से लोगों ने भाग लिया। सरदार पटेल के जयंती पर उन्होंने गीत, लोरी और रंगोली प्रतियोगिता की जिक्र किया था। इस दौरान उन्होंने प्रतियोगिता विजेताओं के बारे में जानकारी दी और उनकी प्रतिभा से भी लोगों को रूबरू कराया। उन्होंने कहा, नागरिकों ने 'मन की बात' को जनभागीदारी की अभिव्यक्ति के रूप में एक अद्भुत मंच बना दिया है। प्रधानमंत्री ने उस्ताद बिस्मिल्लाह खान युवा पुरस्कार प्राप्त कलाकारों की प्रतिभा से भी श्रोताओं को रूबरू कराने का प्रयास किया। उन्होंने सुरसिंगार वादक जॉयदीप, मेंडोलिन वादक उप्पलपू नागमणि, वारकरी कीर्तन संग्राम सिंह सुहास भंडारे, करकट्टम नृत्यांगन वी दुर्गा और पेरिनी ओडिशी के आयोजक राजकुमार नायक की प्रतिभाओं की प्रशंसा की। प्रधानमंत्री ने देश की सांस्कृतिक विरासत को जिंदा रखने के प्रयासों का भी उल्लेख किया। उन्होंने पश्चिम बंगाल के हुगली जिले के बांसबेरिया में आयोजित त्रिबेनी कुंभो का उदाहररण दिया। उन्होंने बताया कि इस 'मोहोत्शौव' की परंपरा को 700 साल बाद जीवित किया गया है।

सुरक्षित माहौल से बढ़ रहा उत्तर प्रदेश में निवेश, रोजगार और पर्यटन : नरेंद्र मोदी

नई दिल्ली, एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को कहा कि उत्तर प्रदेश में बेहतर होती कानून व्यवस्था और व्यापार के लिए सुरक्षित वातारण राज्य में रोजगार और निवेश के नए अवसर पैदा कर रहा है। सुरक्षित महौल के चलते पर्यटक भी बढ़ी संख्या में यहां की यात्रा कर रहे हैं। प्रधानमंत्री मोदी वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग से उत्तर प्रदेश में आयोजित रोजगार मेले को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि भाजपा शासनकाल में उत्तर प्रदेश की पहचान बदल रही है और बेहतर कानून व्यवस्था के साथ यह तेजी से विकास कर रहा है। वहीं इससे पहले राज्य माफिया और ध्वस्त व्यवस्था से पहचाना जाता था। उत्तर प्रदेश में आयोजित रोजगार मेले के दौरान 9 हजार युवाओं को पुलिस में भर्ती प्रदान की जा रही है। प्रधानमंत्री ने आशा व्यक्त की कि युवा अपने साथ नए विचार और कुशलता लाएंगे। उन्होंने पुलिस में भर्ती होने जा रहे युवाओं से संवेदनशील बनने की अपील की और राज्य सरकार के इस दिशा में किए जा रहे प्रयासों की सराहना की। प्रधानमंत्री ने कहा कि पुलिस इस तरह काम करे कि अपराधियों के मन में भय पैदा हो और कानून का पालन करने वाला सबसे अधिक निडर महसूस करें। डबल इंजन सरकार के चलते राज्य में बढ़ रहे रोजगार को बड़ी उपलब्धि बताते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि अकेले पुलिस में ही 2017 के बाद डेढ़ लाख नियुक्तियां की गई हैं। प्रदेश को अब एक्सप्रेस प्रदेश के रूप में जाना जा रहा है। मुद्रा योजना से मिल रहे ऋण से यहां के युवाओं की उड़ान को नए पंख मिल गए हैं।

कभी लचर कानून व्यवस्था के लिए जाना जाने वाला उत्तर प्रदेश अब तेजी से तरक्की कर रहा : मोदी

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को उत्तर प्रदेश के कानून-व्यवस्था की सराहना करते हुए कहा कि एक समय था जब उत्तर प्रदेश माफियाओं और ध्वस्त कानून व्यवस्था की वजह से जाना जाता था, लेकिन आज इसकी पहचान बेहतर कानून व्यवस्था और तेज गति से हो रहे विकास की ओर अग्रसर राज्य के रूप में होती है। उत्तर प्रदेश में चयनित 9,055 पुलिस उप निरीक्षकों, प्लाटून कमांडर और अग्निशमन अधिकारियों को लखनऊ में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा बांटे जा रहे नियुक्ति पत्र समारोह में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक वीडियो संदेश के माध्यम से कहा, एक समय था जब उत्तर प्रदेश माफियाओं और ध्वस्त कानून व्यवस्था की वजह से जाना जाता था, लेकिन आज इसकी पहचान बेहतर कानून व्यवस्था और तेजी से विकास कर रहे राज्य के रूप में होती है। प्रधानमंत्री ने कहा, इन दिनों रोजगार मेला मेरे लिए एक विशेष कार्यक्रम बन गया है। कई महीनों से मैं देख रहा हूं कि हर सप्ताह भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) शासित किसी न किसी राज्य में रोजगार मेले हो रहे हैं। हजारों नौजवानों को रोजगार के लिए नियुक्ति पत्र दिए जा रहे हैं। मेरा सौभाग्य है कि मुझे उसमें साक्षी बनने का अवसर मिल रहा है।

संक्षिप्त खबरें

एक दिवसीय मार्शल आर्ट का किया प्रदर्शन

फतुहा। शहर में देवीचक स्थित नीतेश मार्शल आर्ट एसोसिएशन ऑफ बिहार की ओर से रविवार को एक दिवसीय मार्शल आर्ट प्रदर्शन कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें नगर परिषद क्षेत्र से छः स्कूलों के छात्र-छात्राओं ने शिरकत की। सनराइज पब्लिक स्कूल, सिटी मोंटेसरी स्कूल, बाल ज्ञान सहयोगी कॉन्वेंट, सेक्रेट हार्ट अकादमी के बच्चों ने प्रमुख भागीदारी निभाई। नवनियुक्त प्रशिक्षकों ने मार्शल आर्ट्स के कई दांव-पेंच का बेहतर प्रदर्शन किया वहीं स्कूली बच्चों ने भी प्रदर्शन कर लोगों का मन मोह लिया। एसोसिएशन के अध्यक्ष नीतेश कुमार ने बताया कि आत्मरक्षा के लिए बेटियों का प्रशिक्षित होना जरूरी है इसलिए बेटियों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है। हमारा एसोसिएशन वर्ष 24 के अंत तक फतुहा, दनियावा, खुसरुपुर और बख्तियारपुर के सरकारी एवं गैरसरकारी विद्यालयों में मार्शल आर्ट्स का विधिवत प्रशिक्षण प्रारंभ कर देगा। मौके पर प्रिंस कुमार, पप्पू गोस्वामी, सरफराज, साहिल, कृष्णा सहित कई रहे।

ट्रेन से गिरकर कटने के कारण एक युवक की हुई मौत

दानापुर खगौल। रविवार को दोपहर वीहटा और शादीसोपुर स्टेशन के बीच चलती ट्रेन से गिरकर कटने के कारण युवक की मौत हो गई। युवक की पहचान सुजीत कुमार उम्र 36 वर्ष पिता त्रिलोकी सिंह नवादा बिन वार्ड नंबर 8 थाना उदवंतनगर भोजपुर के रूप में की गई। इस संबंध में जीआरपी थाना प्रभारी रणधीर कुमार ने बताया कि युवक के शव को पोस्टमार्टम करवाने के बाद उसके परिजनों के हवाले कर दिया गया है।

समाज की सुरक्षा में तीसरी आंख अहम : नंदकिशोर

पटना सिटी (प्राकि)। मच्छरहट्टा स्थित बंदरिया गली में सीसीटीवी कैमरा का एक्सक्लूसिव शोरूम कैमरा वर्ल्ड का उद्घाटन पूर्व मंत्री सह विधायक नंदकिशोर यादव, महापौर सीता साहू, उपमहापौर रेशमी चंद्रवंशी और वार्ड पार्षद श्रीमती तरुणा राय ने किया। इस मौके पर श्री यादव ने कहा कि आज के दौर में अपनी, परिवार और समाज की सुरक्षा के लिए सीसीटीवी किसी वरदान से कम नहीं है। इसे हम लोग 'तीसरी आंख' से भी जानते हैं।

उन्होंने प्रोपराइटर आशुतोष और सिद्धार्थ कुमार को शुभकामना देते हुए उनके कार्यों की सराहना की और दोनों ने आत्मनिर्भर भारत का उदाहरण प्रस्तुत किया है। मौके पर भाजपा प्रदेश के नमामि गंगे के संयोजक प्रभाकर मिश्र, शिक्षाविद् एडवर्ड अल्फेंस, रिचर्ड अल्फेंस, विक्टर अल्फेंस, मदन मोहन प्रसाद, प्रकाश, प्रसून, मनीष आदि मौजूद थे।

चार दिवसीय मेगा सर्जिकल कैंप सम्पन्न, मरीजों को मिला लाभ

दानापुर। नगर के सगुना मोड़ के समीप सिसरो हास्पिटल में चार दिवसीय मेगा सर्जिकल कैंप का रविवार को समापन हो गया। कैंप में हड्डी एवं स्पाइन के 100 गंभीर मरीजों का निशुल्क इलाज किया गयी। मेगा सर्जिकल कैंप में शामिल देशभर के कुशल सर्जन ने इस मौके पर अपने अनुभव साझा किया। बिहार के जानेमाने चिकित्सक व सर्जन एवम बिहार ओथोर्पेडिक्स एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष सह फ्री ऑर्थो सर्जिकल कैंप के संस्थापकीय अध्यक्ष डॉक्टर एस. एन. सर्राफ ने बताया कि यह मेगा सर्जिकल कैंप बिहार का पहला एवं ईस्ट इंडिया में सबसे बड़ा सुपरस्पेसिअलिटी स्पाइन, जॉइंट रिप्लेसमेंट और ओथोर्पेडिक्स सर्जिकल कैंप है जिसमें घुटने एवं हड्डी से सम्बंधित बिमारियां, नस सम्बंधित बीमारियां, मस्तिष्क रोग इत्यादि के निदान हेतु नई अत्याधुनिक तकनीक विधि द्वारा अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त स्वदेश के विभिन्न महानगरों से 12-15 विशिष्ट ओथोर्पेडिक्स एवं स्पाईन सर्जन ने अपनी सेवाएं दी है। इस कैंप में डॉ० भरत सिंह, डॉ. महेश कुमार, डॉ, अभिषेक अन्नू सर्राफ, डॉ. मधुसुदन कुमार, डॉ. रवि कुमार खंडेलवाल, डॉ. आशीष के अलावा कई प्रसिद्ध चिकित्सक ने अपना योगदान दिया।

मीडिया इलेवन ने रोटरी सम्राट को नौ विकेट से दिया शिकस्त

अजय मैन ऑफ द मैच, बेस्ट बॉलर खालिद, बेस्ट बैट्समैन रंजीत व वेस्ट फिल्डर का इनाम सागर को मिला

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

रोटरी सिटी सम्राट और यहां के स्थानीय मीडिया के मीडिया इलेवन के बीच फैंसी मैच रविवार को मनोज कमलिया स्टेडियम के मैदान में खेला गया। यह मैच 20-20 ओवर का निर्धारित था। मैच का उद्घाटन केएल7 की कमलावती उर्फ कलावती देवी और मुख्य अतिथि प्रो विनय कृष्ण ने दोनों टीमों के खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त कर किया। रेफरी के तौर राजेश राणा और रफीक अहमद थे।

टॉस रोटरी सम्राट के कप्तान संजीव यादव ने जीता और पहले बल्लेबाजी करने का निर्णय लिया। रोटरी सम्राट की ओर से देवराज बल्लभ ने 14, संजीव यादव 24, गोविंद चौधरी 27, रंजीत प्रभाकर 30, राणा 16, जेपी पाल 4, मनोज कुमार 6, अभिषेक राज 12 और सुमित चंद्रवंशी ने 26 रनों का योगदान दिया। इस तरह 20 ओवर में रोटरी सिटी सम्राट ने 156 रन का स्कोर खड़ा किया। मीडिया इलेवन की ओर से राशिद खालिद ने 4 ओवर में 24 रन देकर तीन विकेट, अजय मिश्रा ने 2 ओवर में 11 रन देकर एक विकेट, मोनू ने 4 ओवर में 33 रन देकर एक विकेट, अनिल कुमार ने 3 ओवर में 23 रन देकर दो विकेट और आनंद कुमार ने 4 ओवर में 28 रन देकर एक विकेट हासिल किया। लक्ष्य का पीछा करने उतरी मीडिया इलेवन की टीम की ओर से अजय एम ने शानदार शतक लगाते हुए नाबाद 110 रन का योगदान किया। वहीं आनंद कुमार 16 रन बनाकर आउट हुए, जबकि खालिद राशिद 26 रन बनाकर नाबाद रहे। इस तरह से मीडिया इलेवन की टीम ने निर्धारित 20 ओवर के पूर्व ही 159 रन बनाकर 9 विकेट से मैच को जीत लिया। कमेंट्री डॉ सुशील पोद्दार,

विजय कुमार सिंह, दिनेश भदानी, मनोज कुमार और पत्रकार आनंद केसरी ने किया। मैच के बाद बेस्ट फील्डर सागर, बेस्ट बैट्समैन रंजीत प्रभाकर, बेस्ट बॉलर खालिद रशीद और मैन ऑफ द मैच का पुरस्कार अजय एम को प्रदान किया गया। रनर ट्रॉफी संजीव यादव ने और विजयी मीडिया इलेवन का ट्रॉफी अंजनी कुमार मिश्रा ने प्राप्त किया। इसके बाद डंके की गुंज और देशभक्ति गीत के बीच खिलाड़ियों ने डांस भी किया। कार्यक्रम के दौरान अंतरराज्यीय अंडर 16 मैच खेलने वाले होनहार खिलाड़ी आयुष आनंद को सम्मानित करते हुए उन्हें कीट भी प्रदान किया गया। मीडिया इलेवन की ओर से पत्रकार आनंद केसरी, बिट्टू कुमार, दीपेंद्र आदि को बैटिंग करने का मौका ही नहीं मिल पाया। अंत में देर से पहुंची महापौर सीता साहू ने दोनों टीम के खिलाड़ियों का हौसला अफजाई किया। उनके साथ डॉ त्रिलोकी प्रसाद गोलवारा भी मौजूद रहे।

दुकान आवंटन में पुराने आवंटी व फुटपाथी को मिले वरीयता

पटना फ्रूट मर्चेंट एसोसिएशन ने कहा, गड़बड़ हुई तो होगा आंदोलन

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

मुसल्लहपुर बाजार समिति में कृषि विभाग के द्वारा दुकान का निर्माण कराया जा रहा है। इसे लेकर पुराने दुकान के आवंटी से लेकर लाइसेंसी और आवंटन से वंचित लोगों के बीच यह डर पैदा कर गया है कि कहीं ऐसा न हो कि बाहरी लोगों को दुकान का आवंटन कर दिया जाए और वह सब ताकते रह जाएं। इसे लेकर पटना फ्रूट मर्चेंट एसोसिएशन की रविवार को बैठक हुई। इसकी अध्यक्षता एसोसिएशन के अध्यक्ष हाजी मोइन आलम ने की। इसमें कहा गया कि केला मंडी के 36 दुकानदारों को 36 दुकान नया बनकर मिलने वाला है। वहीं फल मंडी में रहे दुकान टूटने वाला है। इन दुकानों की संख्या 56 है, जबकि नई बनने वाली दुकान की संख्या 68 है। इस तरह से 12 दुकान अतिरिक्त हो रहा है। ऐसे करीब दो-ढाई दर्जन वहां पुराने कारोबारी हैं। 1974 से जिनका लाइसेंस बना है और 1980 में जब बाजार समिति में दुकान आवंटन होने के दौरान वे लोग आवंटी के दौड़ से छूट गए। वैसे लोग और 15-20 साल से बिना लाइसेंस के भी लोग बड़ा काम कर रहे हैं। वर्ष 2006 में बाजार समिति विघटित हो गई। ऐसे में एसोसिएशन के महासचिव भुट्टो खान का कहना है कि जो 12 दुकान अतिरिक्त बनी है, यह ऐसे लोगों को आवंटित की जाए, जो वर्षों से परिसर में फुटपाथ के रूप में अपना थोक कारोबार कर रहे हैं। हालांकि बाजार समिति परिसर में अभी भी डेढ़-दो सौ दुकान और बननी चाहिए। एसोसिएशन का कहना है कि अगर सरकार दुकान वाले को कहीं भी किसी भी प्रकार से कोताही या परेशानी का सामना करना पड़ता है, तो वह सब अपना कारोबार बंद कर भूख हड़ताल और धरना-प्रदर्शन शुरू करेंगे। जब तक व्यवसायियों की मांग पूरी नहीं हो पाएगी, दुकान आवंटन की मांग को लेकर व्यापारियों का आंदोलन चलता रहेगा। बैठक में एसोसिएशन की ओर से उपाध्यक्ष मो जमील, मो जलाल, मो इस्लाम खान, रईस अहमद, मो फरहात, छोटे खान, सचिव एजाज अहमद, मो शहजाद, अवधेश कुमार, मो फिरोज, मो रियाज के अलावा राकेश कुमार, फुरकान, शफी आलम, मो हसीन, मो इरफान, मो आमीर, विनोद कुमार, दिनेश कुमार, उमेश कुमार कोषाध्यक्ष मो वसीम आदि मौजूद थे। महासचिव फोटो खाना ने कहा कि अगर सरकार दुकान वाले को कहीं भी, किसी प्रकार की दिक्कत का सामना करना पड़ा, तो वह सब आंदोलन करने से पीछे नहीं हटेंगे।

ज्ञानी रणजीत सिंह ने हर पक्ष का आदेश माना, यही गलती

श्री अकाल तख्त साहिब, तख्तश्री पटना साहिब, तख्तश्री कमेटी व जांच समिति की भी

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

तख्तश्री हरिमंदिर जी पटना साहिब में भेंटा विवाद ने ऐसा तूल पकड़ा कि दानकर्ता गुरविंदर सिंह सामरा के द्वारा यहां जत्थेदार के पद पर रहे ज्ञानी रणजीत सिंह पर ही आरोप लगा दिया। एक तरफ उन पर रुपया, सोना-चांदी के गबन और दूसरी ओर चरित्र हनन का आरोप था। हालांकि अब तक तख्तश्री पटना साहिब के सिंह साहिबान पंज प्यारों ने, जो उन्हें तनखैया घोषित किया था, वे भी संगतों से लेकर तख्तश्री कमेटी को बताने में असफल रहे कि आखिर उनका दोष क्या था? वैसे पंज सिंह साहिबान में से दो भाई दिलीप सिंह और भाई सुखदेव सिंह ने लिखित तौर पर कमेटी के पदाधिकारियों को दिया है कि बतौर जत्थेदार ज्ञानी रणजीत सिंह पर आरोप से संबंधित कोई दस्तावेज नहीं था और न ही कोई उन पर आरोप साबित हो रहा था। जारी हुक्मनामा में धमकी देकर और जबरन उन दोनों से हस्ताक्षर कराया गया। दानकर्ता के द्वारा ज्ञानी रणजीत सिंह पर आरोप लगाए जाने के बाद तख्तश्री पटना साहिब के पंज प्यारे सिंह साहिबानों ने श्री सामरा के अलावा ज्ञानी रणजीत सिंह को भी नोटिस देकर पेश होने को कहा। तत्कालीन जत्थेदार ज्ञानी रणजीत सिंह कहते हैं कि वे पिछले जत्थेदार ज्ञानी इकबाल सिंह के समय जारी हुक्मनामा का हवाला देते हुए पेश नहीं होते। मगर उन्होंने तख्तश्री पटना साहिब के पंज प्यारे का सम्मान करते हुए पेश हुए। हालांकि उनकी बात नहीं सुनी गई और न ही सामरा के द्वारा पेश किए गए दस्तावेज, ऑडियो, वीडियो आदि उन्हें उपलब्ध कराया गया।

तख्तश्री कमेटी के उस समय के अध्यक्ष रहे अवतार सिंह हित ने पत्र जारी कर उन्हें 31 अगस्त, 22 तक दरबार साहिब में जाकर सेवा नहीं करने की बात कही। उन्होंने इसे भी माना। बाद में दूसरा पत्र कमेटी की ओर से जारी किया गया, जिसमें कहा गया कि जब तक जांच समिति के द्वारा रिपोर्ट नहीं आ जाती है, तब तक आप अपने पद यानी जत्थेदार और मुख्य ग्रंथी के पदनाम का इस्तेमाल नहीं करेंगे। इसे भी उन्होंने अक्षरशः पालन किया। इस बीच सिंह साहिबान में शामिल दो ग्रंथी भाई दिलीप सिंह और भाई सुखदेव सिंह ने जब लिखित में कमेटी के पदाधिकारियों को पत्र सौंपा और ज्ञानी रणजीत सिंह को निर्दोष बताया, तब कमेटी के महासचिव इंद्रजीत सिंह ने उन्हें बतौर जत्थेदार दरबार साहिब में सेवा करने का पत्र जारी किया। इसे ज्ञानी रणजीत सिंह ने मानते हुए दरबार साहिब में सेवा करने गए।

हालांकि एक धड़ा के द्वारा विरोध किए जाने के बाद पहुंची पुलिस प्रशासन की टीम के आग्रह पर वह रात में वापस लौट आए और दूसरे दिन केवल मत्था टेकने ही जा सके। इसके बाद जांच समिति के समक्ष जब भी उन्हें पेश होने को बुलाया गया, वह लगातार वहां जाकर पूछे गए सवालों का जवाब दिया। अपनी बात भी कही और साक्ष्य के रूप में दस्तावेज भी सौंपे। इस बीच दो दिसंबर, 22 को श्री अकाल तख्त साहिब के जत्थेदार ज्ञानी हरप्रीत सिंह के द्वारा एक पत्र जारी किया गया, जिसमें कहा गया कि तख्तश्री पटना साहिब के परिसर में रहे ज्ञानी इकबाल सिंह और ज्ञानी रणजीत सिंह तत्काल तख्तश्री परिसर छोड़ दें और दरबार साहिब में सेवा नहीं करें। इसके अलावा तख्तश्री कमेटी के सभी पदाधिकारी और सदस्यों को छह दिसंबर को श्री अमृतसर साहिब में पेश होने का निर्देश दिया। सोशल मीडिया से पत्र मिलने के साथ ही ज्ञानी रणजीत सिंह ने फेसबुक लाइव करते हुए उस पत्र को शीश नवाते हुए अपनी बात रखी और तत्काल वहां से कमरा खाली करते हुए परिसर को छोड़ दिया। दूसरी ओर भाई इकबाल सिंह ने पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद के तख्तश्री पटना साहिब आने पर दरबार साहिब में जाकर उन्हें सरोपा देने का काम किया, जिसे देश दुनिया के टीवी लाइव और प्रिंट मीडिया उस तस्वीर को दिखाने और छापने का काम किया। इस बीच छह दिसंबर, 22 को श्री अकाल तख्त साहिब के जत्थेदार और सिंह साहिबान की ओर से हुक्मनामा जारी होता है, जिसमें ज्ञानी रणजीत सिंह को पद से हटाए जाने की बात कही जाती है। वह आदेश जारी होने के दूसरे ही दिन सात दिसंबर, 22 की सुबह ट्रेन पकड़ वापस पंजाब चले जाते हैं। इसके बाद भी जब भी जांच समिति ने उन्हें बुलाया, वह पेश होकर अपनी बात रखने और साक्ष्य उपलब्ध कराने का काम किया। ज्ञानी रणजीत सिंह का कहना है कि उन्हें श्री अकाल तख्त साहिब, तख्तश्री पटना साहिब, तख्तश्री कमेटी और जांच समिति इन सबों के प्रति आस्था है और वह अब तक इस उम्मीद में हैं कि उन्हें न्याय मिलेगा। लगाए गए आरोप में कोई दम नहीं है, इसलिए उन आरोपों से उन्हें मुक्त किया जा सकेगा। मगर लंबा समय खींचने से वह थोड़ा परेशान और हताश भी हैं। मगर उन्हें गुरु महाराज पर भरोसा है कि उन्हें न्याय जरूर मिलेगा। कारण कि उन्होंने कोई गलती या अपराध नहीं किया है।

मामले को विस में उठाएंगे : सम्राट

बढ़ता अपराध, पुलीस पर हमला, शासन प्रशासन पंगु : नंदकिशोर

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

मेहंदीगंज थाना क्षेत्र के मेहंदीगंज पानी टंकी के रहने वाले जमीन कारोबारिया और खेतीबारी करने वाले संजीव कुमार उर्फ कक्कू महतो और उनके मित्र राजेश कुमार की हत्या कर दी गई। दोनों के शव का पोस्टमार्टम के बाद शनिवार दोपहर में शव घर लाया गया और अंतिम संस्कार खाजेकलां घाट पर किया गया। रविवार को मृतक के परिजन को ढाढस बंधाने और घटना की जानकारी लेने के लिए विधान परिषद में प्रतिपक्ष के नेता सम्राट चौधरी पहुंचे।

उन्होंने इस दौरान संजीव की पत्नी, बेटा, बेटी, बहन और बहनोई से बात कर पूरे घटना के बारे में जानकारी ली। इस दौरान प्रदेश भाजपा के मंत्री रूपनारायण मेहता भी मौजूद थे। बाद में पत्रकारों से बात करते हुए श्री चौधरी ने कहा कि घटना दुखद है। बिहार में लगातार जंगलराज की स्थिति बनती जा रही है। बिहार के मुखिया नीतीश कुमार का पुलिस प्रशासन पर से नियंत्रण समाप्त हो चुका है। अधिकारी से लेकर पदाधिकारी तक उनके निदेश को तबज्जो नहीं दे रहे हैं। वह इस घटना को विधान परिषद में उठाएंगे और सरकार से जवाब-तलब करेंगे। इसके बाद पीड़ित परिजन से मिलने प्रदेश भाजपा के पूर्व अध्यक्ष और विधायक नंदकिशोर यादव भी पहुंचे। उन्होंने भी मृतक संजीव और राजेश के परिजनों से बातचीत की और घटनाक्रम की जानकारी ली। बाद में पत्रकारों से बात करते हुए श्री यादव ने कहा कि बिहार में अपराध का ग्राफ बढ़ता जा रहा है। हर व्यक्ति इस कारण से जिंदा है कि कोई उसे मारने का निर्णय नहीं लिया है। यह स्थिति चिंताजनक है।

दोनों हत्या में शामिल अपराधी की गिरफ्तारी हो, यह परिजन की भी मांग है। मगर दोनों मृतक के परिवार की भी सरकार को चिंता करनी चाहिए। विधायक श्री यादव ने कहा कि हाल के दिनों में पुलिस पर हमला बढ़ गया है। पुलिस लाचार बन गई है, शासन पंगु बना है। बिहार की स्थिति चिंताजनक बनी है। इसलिए यह कहना कि कब किसकी हत्या हो जाए और बढ़ते अपराध, हत्या, लूट की गिनती करना अब संभव नहीं रह गया है।

बगहा अनुमंडलीय अस्पताल में सुरक्षाकर्मियों को दिया गया प्रशिक्षण

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

बगहा (नगर संवाददाता) अस्पतालों की सुरक्षा व्यवस्था और बेहतर हो इसको लेकर अस्पताल के सुरक्षाकर्मियों को रविवार को अनुमंडलीय अस्पताल बगहा में प्रशिक्षण दिया गया। सेवानिवृत्त सूबेदार शशि भूषण कुमार की देखरेख में सभी गानों को अस्पताल के चिकित्सक वे मरीज परिजनों की सुरक्षा के साथ अस्पताल में शांतिपूर्ण विधि व्यवस्था बहाल को लेकर सुरक्षा से जुड़े कई बिंदुओं पर प्रशिक्षण दिया गया। इसके अलावा सुरक्षाकर्मियों को आत्मरक्षा का त्वरित करवाई सहित गंभीर घटना होने पर उस से कैसे निपटा जाए पर बिंदुवार जानकारी दी गई। साथ में साथ आधुनिक तरीके से अस्पतालों की सुरक्षा करने की जानकारी भी दी गई। अस्पतालों की सुरक्षा मुहैया कराने वाली संस्था के निदेशक सुधीर कुमार शुक्ला ने बताया कि वर्ष 2019 में सभी गार्डों को नियुक्ति के साथ प्रशिक्षण दिया गया था। अब दोबारा इनको आधुनिक ढंग से प्रशिक्षण दिया जा रहा है। ताकि सुरक्षा व्यवस्था को और भी बेहतर किया जा सके। प्रशिक्षण के दौरान बगहा अनुमंडल अस्पताल के उपाधीक्षक डॉक्टर के.बी. एन. सिंह हौसला अफजाई करते हुए सुपरवाइजर वह सभी गार्डों को मोमेंटो व मेडल से सम्मानित किया।

ट्रेनों में लगाया जाएगा वेडिंग मशीन

पटना सिटी (प्राकि)। रोटरी क्लब आफ कंकड़बाग पहुंचे बिहार झारखंड के मंडलाध्यक्ष संजीव कुमार ठाकुर ने कहा कि क्लब के द्वारा ट्रेनों में महिलाओं को सुविधा मिले, इसके लिए वेडिंग मशीन लगाने की योजना पर काम किया जाएगा। मंडलाध्यक्ष रविवार को अगमकुआं के भूतनाथ रोड स्थित क्लब का निरीक्षण करने पहुंचे थे। क्लब के अध्यक्ष शंभूनाथ सिंह, सचिव अजीत सिंह और रोटेरियन राजकिशोर सिंह ने अतिथियों का स्वागत किया। मंडलाध्यक्ष ने क्लब के कार्यकलाप की सराहना करते हुए कहा कि इसके लिए केंद्र सरकार को प्रस्ताव भेजा जाएगा। आयोजन में मंडलाध्यक्ष की पत्नी पूनम ठाकुर और पूर्व डीएसपी विजय कुमार यादव ने सदस्यों के साथ शिक्षा, पर्यावरण, सेवा और विकास कार्य के संकल्प को दोहराया। संचालन डॉ दीप्ति सहाय और धन्यवाद ज्ञापन आरपी श्रीवास्तव ने किया।

मंदिर के जीर्णोद्वार पर कलश शोभायात्रा व नगर भ्रमण

पटना सिटी (प्राकि)। चित्रगुप्त महाराज के रानीघाट महेंद्रू स्थित मंदिर के जीर्णोद्वार कार्य शुरू होने पर स्थापना को को ले कलश शोभायात्रा निकाली गई। 151 महिलाओं ने रानीघाट से जलभरावन कर आसपास के क्षेत्रों का भ्रमण करते हुए वापस मंदिर लौटीं। यहां चार दिनों का अनुष्ठान शुरू हुआ। बाबा भूतेश्वरनाथ धाम परिसर में आयोजित धार्मिक अनुष्ठान और शोभायात्रा में पार्षद सीमा वर्मा, शोभा देवी, रश्मि सिन्हा, स्वाति सिन्हा, संजीव श्रीवास्तव, शिवशंकर प्रसाद, अविनाश सिन्हा, अनंत कुमार आदि शामिल हुए। पूजा अनुष्ठान का विधान पंडित प्रमोद मिश्र ने कराया।

कारोबार करने को 5 लाख नहीं देने पर बेटी की किया हत्या

प्रात :किरण संवाददाता

पटना सिटी । एक बार फिर दहेज की बलिवेदी पर ब्याहता चढ़ गई। इस संबंध में मृतका निकेता रानी उर्फ मिक्की की मां अनिता देवी ने सुलतानगंज थाना में बेटी की हत्या कर साक्ष्य छुपाए जाने का मामला दर्ज कराया है। इसमें उन्होंने कहा कि शादी के बाद कारोबार करने के लिए पांच लाख की मांग की जा रही थी। उक्त राशि देने में असमर्थ होने पर बेटी को प्रताड़ित किया जाता था और अंततः उसकी हत्या कर दी गई। पटना जिला के खुसरूपुर थाना क्षेत्र के शबरी नगर के नारायणपुरी कॉलोनी की रहने वाली अनिता देवी पति स्व उपेंद्र सिंह ने कहा कि वह अपनी बेटी निकिता रानी उर्फ विक्की की शादी 28 मई, 21 को सुलतानगंज थाना क्षेत्र के महेंद्रू के रहने वाले रोहित कुमार सिंह पिता स्व नंदकिशोर सिंह के साथ की थी। उस दौरान उपहार स्वरूप पांच लाख नगद के अलावा सोने का गहना, बर्तन, फ्रिज, पलंग, टेबल, कपड़ा सब मिलाकर करीब 20 लाख जमीन बेचकर खर्च की थी। बेटी के ससुराल पक्ष के लोग शादी के बाद से उस पर दबाव डाल रहे थे कि मां से पांच लाख दहेज में मांग कर लाओ, हमें व्यापार करना है।

अन्यथा तुमको जान से मार देंगे। इस प्रताड़ना में पति रोहित कुमार सिंह, ननद सपना कुमारी उर्फ खुशबू, देवर राहुल कुमार सिंह और बेगूसराय का रहने वाला ननदोई राजेश कुमार सिंह हमेशा बेटी के साथ मारपीट करते हुए प्रताड़ित करता था। 21 फरवरी की रात में फोन आया कि आपकी बेटी निकिता सीढ़ी से गिर जाने के कारण सिर फट गया है। सूचना पाकर रिश्तेदारों को जाने के लिए कहीं। कारण कि उन्हें कोई पुत्र नहीं है। पति का भी निधन हो चुका है। पांच बेटी है, जो सभी शादीशुदा है। निकेता सबसे छोटी थी। वहां जाने पर पता चला कि बेटी को अस्पताल ले गए हैं। निजी अस्पताल के कर्मियों ने बताया कि पीड़िता को 22 फरवरी को पीएमसीएच ले गए हैं। पता करने पर मालूम हुआ कि बिना पोस्टमार्टम कराए हुए लोग शव को जलाने के लिए गंगा घाट ले गए हैं। परिजन आनन-फानन वहां पहुंचे। निकिता का देवर राहुल कुमार सिंह है। वह उस अस्पताल का कर्मचारी है। उन्हीं लोगों के साथ मिलकर साक्ष्य छुपाने के लिए उसने ऐसा काम किया है। बेटी को दहेज के लिए प्रताड़ित कर हत्या कर जान से मार दिया गया है। इसके बाद अस्पताल ले जाने का ढोंग किया गया है। निकेता का मोबाइल भी यह लोग लेकर बंद कर दिए हैं। उसे एक साल की एक बेटी है। उन्हें आशंका है कि उसे भी बहाना बना कर जान से मार कर उसका पति दूसरी शादी कर लेगा। इस संबंध में पुलिस ने बताया कि सुलतानगंज थाना में कांड 91/23 दर्ज किया गया है और थानाध्यक्ष शेर सिंह यादव खुद इस कांड के अनुसंधानक हैं।

भेंटा मामले में भाई बलदेव सिंह के आज पेश होने पर संशय

प्रात : किरण संवाददाता

पटना सिटी। तख्तश्री हरिमंदिर जी पटना साहिब में जालंधर के दानकर्ता के द्वारा दिए गए भेंटा विवाद से अब तक तख्तश्री पटना साहिब के तत्कालीन जत्थेदार ज्ञानी रणजीत सिंह को न्याय नहीं मिल पाया है।

दरअसल मामला के उजागर होने और लगातार आंदोलन चलने के कारण उन पर एकतरफा कार्रवाई और निर्णय लिया जाता रहा। कमेटी के तत्कालीन अध्यक्ष रहे अवतार सिंह हित (अब स्वर्गीय) ने मामले की जांच के लिए एक समिति का गठन किया था, मगर तारीख दर तारीख पड़ते रहने और जांच में भेंटा देने वाले गुरविंदर सिंह सामरा के द्वारा असहयोग किए जाने के कारण रिपोर्ट सौंपने में देर हो रही है। हालांकि जांच समिति से जुड़े दो सदस्यों का कहना है कि अब इसमें समय अधिक नहीं लिया जाएगा। कारण कि छह दिसंबर,22 को श्री अकाल तख्त साहिब के द्वारा जारी हुक्मनामा में भी रिपोर्ट जल्द पेश करने का निर्देश दिया गया है। इस बात का भी ख्याल रखा जा रहा है कि कोई भी ऐसी कमी नहीं छोड़ी जाए, जिस पर बाद में लोग उंगली उठाने का काम करें। वैसे जांच समिति के समक्ष गुरविंदर सिंह सामरा, ज्ञानी रणजीत सिंह, वरीय मीत ग्रंथी भाई दिलीप सिंह अपना बयान दर्ज करा चुके हैं। अब अंतिम रूप से जांच समिति ने तख्तश्री पटना साहिब के कार्यकारी जत्थेदार ज्ञानी बलदेव सिंह को 27 फरवरी को समिति के समक्ष पेश होने का पत्र जारी किया है। मगर मिली जानकारी के अनुसार भाई बलदेव सिंह के दिल्ली जाने पर संशय की स्थिति बनी है। वैसे यह माना जा रहा है कि वे यदि दिल्ली गए तब भी, और नहीं गए, तो भी दोनों स्थिति में जांच समिति अपनी रिपोर्ट मार्च के पहले सप्ताह तक सौंप सकती है।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की प्रतिमा को असामाजिक तत्वों ने क्षतिग्रस्त किया

प्रात : किरण संवाददाता

दानापुर। नगर परिषद क्षेत्र के नासरीगंज प्राचीन देवी मंदिर के पास लगे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के प्रतिमा को बीते रात असामाजिक तत्वों ने क्षतिग्रस्त कर दिया है। रविवार को सुबह जब लोगों ने क्षतिग्रस्त प्रतिमा को देखा तो चौक पडे। असामजिक तत्वों द्वारा प्रतिमा के दाहिने हाथ , लाठी व पैर को पत्थर से मारकर तोड दिया गया है। स्थानीय लोगों ने बताया कि देर रात की घटना है। सुबह आने पर देखा तो प्रतिमा क्षतिग्रस्त था। बताया जाता है कि स्वतंत्रता सेनानी सीताराम कानू ने 30-35 वर्षो पूर्व महात्मा गांधी जी की प्रतिमा को स्थापित किया गया था। प्रतिमा क्षतिग्रस्त किये जाने के बाद स्थानीय लोगों में आक्रोश है। पूर्व वार्ड पार्षद अजय कुमार मेहता ने कहा कि दोषी को जल्द से जल्द गिरफ्तारी किया जाये और क्षतिग्रस्त प्रतिमा का मरम्मत करने की मांग की है।

प्राथमिकी में संजीव व राजेश की हत्या पुरानी दुश्मनी का कारण

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

मेहंदीगंज थाना क्षेत्र के मेहंदीगंज पानी टंकी के पास रहने वाले संजीव महतो उर्फ कक्कू और राजेश कुमार उर्फ गोरख महतो की हत्या बाइपास थाना क्षेत्र के भैंसलोटा पाइन के किनारे रोड पर अज्ञात अपराधियों के द्वारा 24 फरवरी की देर शाम कर दी गई थी। इस संबंध में मृतक राजेश के भाई रमेश महतो के द्वारा बाइपास थाना में मामला दर्ज कराया गया है। इसमें कहा गया है कि 24 फरवरी की देर रात 11.40 बजे उसे मोबाइल से सूचना मिली कि आपके भाई राजेश कुमार उर्फ गोरख महतो पिता स्व गंगा महतो और उनके दोस्त संजीव कुमार उर्फ कक्कू महतो पिता ललित महतो उर्फ लाला महतो की हत्या भैंस लोटा पइन के किनारे रोड पर कर दी गई है। दोनों मेहंदीगंज के पानीटंकी के पास के रहने वाले हैं।

दोनों बुलेट मोटरसाइकिल से जोलबीघा अपने खेत के पास मोटरसाइकिल से गए थे। इस दौरान वापस घर लौटने के दौरान अपराधियों ने मोटरसाइकिल रोक कर गोली मारकर हत्या कर दिया।

संक्षिप्त खबरें

शहर वासियों के लिए G S क्लैशन का उद्घाटन नैयर अहमद ने किया

गया।शहर के टावर चौक के मुख्य सड़क मार्ग पर स्थित कृष्ण मिष्ठान भंडार के सामने जी एस क्लैशन का उद्घाटन वार्ड पार्षद 21 नैयर अहमद ने फीता काटकर किया गय है।इस मौके पर शहर के कई गणमान्य लोग उपस्थित हुए हैं। इस मौके पर वार्ड पार्षद नैयर अहमद ने कहा कि इस तरह के कपड़े कि दुकान अब शहर बहुत खुल रहे हैं।होली जैसे त्यौहार में हर लोगों के लिए नये कपड़ों का रेज उपलब्ध है।लेकिन जी एस क्लैशन सभी बड़े से बुढे तक के लेटेस्ट डिजाइन के कपड़े एक जगह आसानी से मिल जाएगे, महिलाओं के लिए भी बहुत सारे नये आकषर्क डिजाइन के कपडे इस साप गया जिला वासियों को मिल जाएगे,भिड भाड से बचकर अच्छी तरह से खरिदारी कर सकते हैं शहर और गया जिला वासि।इस अवसर पर कैसर खान,एमडी परवेज रिहान,दिलीप,रंजीत,राजा, नन्हे भाई, और काफी संख्या में लोग उपिस्थत थे।

अग्निवीरों का 7वा दस्ता ट्रेनिग के लिए मध्य भारत की तरफ रवाना

मुजफ्फरपुर ।आज अग्निवीरों का 7वां जत्था ट्रेनिंग के लिए मध्यमार्ग की ओर रवाना हुआ।भखरतीय सेना में अग्निवीर के रूप में चयन होने के कारण वे बहुत ही प्रसन्न थे और उन के चहरे पर एक अलग ही चमक थी।इनका कहना था कि स्त्रस्त्र भारत माता के अग्निवीर बन कर उन्हे देश सेवा करने का सौभाग्य मिलने से उनका जीवन सार्थक हो गया है यह वो सपना है जो उन्होंने बचपन से देखा था।सेना भर्ती निदेशक ने युवाओं को सूचित किया कि वर्ष 2023- 24 के लिए भारतीय सेना में विभिन्न ट्रेडों की भर्ती की जानी हैं, *जिसका 16 फरवरी 2023 से 15 मार्च 2023 तक रजिस्ट्रेशन किया जा रहा हैं।* आप सभी भारतीय सेना में भर्ती के इच्छुक अभ्यर्थी अपनी योग्यता के अनुरूप ट्रजिस्ट्रेशन करा सकते है। उन्होंने बताया कि अभ्यर्थी अपनी तैयारी के साथ सेना भर्ती के स्वच्छ निष्पक्ष और पारदर्शी प्रक्रिया से गुजर कर भारतीय सेना का हिस्सा बने।सेना भर्ती निर्देशक ने इन अभ्यर्थियों को दलालों से भी सावधान रहने को कहा है।

एनआईओएस प्रशिक्षित शिक्षकों ने निदेशक प्राथमिक शिक्षा द्वारा जारी पत्र की प्रतियां जलाकर किया विरोध दर्ज

गया।प्राथमिक शिक्षा द्वारा जारी पत्र के कारण राज्य के लगभग 65000 हजार एनआईओएस प्रशिक्षित शिक्षकों के बीच बड़ा संकट गहरा गया है।इस पत्र का हवाला देते हुए सभी जिलों के डीईओ एवं डीपीओ ने वैसे शिक्षकों को नवनियुक्त की श्रेणी मे लाकर उनके वेतन मे 10-12 हजार रूपए कटौती हेतु सभी बीईओ को आदेशित कर चुके है साथ ही वर्षों से बकाया प्रशिक्षित एवं 15% एरियर को भी रोक दिया है। शिक्षक मृत्युंजय ठाकुर, राघव रंजन एवं शशिरंजन पाठक ने संयुक्त रूप बताया कि केंद्रीय अध्यादेश के तहत शिक्षा का अधिकार कानून 2017 के धारा 23(2) के आलोक मे एनआईओएस के माध्यम से भारत के सभी अप्रशिक्षित शिक्षकों को एकसाथ प्रशिक्षण की व्यवस्था की गई और 31 मार्च 2019 तक सभी अप्रशिक्षित शिक्षकों का प्रशिक्षण के साथ साथ परीक्षा भी ली गई जिसका परीक्षाफल प्रकाशन की तिथि 31 मार्च 2019 के बाद का एनआईओएस द्वारा जारी कर दी गई। आदित्य मानस एवं आनंद कुमार ने संयुक्त रूप से बताया कि जब हमारे एनआईओएस प्रशिक्षित शिक्षक 31 मार्च 2019 तक प्रशिक्षण प्राप्त कर लिए फिर उन्हे किस आधार पर नवनियुक्त की श्रेणी मे रखते हुए वेतन कटौती की बात हो रही है।निदेशक प्राथमिक शिक्षा अविलंब अपना पत्र निरस्त कर स्पष्ट पत्र जारी करे ताकि एनआईओएस प्रशिक्षित शिक्षकों के साथ किसी भी तरह की हकमारी न हो सके एवं सभी शिक्षक भयमुक्त एवं तनावमुक्त होकर विद्यालय मे अपने दायित्व का निर्वहन कर सके।सभी एनआईओएस प्रशिक्षित शिक्षकों ने एक स्वर मे निदेशक प्राथमिक शिक्षा से मांग किया कि 31 मार्च 2019 से हमे प्रशिक्षित शिक्षक मानते हुए हमारे सेवा संधारण का आदेश/पत्र जारी किया जाय।इस कार्यक्रम मे मुख्य रूप से जयप्रकाश नारायण, दिलीप कुमार, मुकेश कुमार सिंह, प्रभात रंजन,अभिमन्यु कुमार, राकेश कुमार सिंह, मो.हाफिज, मो.मुर्तजा, जलालुद्दीन आजाद आदि शिक्षक सामिल हुए।

आमजन साथ देंगे तो असामाजिक तत्वों और अपराधियों का अलग-थलग कर उनको प्रभावी ढंग से नियंत्रण किया जा सकेगा : पुलिस महानिदेशक राजविंदर सिंह भट्टी

प्रोजेक्टर के माध्यम से बिहार पुलिस सप्ताह का आयोजन कर डीजीपी कर रहे हैं आम जनों से अपील

प्रात : किरण संवाददाता

संग्रामपुर (मुंगेर)। थाना परिसर में रविवार को बिहार पुलिस सप्ताह काा आयोजन किया गया। थानाध्यक्ष रंजन कुमार के नेतृत्व में बिहार पुलिस द्वारा बिहार के आम जनता, जनप्रतिनिधि, बुद्धिजीवी, छात्र-छात्राओं को प्रोजेक्टर के माध्यम से कार्यक्रम जीबीएम की जानकारी को लेकर प्रोजेक्ट के माध्यम से दिखाया जा रहा है।

पुलिस महानिदेशक बिहार राजविंदर सिंह भट्टी के द्वारा नागरिकों और बिहार पुलिस को राज्य के नागरिकों की निष्ठापूर्वक एवं व्यवहारिक दक्षता के साथ सेवा एवं सुरक्षा की जानकारी के साथ पुलिस और आमजन एक दूसरे का साथ देगें तो असामाजिक तत्वों और अपराधियों को अलग-थलग कर उनको पुलिस द्वारा और प्रभावी ढंग से नियंत्रित किया जा सकेगा। अतः मैं बिहार के समस्त नागरिकों से अपील करता हूं कि ऐसे तत्वों के विरुद्ध प्रभावकारी कार्य करने हेतु पुलिस का सहयोग करें। प्रोजेक्ट में दिखाया गया कि बिहार पुलिस

में अपने साथी पुलिस अधिकारियों, कर्मियों पुरुष और महिलाओं को विश्वास दिलाता हूं कि आपकी समस्याओं का सामाधान एवं कल्याण हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है। हम आपकी व्यवहारिक दक्षता, काम के माहौल और निजी जीवन को बेहतर बनाने के लिए सभी आवश्यक कदम उठाएंगे। मुझे विश्वास है कि आप पूरी निष्ठा, अनुशासन और टीमवर्क के साथ अपने कर्तव्य का निर्वहन करते हुए आमजन का पुलिस पर भरोसा और मजबूत करेंगे। अपराध नियंत्रण एवं कानून व्यवस्था को बनाएं रखने हेतु साथ मिलकर काम करें और आमजन की बेहतर सेवा करें। प्रोजेक्ट के माध्यम से बिहार पुलिस द्वारा कार्यशैली पर दिखाया गया जिसमें बिहार पुलिस एसोसिएशन एवं बिहार के कप्तान बिहार सरकार के मुख्यमंत्री ने भी प्रोजेक्ट के माध्यम से संदेश पहुंचाने के लिए बिहार पुलिस सप्ताह दिवस चलाया जा रहा है जिसमें बताया जा रहा है कि पुलिस के साथ ग्रामीण इलाके के गण्यमान बुद्धिजीवी बुद्धिजीवी, छात्र छात्राओं को प्रोजेक्ट के माध्यम से बताएगा कि आप पुलिस को मदद करें पुलिस आपको मदद करेगी क्षेत्र में हो रही अपराध पर नियंत्रण के लिए जब तक ग्रामीण क्षेत्र के गणमान्य बुद्धिजीवी छात्र छात्रा आगे नहीं आएंगे तो पुलिस समन्वयक का कोई मतलब ही नहीं रहेगा इसलिए पुलिस पब्लिक समन्वय को बनाए रखने के लिए आप पुलिस को मदद कीजिए पुलिस आपको मदद करेगी इस कार्यक्रम में थाना के एस आई ब्यूटी कुमारी,स्वीटी कुमारी, अबुल कलाम,नवल किशोर यादव, प्रखंड के उपप्रमुख सचिन कुमार, पैक्स अध्यक्ष शिव कुमार शिवन, सरपंच विनय सिंह,रामानुज शर्मा, जवाहर सिंह,रामखेलावन शर्मा, चेंबर ऑफ कॉमर्स अध्यक्ष मनोज शाह के अलावे थाना क्षेत्र के विभिन्न क्षेत्रों से आये जनप्रतिनिधि बुद्धिजीवी एवं छात्र छात्राएं शामिल थे।

पालीगंज में अनियंत्रित कार ने तीन लोगो को रौंदा एक महिला कि मौत, दो घायल रेफर

प्रात : किरण संवाददाता

पालीगंज। रविवार को थाना क्षेत्र के फतेहपुर गांव के पास सड़क किनारे दरवाजे पर बैठी दो महिला सहित एक बच्ची को अनियंत्रित होकर एक कार रौंद दिया। इस हादसे में एक महिला की मौत घटनास्थल पर हो गयी। वही दूसरी महिला व एक बच्ची गम्भीर रूप से घायल हो गयी। वही घायलों को इलाज के लिए पालीगंज अनुमंडल अस्पताल से पटना पीएमसीएच भेजा गया है।

जानकारी के अनुसार पालीगंज थाना क्षेत्र के फतेहपुर गांव स्थित मायके में आई दुल्हिन बाजार थाना क्षेत्र के लक्ष्मिटोला गांव निवासी बिहारी यादव के 50 वर्षीय पत्न ी पनपतिया देवी फतेहपुर गांव निवासी कृष्णा यादव की 50 वर्षीय पत्नी सुगिया देवी के साथ अपने दरवाजे के आगे बैठी थी। वही फतेहपुर गांव निवासी अमित कुमार के 3 वर्षीय पुत्री नेहा कुमारी पास में खेल रही थी। उसी समय वहां से गुजर रही बीआर 01 बीएफ 3456 नम्बर की एक कार पास आकर गड्ढे में फंस गई। कार जैसे ही गड्ढे से बाहर निकली की उसी समय अनियंत्रित होकर दरवाजे के पास बैठी महिलाएं व बच्ची को रौंद दिया। इस हादसे में पनपतिया देवी की मौत घटनास्थल पर हो गयी।

जबकि सुगिया देवी व नेहा कुमारी गम्भीर रूप से घायल हो गयी। घटना के बाद मौके पर ग्रामीणों की भीड़ जमा हो गयी। जबकि घटना की सूचना पाकर मौके पर पहुंची पालीगंज पुलिस शव को कब्जे में ले लिया व दोनों घायलों को इलाज के लिए पालीगंज अनुमंडल अस्पताल लाया। जहां से घायलों की गम्भीर स्थिति को देख डॉक्टरों ने प्राथमिक इलाज के बाद पीएमसीएच भेज दिया। वही पुलिस ने कार को कब्जे में लेकर थाने लाई है।

इस सम्बंध में पालीगंज पुलिस ने बताया कि कार चालक को भी कब्जे में ले लिया गया है। वही शव को पोस्टमार्टम के बाद अंतिम संस्कार करने के लिए परिजनों को सौंप दिया गया है। बताया जा रहा है कि पनपतिया देवी की मायके पालीगंज थाना क्षेत्र के फतेहपुर गांव निवासी सिद्धनाथ यादव के घर मे था। वही पनपतिया देवी कुछ दिनों पूर्व एक शादी समारोह में शामिल होने के लिए फतेहपुर गांव में आई हुई थी।

एआईकेकेएमएस ने सरैया सीओ का फूंका पुतला, किया प्रदर्शन

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। ऑल इंडिया किसान खेत मजदुर संगठन सरैया कमेटी के द्वारा सरैया सीओ का पुतला दहन किया गया। पुतला दहन के पूर्व सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, सरैया के प्रांगण से एक जुलूस निकाला गया जो सरैया बाजार, सरैया थाना एवं मोती चौक होते हुए जैतपुर मोर पर पहुचा जहां सरैया सीओ का पुतला दहन किया गया। जुलूस में संगठन के कार्यकर्ता सरैया का भ्रष्ट सीओ हाय हाय, भ्रष्ट सरैय सीओ मुदार्बाद, दाखिल खारिज में रिश्वत लेना बंद करो, पैसे के बल पर एक ही जमीन का दो- दो बार अलग-अलग व्यक्ति के नाम पर दाखिल खारिज करना नहीं चलेगा, घूस लेकर एक ही जमीन का दो-दो बार दाखिल खारिज करने वाला सरैया सीओ मुदार्बाद,

अंचल कार्यालय को लूट-खसोट का अड्डा बनाना नहीं चलेगा, परिमार्जन के मामले में किसानों का शोषण-दोहन बंद करो, जनता एवं जनप्रतिनिधियों को झूठे मुकदमों में फंसाने की धमकी देने वाला सीओ हाय हाय, घुसखोर सरैया सीओ पर अपराधिक मुकदमा दर्ज करो, घुसखोर सीओ को बर्खास्त करो, बिना जांच पड़ताल किए मनमाने ढंग से आय प्रमाण पत्र बनाना नहीं चलेगा आदि नारे लिखे हुए सुसज्जित बैनर के साथ जुलूस में नारे लगा रहे थे। पुतला दहन के बाद सभा को संबोधित करते हुए किसान नेता एवं पूर्व समिति सदस्य सुनील कुमार सिंह ने वर्तमान सीओ सरैया अंचल कार्यालय को घूसखोरी और दलालों का अड्डा बना हुये है। हर काम के लिए नाजायज रूप से पैसा लिया जाता है। अगर जनप्रतिनिधि या लोग नाजायज धन वसूली का विरोध करते हैं तो उन्हें मुकदमों में फंसाने की धमकी देते हैं।

मैं पुतला दहन एवं प्रतिवाद सभा के माध्यम से वरीय अधिकारी से मांग करता हू कि सरैया अंचल अधिकारी को अविलंब बर्खास्त किया जाए। सभा को किसान नेता कौशल भगत, माधव भगत आदि ने भी संबोधित किया। कार्यक्रम में नन्क साह, राजन कुमार, अनिल राय, रंजीत कुमार, टुनटुन कुमार,शिव भगत, शंभू सिंह, खुर्शीद आलम, शहाबुद्दीन, शीला देवी, दर्वी देवी,सीता देवी, विमला देवी, रामसखी देवी सहित दर्जनों कार्यकर्ता उपस्थित थे।

नवनियुक्त शारीरिक शिक्षक ने अपने वेतन विसंगति को लेकर किया हल्ला बोल प्रदर्शन

प्रात : किरण ब्यूरो

भागलपुर। स्थानीय सैंडिस कंपाउंड मैदान स्थित योग स्थल के पास सैकड़ों नवनियुक्त शारीरिक शिक्षा एकत्रित हुए और अपने वेतन विसंगति को लेकर बैठक की।

बैठक के बाद सभी शारीरिक शिक्षक ने शिक्षा विभाग बिहार सरकार के खिलाफ हल्ला बोल प्रदर्शन भी किया। प्रदर्शनकारी शिक्षकों का कहना है अगर हम सभी शिक्षक बराबर काम करते हैं तो फिर और शिक्षकों की तरह हम लोगों का सामान्य वेतन क्यों नहीं दिया जा रहा है। इस दौरान नवनियुक्त शारीरिक शिक्षक ने कहा कि जब तक हम लोग पूर्ण रूप से इन बच्चों को

समय नहीं दिया जाएगा तो उस बच्चों का चहुमुखी विकास कैसे होगा, साथ ही साथ उन्होंने कहा आज के समय में 8हजार रुपये के वेतनमान में आखिर क्या हो सकता है, इस पर भी सवालिया निशान खड़ा करते हुए भागलपुर के सभी नवनियुक्त शारीरिक शिक्षक एकजुट हुए और सरकार के विरुद्ध हल्ला बोल प्रदर्शन शुरू कर दिया है।

होमगार्ड जवान अपने ट्रेक्टर की बरामदगी को लेकर लगा रहा वरीय अधिकारियों के कार्यालय का चक्कर

प्रात : किरण ब्यूरो

भागलपुर। नवगछिया भवानीपुर के होमगार्ड जवान निरंजन यादव ने नवादा गांव के रघुवंश यादव और रुदल यादव पर जबरन ट्रेक्टर पर कब्जा कर लेने का मामला प्रकाश में आया है। होमगार्ड जवान द्वारा जब अपने ट्रैक्टर को वापस करने की मांग की गयी तो दबंगों ने डेढ़ लाख रुपये रंगदारी मांग करने का आरोप लगाते हुए नवगछिया थाना सहित वरीय पुलिस पदाधिकारियों को लिखित आवेदन दिया है। होमगार्ड जवान ने आवेदन के माध्यम से अपने ट्रेक्टर की बरामदगी की गुहार लगायी है। वही वरीय पदाधिकारियों ने होमगार्ड निरंजन को मामले में जल्द से जल्द कार्रवाई करने का आश्वासन दिया है। मालूम हो

कि इसी सदमे में पिछले दिनों होमगार्ड निरंजन यादव की हालत अत्यधिक खराब हो गयी थी, उसे इलाज के लिये जेएलएनएमसीएच में भर्ती कराया गया था। होमगार्ड निरंजन यादव को एक तरफ स्लाइन चल रहा था और वे इसी अवस्था मे थाने और पदाधिकारियों के कार्यालयों का चक्कर काट रहे थे। स्लाइन के प्लास्टिक बोतल को उनका लड़का हाँथो में पकड़े हुए था। मामले को लेकर निरंजन का कहना है कि उनका ट्रेक्टर 13 फरवरी को नवगछिया रैक प्वाइंट पर नमक लोड करके खगड़िया गया हुआ था। वहां से नमक अनलोड करके उनके ट्रेक्टर को लेकर चालक घर आ रहा था, इसी बीच कामाख्या पेट्रोल पंप के पास उनके चालक को अपराधियों ने डरा धमका कर भगा दिया और ट्रेक्टर को अगवा कर लिया। काफी खोज बीन किया तो पता चला कि उनका ट्रेक्टर नवादा के रघुवंश यादव और रुदल यादव के पास है। जानकारी मिलते ही वे उनके घर पर गए। वहां उनका ट्रेक्टर खड़ा पाया गया था, जब दोनों से ट्रेक्टर वापस करने को कहा तो दोनों ने बतौर रंगदारी डेढ़ लाख रुपये की मांग कर दी। निरंजन यादव ने कहा कि वे खुद एक होमगार्ड हैं और कानून के सेवक हैं, लेकिन इतने दिनों से उनकी बात को थाने में नहीं सुनी जा रही है। थाने से बोला जा रहा कि आपस में मामले को सलटा लो।

निरंजन का कहना है कि आरोपियों का कहना है कि ट्रेक्टर पलट गया था, जिसके बाद उनलोगों ने उसे जब्त किया है। निरंजन यादव ने कहा कि हो सकता है ट्रेक्टर दुर्घटना का शिकार हो गया हो, ऐसी स्थिति में कानूनी कार्रवाई करना चाहिए था। दोनों आरोपी कानून को हाथ में लेने वाले कौन होते हैं। निरंजन यादव ने कहा कि नवगछिया के एसपी सर ने उन्हें सकारात्मक आश्वासन दिया है, उन्हें उम्मीद है अब उनका ट्रेक्टर उन्हें मिल जाएगा।

नियोजित शिक्षकों ने वेतन विसंगति दूर करने सम्बंधी आदेश की प्रति जलाई

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। स्टेट उत्तीर्ण नियोजित शिक्षक संघ गोप गुट, प्रखंड इकाई - कुढ़नी के बैनर तले प्रखंड शिक्षा कार्यालय कुढ़नी के प्रांगण में प्राथमिक शिक्षा निदेशक के ज्ञापांक - 12, दिनांकः 05.02.2023 के प्रति को जलाकर विरोध दर्ज कराया गया। मौके पर उपस्थित प्रखण्ड कार्यकारणी सदस्य विनोद कुमार ने कहा कि एनआईओएस से प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों के वेतन निर्धारण में हुए विसंगति को दूर करते हुए प्राथमिक शिक्षा निदेशक द्वारा जारी पत्र के आदेश को विभाग को वापस लेना ही पड़ेगा।

प्रखण्ड अध्यक्ष महेंद्र कुमार ने कहा कि एनआइओएस से कराए गए डीइएलईडी प्रशिक्षण को आरटीई के अनुपालन में 31 मार्च 2019 के पहले समाप्त करने के बाद भी बिहार राज्य के शिक्षा विभाग में असमंजस की स्थिति है। खेदपूर्ण तो यह है कि निदेशक, प्राथमिक शिक्षा, शिक्षा विभाग, बिहार सरकार ने अपने पत्रांकः 12 दिनांक 05.01.2023 के द्वारा एनआइओएस से प्रशिक्षित शिक्षकों के विषय मे प्रमाण - पत्र प्रिंटिंग डेट तथा माननीय उच्च न्यायलय के एक निर्णय को आधार बना कर ऐसे शिक्षको के लिए प्रमाण - पत्र प्रिंटिंग की तिथि को ही प्रशिक्षण तिथि मानते हुए (पत्र में अस्पष्टता है) ऐसे सभी शिक्षकों की पूर्व की सेवा अवधि को नगण्य मानकर प्रमाण - पत्र प्रिंटिंग तिथि से उन्हें नवनियुक्त मानते हुए वेतन का पुनर्निर्धारण करने का आदेश जारी किया गया है जिसके कारण बिहार के लगभग 60 से 65 हजार शिक्षक प्रभावित हो रहे हैं।

चोरों ने की ताला तोड़कर लाखों रुपए के जेवरात की चोरी

एकमा। बीती रात्रि के समय अज्ञात चोरों ने घर का दरवाजा का ताला तोड़कर लाखों रुपए के जेवरात एवं 30 जनवरी की चोरी कर लेने का मामला प्रकाश में आया है। जहां स्थानीय थाना पुलिस ने पहुंचकर घटनास्थल का निरीक्षण कर जांच पड़ताल में जुट गई है। इस मामले में पीड़िता ने थाने में एक लिखित आवेदन देकर शिकायत की है जिसमें कहा है कि थाना क्षेत्र के गंज गांव निवासी स्वर्गीय देवी सिंह के पुत्र रमेश कुमार सिंह ने कहा है कि हम अपने परिवार के सदस्यों के साथ शनिवार के रात्रि के समय खाना खाकर सोने चले गए थे। जब सुबह नींद खुली तो देखा कि बगल वाला रूम का ताला टूटा हुआ है तब मैं अपने परिवार के अन्य लोगों को जगाया तो देखा कि दो और रूम का ताला टूटा हुआ है तथा रूम में रखा गोदरेज की अलमीरा का ताला तोड़कर एक हार तीन सिकड़ी आठ अंगूठी एक जोड़ा झुमका एक मांग टीका 3 जोडा पायल के करीब 5 लाख के समान के अलावा 30 रुपए की नगदी चोरी कर फरार हो गए हैं।

बिहार पुलिस दिवस के मौके पर वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से मुख्यमंत्री ने किया रितिक परेड की वेबकास्टिंग का उद्घाटन

प्रात :किरण संवाददाता

तारापुर (मुंगेर)। रविवार के दिन बिहार पुलिस दिवस जन-जन की ओर बढ़ते कदम के अवसर पर रितिक परेड की वेबकास्टिंग का शुभारंभ राज्य के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के द्वारा वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से किया गया।

इस मौके पर राज्य के पुलिस महानिदेशक आर एस भट्टी चीफ सेक्रेट्री अमीर सुभानी सहित कई विभाग के वरीय पदाधिकारी ने कार्यक्रम में शिरकत किया। बिहार पुलिस दिवस जनउपयोगी कार्यक्रम के मौके पर उत्कृष्ट कार्य करने वाले कई पुलिस पदाधिकारी एवं पुलिसकर्मी को मुख्यमंत्री द्वारा प्रशस्ति पत्र देकर

सम्मानित किया गया। वहीं इसके पूर्व डीजेपी द्वारा मुख्यमंत्री को स्मृति चिन्ह सप्रेम भेंट किया गया। मुख्यमंत्री ने अपने संबोधन के दौरान पुलिस विभाग द्वारा आधारभूत संरचना मानव बल एवं नई नियुक्ति को लेकर विस्तार पूर्वक चर्चा किया। मुख्यमंत्री ने समारोह के दौरान डीजेपी से अधिक से अधिक पुलिस कर्मी की नियुक्ति हो इसकी व्यवस्था जल्द से जल्द सुनिश्चित करने को निर्देशित किया। राज्य के मुखिया ने अपने कार्यकाल के दौरान पुलिस विभाग में आमूलचूल परिवर्तन और कई बड़े कार्य करने की बातों को विस्तार से रखा। संपूर्ण प्रदेश में आपसी भाईचारा सद्भाव का वातावरण हमेशा कायम रहे इसके लिए सभी लोगों को चौकस रहने को निर्देशित किया। समारोह के दौरान पुरुष एवं महिला पुलिस कर्मियों द्वारा कई बेहतरीन झांकी प्रस्तुत की गई।

इस मौके पर अनुमंडल पदाधिकारी रंजीत कुमार पुलिस उपाधीक्षक पंकज कुमार थानाध्यक्ष राजेश कुमार रंजन प्रखंड विकास पदाधिकारी संजय कुमार अंचलाधिकारी बंदना कुमारी चंदर सिंह राकेश मिथिलेश कुमार सिंह सहित सैकरो जनप्रतिनिधि ने पुलिस दिवस समारोह के दौरान वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग में भाग लिया।

सफल होने के लिए गंभीर होना होगा : आनंद जायसवाल

मेंटर्स एडुसर्व के 'संवाद' कार्यक्रम में बोल रहे थे फिजिक्स गुरू

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। यदि आप 11वीं में कमजोर हो गए हैं तो आपको चिंता करने की कोई बात नहीं है। 12वीं में आकर भी आप गंभीर होकर बेहतर रिजल्ट ला सकते हैं। सफल होने के लिए आपको गंभीर होना होगा। देर से शुरू करने से कुछ नहीं होता है,लेकिन देर से शुरू होने के बाद रूकना नहीं है। आपका भी टाइम आएगा, लेकिन तबतक आपको धैर्य रखना होगा।

उक्त बातें देश के प्रतिष्ठित कोचिंग संस्थान मेंटर्स एडुसर्व के डायरेक्टर और भौतिकी के जानेमाने शिक्षक आनंद कुमार जायसवाल ने कही। मौका था मेंटर्स एडुसर्व की ओर से बापू सभागार

में आयोजित संवाद कार्यक्रम का। आनंद जायसवाल के सभागार में प्रवेश के साथ वहां बैठे बच्चों ने अपने मोबाइल का फ्लैश लाइट आन कर उनका पूरे जोश के साथ इस्तकबाल किया। आनंद जायसवाल ने कहा कि आपको अपने आप पर और अपने मेंटर पर भरोसा रखना होगा। जिंदगी में कोई आगे-पीछे नहीं होता। सभी जीतते हैं। कभी भी खुद की तुलना दूसरे से मत करों। हमेशा जीवन में अच्छा करने की कोशिश करते रहो। इस कार्यक्रम में 11वीं से 12 वीं में गए विद्यार्थी थे। जायसवाल ने कहा कि आप छात्रों को सेल्फ स्टडी कम से कम छह घंटे करने चाहिए। और जिस दिन स्कूल बंद हो उस दिन आठ से दस घंटे सेल्फ स्टडी करो।+

हार्ड वर्क के साथ-साथ स्मार्ट वर्क भी जरूरी है। सिर्फ रिजल्ट के लिए मत पढ़ो नॉलेज के लिए भी पढ़ो। जो भी स्टडी मेटेरियल आपको दिए जाते हैं आप उसका अध्ययन करें।

आप बच्चों को अपनी स्टडी हैबिट को ठीक करना होगा। ताकि परीक्षा में अच्छे नंबर ला सकें। इसके लिए स्टडी होना चाहिए। परीक्षा के लिए तैयार करनी होगी रणनीति : आनंद जायसवाल ने कहा कि परीक्षा के लिए आपको अपनी रणनीति तैयार करनी होगी। आपको अपने लक्ष्य को तय करना होगा। हर परीक्षा में आप अपने तय टारगेट को बढ़ाते जाओ। आपको नीट, जेईई एडवांस्ड का पैटर्न पता होना चाहिए। कोई भी पेपर को कैसे मजबूत करेंगे। निगेटीव मार्क से हमेशा बचना चाहिए। जितना आपको आता है उतने ही प्रश्नों को हल करें। जेईई एडवांस्ड में अगर आपको 30-40 प्रतिशत आ रहे हैं तो आप अच्छा कर रहे हैं लेकिन आपको और अच्छा करने की जरूरत है। सोशल मीडिया भटकाव का बड़ा कारण है। अगर आप सोशल मीडिया पर है तो या तो आप इससे दूर हो जाए या फिर इसे सिमित करें।

पूर्णिया में महागठबंधन की विशाल महारैली को देखकर केंद्र से लेकर प्रदेश तक पूरी तरह भयभीत हो चुकी है भाजपा: जिला जदयू मुख्य प्रवक्ता मनोरंजन मजूमदार

मुंगेर। जिला जनता दल यू के मुख्य जिला प्रवक्ता मनोरंजन मजूमदार ने एक बयान जारी कर कहा है कि पूर्णिया में महागठबंधन की विशाल महारैली को देखकर भाजपा के नेता घबराहट में है और भाजपा के केंद्र से लेकर प्रदेश नेतृत्व तक पूरी तरह भयभीत हो चुकी है उन्होंने कहा कि पूर्णिया में लाखों लाख की ऐतिहासिक भीड़ जुटी, महारैली ने साबित कर दिया हैं कि आने वाले समय में पूरे सीमांचल के साथ ही सम्पूर्ण बिहार से भाजपा का पूरी तरह सफाया हो

जाएगा। जदयू मुख्य प्रवक्ता ने कहा है कि भारतीय जनता पार्टी आगामी लोकसभा 2024 के चुनाव में अपनी हार को सामने देखकर परेशान हो गया है और भाजपा नेता अभी से ही महागठबंधन के सर्वमान्य नेता मुख्यमंत्री नीतीश कुमार और बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री लालू प्रसाद, उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव सहित सभी महागठबंधन नेताओं के विरोध में अनाप-शनाप बयान देकर विधवा विलाप कर रहे है।भारतीय जनता पार्टी के बड़े नेताओं के बौखलाहट घबराहट से ही स्पष्ट हो चुका है कि वह समझ चुका हैं कि आने वाले आगामी लोकसभा चुनाव में बिहार में भाजपा का पूरी तरह सफाया हो जाएगा और जनता के सहयोग से महागठबंधन का झंडा बुलंदी के साथ पूरे देश में फहरेगा।

पारस ग्लोबल हॉस्पिटल, दरभंगा में मुफ्त जांच एवं परामर्श शिविर का सैकड़ों लोगों ने उठाया लाभ

पारस एचईसी हॉस्पिटल, रांची के डॉ. रमेश दास और डॉ. संजय कुमार ने सीएमई पर की चर्चा

प्रात : किरण संवाददाता

दरभंगा। पारस ग्लोबल हॉस्पिटल, दरभंगा में रविवार को मुफ्त जांच एवं परामर्श शिविर का आयोजन किया गया। इसमें पारस एचएमआरआई हॉस्पिटल पटना और पारस हॉस्पिटल रांची के वरिष्ठ विशेषज्ञ डॉ. संजय कुमार (मेडिकल डायरेक्टर एंव वाइस चेयरमैन, न्यूरो सर्जरी) और वरिष्ठ सर्जन डॉ. (मेजर) रमेश दास (निदेशक, जेनेरल एंव लैप्रोस्कोपिक सर्जरी) ने मरीजों को मुफ्त परामर्श दिया। इस शिविर में सैकड़ों मरीज पहुंचे और पारस हॉस्पिटल की इस पहल का लाभ उठाया। मरीजों ने इस शिविर में कैंसर, हृदय रोग एंव कार्डियक सर्जरी, नस एंव मस्तिष्क रोग और जनरल एवं लैप्रोस्कोपिक सर्जरी से जुड़े रोगों के अलावा अन्य रोगों के मरीजों ने मुफ्त परामर्श लिया। इसके साथ ही पारस ग्लोबल हॉस्पिटल में मेडिकल ओंकोलॉजी और कार्डियो थोरेसिक

वैस्कुलर सर्जरी (सीटीवीएस) ओपीडी की शुरूआत हो गयी। रविवार को दरभंगा के अल्लपट्टी में वीआईपी रोड स्थित हॉस्पिटल के परिसर आयोजित संवाददाता सम्मेलन में इन सभी बातों की जानकारी दी गयी। संवाददाता सम्मेलन में पारस एचईसी हॉस्पिटल, रांची के जेनेरल व लैप्रोस्कोपी सर्जरी विभाग के निदेशक डॉ. (मेजर) रमेश दास ने बताया कि यहां मेडिकल ओंकोलॉजी और सीटीवीएस ओपीडी की शुरूआत होने से कैंसर के अध्ययन, उसकी पहचान और उपचार में सहूलियत मिलेगी। इससे स्थानीय लोगों के कैंसर की देखभाल उसके रोकथाम और उपचार में मदद मिलेगी। साथ ही दिल का दौरा पड़ने, स्ट्रोक या रक्त का थक्का बनने वाले गंभीर मरीजों का इलाज संभव हो पाएगा। मौके पर पारस हेल्थ केयर (ईस्ट) के रीजनल डायरेक्टर डॉ. सुहास आराध्ये ने बताया कि हम चाहते हैं कि उत्तर बिहार के लोगों के लिए पारस अस्पताल में हर एक सुविधा मुहैया कराएं। इसी कड़ी में ये सुविधाएं यहां शुरू की गयी हैं। इस सीएमई से पहले पारस हॉस्पिटल रांची के वरिष्ठ मस्तिष्क रोग विशेषज्ञ डॉ. संजय कुमार (मेडिकल डायरेक्टर एवं वाइस चेयरमैन, न्यूरो सर्जरी) ने स्टीरियोटैक्टिक न्यूरो सर्जरी पर संक्षिप्त चर्चा की। अधिक जानकारी के लिए हेल्पलाइन नंबर 9472488454, 8929483784 पर कॉल कर सकते हैं। संवाददाता सम्मेलन में डॉ. अरविन्द गोयल (डायरेक्टर सीटीवीएस), डॉ.भुवनजी झा (सिनियर कंसल्टेंट न्यूरो सर्जरी) और डॉ. राहुल कुमार चौधरी (चीफ कंसल्टेंट सर्जिकल अंकोलॉजी) ने भी इस संबंध में कई जानकारियां दीं।

संक्षिप्त खबरें

पांच मार्च को सभी प्रखंडों में होगा बुनियादी साक्षरता परीक्षा

गोपालगंज। आगामी पांच मार्च को सभी प्रखंडों में बुनियादी साक्षरता परीक्षा का आयोजन किया गया है। परीक्षा का आयोजन संयुक्त सचिव सह निदेशक जन शिक्षा बिहार के निर्देश पर किया गया है। इसको लेकर डीपीओ साक्षरता के द्वारा सभी प्रखंडों के बीइओ व भोरे व बिजयीपुर के केआरपी को निर्देश देते हुए कहा गया है कि प्रखंड स्तर पर शिक्षा सेवको की बैठक सोमवार यानि 27 फरवरी को आयोजित कर शिक्षा सेवको को निर्धारित संख्या में प्रश्न पत्र, उत्तरपुस्तिका एवं सामेकन प्रपत्र उपलब्ध कराये जाने का निर्देश दिया गया है, ताकि प्रखंड स्तर पर बुनियादी साक्षरता परीक्षा के आयोजन को लेकर ससमय तैयारी किया जा सकेऔर परीक्षा का सफल आयोजन कराया जा सके।

खेत में लगी फसल को बर्बाद करने का विरोध करने पर दो भाइयों पर फरसा से हमला

गोपालगंज। नगर थाना क्षेत्र के इन्दरवा रफी गांव में खेत में लगी फसल बर्बाद करने से मना करने पर रविवार पड़ोस के कुछ लोगों ने दो भाइयों पर फरसा से हमला कर दिया। इस हमले में जख्मी दोनों भाइयों को इलाज के लिए सदर अस्पताल में भर्ती कराया गया। यहां एक भाई की हालत गंभीर देखकर चिकित्सकों ने गोरखपुर रेफर कर दिया। जानकारी के अनुसार, इन्द्रवा रफी गांव निवासी मोजबिल हुसैन के खेत में लगी गेहूं की फसल को कुछ लोग बर्बाद कर रहे थे। इसे देखकर मोजबिल हुसैन व उनके भाई नूर बसर अली मौके पर पहुंच कर खेत में लगी फसल को बर्बाद कर रहे लोगों का विरोध करना शुरू कर दिए। इसके बाद पड़ोस के लोगों ने फरसा से हमला कर दोनों भाइयों को गंभीर रूप से जख्मी कर दिया। आसपास के लोगों के सहयोग से दोनों घायलों को सदर अस्पताल में भर्ती कराया गया। यहां जख्मी मोजबिल हुसैन की हालत गंभीर देखकर चिकित्सकों ने बेहतर इलाज के लिए गोरखपुर रेफर कर दिया। मारपीट की घटना के बाद पुलिस घायलों का बयान दर्ज कर कार्रवाई करने में जुट गई है।

पुलिस ने 52 लोगों को किया गिरफ्तार

गोपालगंज। जिले के विभिन्न थानों की पुलिस ने अभियान चलाकर शनिवार को दिन व रात में वाहन चालकों से 10 हजार पांच सौ की राशि जुर्माना के रूप में वसूलने के साथ ही विभिन्न मामलों में 52 आरोपितों को गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार किए गए सभी आरोपितों से पूछताछ करने के बाद पुलिस ने उन्हें न्यायालय में भेज दिया। पुलिस की लगातार कार्रवाई के कारण शराब तस्करों व शराब पीने वाले लोगों में हड़कंप मचा हुआ है। इसके साथ ही पुलिस की टीम शनिवार की रात में बैंक व एटीएम के साथ बाजार में आने जाने वाले लोगों की जांच करती दिखी।
जानकारी के अनुसार, एसपी स्वर्ण प्रभात के निर्देश पर जिले के कटेया, भोरे, नगर थाना, विजयीपुर, बैकुंठपुर, कुचायकोट, गोपालपुर, हथुआ, मांझागढ़, बरौली, सिधवलिया, जादोपुर, महम्मदपुर, विशंभरपुर सहित अन्य थानों की पुलिस ने अभियान चलाकर 32 लोगों को शराब के मामले में गिरफ्तार करते हुए करीब 244 लीटर शराब को जब्त कर लिया। इसके साथ ही पुलिस ने चार बाइक को भी जब्त किया है। पुलिस ने शनिवार की शाम को पूरे जिले में कुल 52 लोगों को गिरफ्तार कर उन्हें रविवार को न्यायालय में प्रस्तुत किया। इसके साथ ही पुलिस की टीम ने वाहन जांच अभियान चलाकर चालकों के खिलाफ भी कार्रवाई की।

दो पक्षों के बीच हुई मारपीट, दिव्यांग महिला सहित तीन जख्मी

गोपालगंज। जिले के मांझागढ़ थाना क्षेत्र के मुजवना गांव में भूमि विवाद को लेकर दो पक्षों के बीच रविवार को जमकर मारपीट हुई। इस दौरान पड़ोस के लोगों ने दिव्यांग महिला सहित तीन लोगों को मारपीट कर घायल कर दिया। सभी घायलों को स्थानीय अस्पताल में भर्ती कराया गया। यहां उनकी हालत गंभीर देखकर चिकित्सकों ने सदर अस्पताल रेफर कर दिया। जानकारी के अनुसार, मुजवना गांव निवासी शंभूनाथ सिंह व उनके पड़ोस के लोगों के बीच भूमि विवाद को लेकर पूर्व से विवाद चल रहा है। इस दौरान विवादित जमीन पर पड़ोस के लोग जबरन कब्जा करने के नीयत से निर्माण कार्य करा रहे थे। इस दौरान शंभूनाथ सिंह, उनकी पत्नी दिव्यांग पूनम देवी व पुत्री रागनी देवी ने मौके पर पहुंच कर निर्माण कार्य का विरोध करना शुरू कर दिया। पड़ोस के लोगों ने लाठी-डंडे से हमला कर तीनों को गंभीर रूप से जख्मी हो गए। मारपीट की घटना के बाद सभी घायलों को इलाज के लिए सदर अस्पताल में भर्ती कराया गया। यहां पुलिस पहुंच कर सभी घायलों का बयान दर्ज करने के बाद कार्रवाई करने में जुट गई है।

दावेदारी में जुटे सारण शिक्षक निर्वाचन के संभावित प्रत्याशी, अपने गुट के शिक्षकों को सौंप रहे दायित्व

फाइनल मतदाता सूची के प्रकाशन के बाद निर्वाचन आयोग के हरी झंडी मिलने का इंतजार

गोपालगंज प्रात : किरण ब्यूरो

सारण शिक्षक निर्वाचन क्षेत्र के फाइनल मतदाता सूची के प्रकाशन के बाद चुनाव लड़ने वाले संभावित प्रत्याशी अपनी दावेदारी में जुट गये है। अपने निर्वाचन क्षेत्र के अलग- अलग जिलों में पहुंचकर शिक्षकों से संपर्क बनाने के साथ ही अपने गुट के सबसे विश्वासपात्र शिक्षक वोटर का चयन करते है, साथ ही उन्हे अपने चुनाव से संबंधित दायित्व भी सौंप रहे है। जिनके जिम्मे स्थानीय शिक्षक वोटरों को अपने पक्ष में गोलबंद करने से लेकर, शहर के चैक-चैराहों पर चुनावी चर्चा करने अपनी बातों को बेहतर ढंग से रखने और प्रत्याशी का प्रतिनिधित्व कर शिक्षकों को अपने प्रत्याशी के पक्ष में प्रभावित करने तक की जिम्मेदारी दी गयी है। वही अन्य प्रत्याशियों के चुनाव संबंधित गतिविधियों पर नजर रखने के साथ-साथ ससमय सूचना का आदान- प्रदान का दायित्व सौंपा गया है। शिक्षक निर्वाचन के संभावित प्रत्याशियों पर नजर डाले तो अब तक सबसे ज्यादा प्रत्याशी सारण जिले से दावेदारी कर रहे है। वही सिवान व पूर्वी और पश्चिमी चंपारण से भी शिक्षक निर्वाचन के दावेदार है। अब तक गोपालगंज जिला से किसी प्रत्याशी के दावेदारी नहीं दिख रही है। ऐसे में सभी दावेदारों की नजर गोपालगंज जिला के शिक्षक वोटरों पर टिकी हुई है। इन सभी तैयारियों के बीच संभावित प्रत्याशियों को चुनाव आयोग से हरी झंडी मिलने का इंतजार है।

नयी मतदाता सूची से होगा चुनाव: इस वर्ष होने वाला सारण शिक्षक निर्वाचन 2023 का चुनाव इसी मतदाता सूची से होगा। जिसका प्रकाशन गत 20 फरवरी को हुआ है। इस मतदाता सूची में जिन शिक्षक मतदाताओं का नाम दर्ज होगा, उन्हे ही मतदान करने का अवसर मिलेगा। पूर्व के मतदाता सूची के मतदाताओं का नाम इस वर्ष के मतदाता सूची में नही जोडा गया है तो उन्हे मतदान का मौका नही मिलेगा।

एक नजर में गोपालगंज में प्रखंडवार मतदाताओं की संख्या: बैकुंठपुर-65, सिधवलिया-73, बरौली-138, मांझा-86, गोपालगंज-177, थावे-56, कुचायकोट-220, उचकागांव- 96, फुलवरिया- 77, हथुआ-157, पंचदेवरी-26, कटेया-85, भोरे-114, विजयीपुर-57 सहित कुल 1427 शिक्षक मतदाता है. जो सारण शिक्षक निर्वाचन के चुनाव में अपने पंसद के शिक्षक प्रतिनिधि का चुनाव करेंगे। इन मतदाताओं में 239 महिला मतदाता भी शामिल है।

प्रत्याशियों ने शुरू किया क्षेत्र दौरा: सारण शिक्षक निर्वाचन क्षेत्र के संभावित प्रत्याशियों का चुनावी दौरा शुरू हो गया है। चुनाव की संभावना मार्च व अप्रैल 23 में होने की उम्मीद लगायी जा रही है। इसी उम्मीद के साथ संभावित प्रत्याशियों ने चुनावी दौरा शुरू कर दिया है। बतादे कि सारण शिक्षक निर्वाचन क्षेत्र का विधान पार्षद पद स्व केदार नाथ पाण्डेय के निधन के बाद पद रिक्त हुआ है। जिस पद पर उपचुनाव कराया जाना है। इस चुनाव में स्व पाण्डेय के पुत्र आनंद पुष्कर के साथ-साथ कई युवा प्रत्याशी और महिला प्रत्याशी भी दावेदारी करने के लिए क्षेत्र भ्रमण शुरू कर दिए है।

ट्रक की चपेट में आने से अज्ञात साइकिल सवार अधेड़ की मौत

कुचायकोट थाना क्षेत्र के भठवा मोड़ के समीप की घटना

गोपालगंज प्रात : किरण ब्यूरो

जिले के कुचायकोट थाना क्षेत्र के भठवा मोड़ के समीप रविवार को एनएच-27 पर एक अनियंत्रित ट्रक ने साइकिल सवार अधेड़ को कुचल दिया। इस हादसे में अधेड़ की मौके पर ही मौत हो गई। सूचना मिलने के बाद पुलिस ने मौके पर पहुंच कर शव को अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल में भेज दिया। जानकारी के अनुसर, भठवा मोड़ के समीप एनएच-27 पर बने अवैध कट के रास्ते एक साइकिल सवार अधेड़ जा रहे थे। इस दौरान गोपालगंज से यूपी की तरफ जा रहे एक ट्रक ने अधेड़ को कुचल दिया। इस हादसे में अधेड़ की मौके पर ही मौत हो गई। अधेड़ की मौत के बाद ट्रक चालक ट्रक लेकर भागने लगा। इसकी सूचना मिलने के बाद पुलिस ने ट्रक का पीछा कर उसे बलथरी चेकपोस्ट से समीप रोकने का प्रयास किया। इस दौरान ट्रक चालक ट्रक से कूदकर फरार हो गया। इसके बाद पुलिस ने ट्रक को जब्त कर लिया। कुचायकोट थानाध्यक्ष किरण शंकर ने बताया कि अज्ञात साइकिल सवार अधेड़ फुट पैंट व शार्ट पहने हुए हैं। उनकी पहचान को लेकर प्रयास किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि अधेड़ के पास से एक लन्च बाक्स बरामद किया गया है। इसमें अधेड़ खाना रखकर कहीं लेकर जा रहे थे। ऐसे में पुलिस अंदाजा लगा रही है कि वह मजदूर हो सकते हैं।

शिक्षक संतोष महतो के आलीशान बहुमंजिला इमारतों पर पुलिस ने चिपकाया इश्तेहार

6 दिसम्बर को एसडीएम की छापेमारी में निजी आवास में अंचल कार्यालय चलाने का हुआ था खुलासा

गोपालगंज प्रात : किरण संवाददाता

जिले के मांझागढ़ अंचल कार्यालय में दलाली करने वाले शिक्षक सन्तोष महतो एफआईआर के बाद से ही फरार है। पुलिस उसके कई ठिकानों पर दबिश दे रही है। लेकिन वह लगातार चकमा दे रहा है। इस बीच मांझागढ़ पुलिस ने गाजे बाजे के साथ उसके तीन बहुमंजिला आवासों पर इश्तेहार चिपकाया है। रविवार को स्थानीय पुलिस टीम में केस के अनुसंधान कर्ता श्यामनारायण प्रसाद, एसआई रविकांत दुबे दल बल व गाजे बाजे के साथ उसके मांझा बाजार स्थित तीन आवासों पर पहुंचे व इश्तेहार चिपकाया। चिपकाए गए इश्तेहार में उसे एक महीने के अंदर कोर्ट में हाजिर होने की चेतावनी दी गई है। हाजिर नहीं होने की स्थिति में पुलिस कोर्ट में उसके विरुद्ध कुर्की जब्ती के लिए आवेदन करेगी। पुलिस सूत्रों के अनुसार वह एफआईआर के बाद से ही भूमिगत हो गया है। वह मोबाईल का भी उपयोग नहीं कर रहा है। हालांकि लोगों का कहना है कि सुपरविजन पूर्ण होने से पहले वह बाजार में शान से घूम रहा था। इस दौरान सुपरविजन में वरीय अधिकारियों ने केस को सत्य करार दिया तो वह पुनः फरार हो गया। इस संबध में प्रभारी थानाध्यक्ष रविकांत दुबे ने बताया कि न्यायालय के आदेश पर सन्तोष के तीन आवास पर इश्तेहार चिपकाया गया है । एक माह के अंदर वह हाजिर नहीं होता है तो उसके सभी आवासों की कुर्की की कार्रवाई की जाएगी।

फुलवरिया में शराब के साथ दो तस्कर सहित तीन गिरफ्तार

प्रात : किरण संवाददाता

गोपालगंज। जिले के फुलवरिया पुलिस ने एक गुप्त सूचना के आधार पर शनिवार की देर शाम क्षेत्र के सेलार कला-तूरकहाँ मुख्य पथ पर छापेमारी कर एक बाइक से 108 पीस बंटी बबली नामक देशी शराब के साथ दो शराब तस्करों को गिरफ्तार कर लिया। इसके साथ ही पुलिस बथुआ बाजार में शराब के नशे में उत्पात मचा रहा एक व्यक्ति को गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार व्यक्ति कि स्वास्थ्य जांच के लिए स्थानीय मरछिया देवी रेफरल अस्पताल फुलवरिया में दाखिला कराया। जहां चिकित्सकों ने प्राथमिक उपचार के बाद उक्त व्यक्ति को शराब पीने की पुष्टि किया। इसकी जानकारी देते हुए थानाध्यक्ष अब्दुल मजीद ने बताया कि थाने में पदस्थापित एसआई महेश मंडल ने गुप्त सूचना के आधार पर कार्रवाई की है। गिरफ्तार शराब तस्करों में भोरे थाना क्षेत्र के बिरोना गांव के निवासी विश्राम राम का पुत्र अंगद कुमार राम तथा लल्लन चैहान का पुत्र सोनू कुमार चैहान बताया जाते है। जबकि शराब के नशे में गिरफ्तार व्यक्ति बथुआ बाजार निवासी प्रमोद प्रसाद का पुत्र राजकुमार प्रसाद के रूप में पहचान की गई है। पुलिस ने उक्त गिरफ्तार व्यक्तियों के विरुद्ध थाने में प्राथमिकी दर्ज करने के बाद रविवार को पुलिस अभिरक्षा के बीच न्यायिक हिरासत गोपालगंज भेज दिया है।

1731 पुलिसकर्मियों ने करीब 15 हजार लोगों से मिलकर की बातचीत

हैंडबिल का वितरण कर पुलिस व पब्लिक के बीच बेहतर संबंध पर बल

गोपालगंज प्रात : किरण ब्यूरो

बिहार पुलिस सप्ताह के तहत जनसहभागिता बाइक रैली का आयोजन किया गया। इस दौरान पूरे जिले में एसपी स्वर्ण प्रभात के निर्देश पर पुलिस ने 1385 गांवों में पहुंच कर करीब 15 हजार लोगों से मुलाकात की। इस दौरान पुलिस ने जनप्रतिनिधि व आम लोगों से बेहतर संबंध बनाने की दिशा में बल दिया। जानकारी के अनुसार, बिहार पुलिस सप्ताह कार्यक्रम का आयोजन 20 फरवरी से 26 फरवरी तक किया गया था। इस दौरान पुलिस मुख्यालय के निर्देश पर एसपी स्वर्ण प्रभात ने सभी थानों की पुलिस ने बिहार पुलिस सप्ताह के तहत बाइक रैली निकाल कर जिले के विभिन्न गांवों के लोगों से मुलाकात की। साथ ही लोगों को साइबर अपराध सहित अन्य बिंदुओं पर विस्तार से जानकारी दी। पुलिस अधीक्षक स्वर्ण प्रभात ने बताया कि एक सप्ताह के अंदर जिले के नगर थाना, कुचायकोट, जादोपुर, विशंभरपुर, गोपालपुर, कटेया, भोरे, विजयीपुर, थावे, उचकागांव, हथुआ, मीरगंज, फुलवरिया, मांझागढ़, महिला थाना, बरौली, सिधवलिया, महम्मदपुर व बैकुंठपुर थाने सहित अन्य सभी थानों के 1731 पुलिसकर्मियों ने जिले के 1385 गांवों में पहुंच कर लोगों से मुलाकात की। इस दौरान लोगों को शराबबंदी कानून, साइबर अपराध सहित अन्य बिंदुओं पर विस्तार से जानकारी दी गई। उन्होंने बताया कि लोगों से मिलकर सभी पुलिस पदाधिकारी व जवानों ने हैंडबिल का वितरण करने के साथ ही पुलिस व जनप्रतिनिधियों के साथ आम लोगों के बीच बेहतर संबंध स्थापित करने की दिशा में कार्य करने पर बल दिया गया। इस दौरान लोगों को साइबर अपराधियों से बचने का सलाह भी दी गई। साथ ही पुलिस के कर्तव्य के बारे में भी लोगों को बताया गया। उन्होंने कहा कि सदर एसडीपीओ संजीव कुमार, हथुआ एसडीपीओ नरेश कुमार, मुख्यालय डीएसपी ज्योति कुमारी सहित अन्य वरीय पुलिस पदाधिकारी की भूमिका पूरे कार्यक्रम में सराहनीय रही।

उचकागांव थाने में पुलिस सप्ताह कार्यक्रम का हुआ लाइव प्रसारण

प्रात : किरण संवाददाता

गोपालगंज। जिले के उचकागांव थाना परिसर में रविवार की संध्या पुलिस सप्ताह कार्यक्रम के अंतर्गत पटना में पुलिस मुख्यालय द्वारा आयोजित जनजन की ओर बढ़ते कदम कार्यक्रम का लाइव प्रसारण किया गया। जिसमे उचकागांव थाने की पुलिसकर्मी, क्षेत्र के जनप्रतिनिधि, कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय उचकागांव की छात्राएं एवं आमजन शामिल हुए और थाना परिसर में लगे एलसीडी स्क्रीन टीवी पर पटना से प्रसारित हो रहे कार्यक्रम को देखा। कार्यक्रम के पश्चात थानाध्यक्ष सुभाष कुमार सिंह ने सभी जनप्रतिनिधियों एवं आमजन को पुलिस से सीधे जुडकर क्षेत्र में हो रहे अपराध व शराब तस्करी पर अंकुश लगाने के लिए पुलिस का सहयोग करने की अपील की। उन्होंने कहा कि आमजन अब विभिन्न सोशल मीडिया के माध्यम से भी पुलिस से जुड सकती है और क्षेत्र की समस्यायों से संबंधित सूचनाएं उपलब्ध करा सकते हैं। पुलिस त्वरित करेगी। मौके पर पुलिस पदाधिकारी मुकेश कुमार सिंह, केके सिंह, मंटू कुमार रजक, अमित कुमार सिंह, मुखिया मोहम्मद नजीर आलम, प्रमोद गुप्ता, प्रमोद सिंह, अमरेंद्र कुमार सिंह, मोहम्मद असलम, पूर्व जिला पार्षद शराफत हुसैन आदि उपस्थित थे।

बिहार पुलिस सप्ताह समारोह के दौरान लामीचैर पहुंचे एसपी

गोपालगंज प्रात : किरण संवाददाता

बिहार पुलिस सप्ताह के तहत आयोजित जनसहभागिता कार्यक्रम के तहत रविवार को गोपालगंज के एसपी लामीचैर पंचायत भवन पर पहुंच कर आम जनों से संवाद किया। इस दौरान एसपी बॉर्डर इलाके में जाकर पुलिस की गश्त आदि की जांच भी की। इस दौरान उन्होंने मौजूद पुलिस कर्मियों को पीपुल्स फ्रेंडली बन कर काम करने की बात कही। भोरे प्रखंड की लामीचैर पंचायत भवन पर आयोजित जनसंवाद कार्यक्रम में शामिल होने आये एसपी स्वर्ण प्रभात का थानाध्यक्ष सुरेंद्र कुमार यादव व मुखिया मोहन कुमार सिंह ने पुष्प गुच्छ देकर स्वागत किया। कार्यक्रम की शुरूआत हमारी बात पुलिस के साथ स्लोगन के साथ किया गया। इस दौरान एसपी स्वर्ण प्रभात ने आम लोगों को जहां पुलिस के प्रति भरोसा दिलाया। वहीं आम लोगों का फीडबैक भी लिया। साथ ही डायल 112.साइबर क्राइम, शराब से संबंधित सूचना को लेकर लोगों को नंबर उपलब्ध कराए गए। बता दें कि बिहार पुलिस ने इस समारोह के क्रम छह कार्यक्रम आयोजित किया था। जिससे पुलिस और आम जनता के बीच संबंध में सुधार हो। राज्य मुख्यालय से मिले निर्देश के अनुसार इस कार्यक्रम की शुरूआत सोमवार को स्वच्छता अभियान का उद्घाटन कर किया गया था। इस कार्यक्रम के बाद एसपी ने जगतौली ओपी, चकिया कोठी बॉर्डर, मिश्रौली, भिंगारी बॉर्डर आदि पर जाकर वहां की स्थिति का अवलोकन किया। एसपी स्वर्ण प्रभात ने बताया कि पूरे जिले में जनसहभागिता बाइक रैली में कुल 1731 कर्मियों द्वारा 3612 किमी बाइक चला कर 1385 गांवों का भ्रमण किया गया। इस दौरान 14976 लोगों से संवाद किया।

अगले चार दिनों में 33 डिग्री होगा तापमान, गेहूं की फसल को हो सकता है नुकसान

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर।.ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 25 फरवरी से 01 मार्च, तक के मौसम पूवार्नुमान के अनुसार उत्तर बिहार के जिलों में आसमान प्राय साफ तथा मौसम के शुष्क रहने का अनुमान है। इस अवधि में अधिकतम तापमान 32 से 33 डिग्री सेल्सियस तथा न्यूनतम तापमान 14 से 16 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने की सम्भावना है। अचानक तापमान में वृद्धि होने एवं पछिया हवा चलने से गेहूं की फसल को नुक्सान हो सकता है। पूवार्नुमानित अवधि में औसतन 5-6 कि०मी० प्रति घंटा की रफ्तार से मुख्य रूप से पछिया हवा चलने की सम्भावना है। हलाकि 27-28 फरवरी को समस्तीपुर वैशाली, मुजफ्फरपुर, दरभंगा, मधुबनी, सीतामढी तथा शिवहर जिला में पूरवा हवा भी चल सकती है। सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 45 से 55 प्रतिशत रहने की संभावना हैं।पूवार्नुमान में बताया गया है कि कुछ दिनों से तापमान में वृद्धि होने के वजह से अधिकतम तथा न्यूनतम तापमान सामान्य तापमान से अधिक बना हुआ है जिसके कारण गेहूं के फसल को नुकसान होने की सम्भावना है।किसानों को सलाह दी गई है कि वे अपने खेतों में सिचाई कर अपेक्षित नमी बनाये रखें जिससे गेहूं की फसल को अधिक तापमान से बचाया जा सके तथा उत्पादन में कमी ना आने पाए। जो गेहू अभी दुग्धावस्था में है उसमें उच्च तापमान के कुप्रभाव को कम करने के लिए पोटेशियम 10-2ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करने की सलाह दी गई है।

फ्रेंड सर्किल ग्रुप की बैठक में विभिन्न मुद्दों पर हुई चर्चा

गोपालगंज। जिले के भोरे प्रखंड क्षेत्र के कल्याणपुर पंचायत के जिउत छापर गांव में रविवार को फ्रेंड सर्किल ग्रुप की मासिक बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता सेवानिवृत्त अंचल अधिकारी रवींद्र मिश्र ने किया। सर्वप्रथम बैठक की शुरूआत में बारी-बारी से उपस्थित सदस्यों ने अपना-अपना स्व परिचय दिया। जिसके बाद बैठक का संचालन कर रहे डॉक्टर जैनेंद्र कुमार शुक्ल, प्रभात की ओर से फ्रेंड सर्किल ग्रुप के प्रस्तावना आदि के बारे में सदस्यों को बताया गया। आयोजक की भूमिका में जिउत छापर निवासी नारद तिवारी व विवेक तिवारी ने सभी सदस्यों का स्वागत करते हुए बैठक के अहम मुद्दों पर चर्चा किए। वक्ता के रूप में बोलते हुए शिक्षक विश्वरंजन स्वरूप पाठक ने बैठक के उद्देश्यों पर एक नई दिशा देने को लेकर चर्चा की। ब्रजेंद्र पाठक ने समूह के माध्यम से दिन हीन गरीबों की सेवा व सामाजिक कार्यों में बढ़-चढ़कर भागीदारी लेने का प्रस्ताव रखा। अरविंद नाथ तिवारी ने भी इस प्रस्ताव का समर्थन किया। वहीं वेद प्रकाश तिवारी ने बैठक में सभी सदस्यों के बीच आपसी समन्वय के साथ-साथ सकारात्मक विचारों को प्रस्तुत करने पर बल दिया। इस दौरान बैठक में चर्चा किए गए सभी प्रस्तावों को सदस्यों ने सर्वसम्मति से पारित किया। आगामी बैठक समूह के सदस्य उत्तर प्रदेश के देवरिया जिले के भिंगारी बाजार निवासी व्यास प्रसाद यादव के निजी विद्यालय पर 19 मार्च 2023 को आयोजित करने का निर्णय लिया गया। अंत में आयोजक की ओर से सभी सदस्यों को अंग वस्त्र से सम्मानित करते हुए गीता की एक एक प्रति व लेखनी भेंट की गई। सदस्यों ने आयोजक का आभार जताते हुए धन्यवाद दिया। मौके पर धनंजय चैबे, निशांत कुमार, जनार्दन चैबे, हरेंद्र तिवारी, विवेक तिवारी, जितेंद्र नाथ दीक्षित, भरत मिश्र आदि उपस्थित रहे।

उचकागांव के 13 पुलिस कर्मियों ने रक्तदान कर दिया संदेश

गोपालगंज प्रात : किरण संवाददाता

पुलिस दिवस के सातवें दिन थानाध्यक्ष सुभाष कुमार सिंह के नेतृत्व में उचकागांव थाने के 13 पुलिसकर्मियों ने हथुआ अनुमंडलीय अस्पताल में पहुंचकर रक्तदान कर लोगों को रक्तदान करने के लिए प्रेरित किया। रक्तदान करने वालों में थाने के थानाध्यक्ष सहित पांच पुलिस पदाधिकारी और आठ चैकीदार शामिल हैं। थानाध्यक्ष सुभाष कुमार सिंह ने कहा कि देश में होने वाली सड़क दुर्घटनाओं में 80 प्रतिशत से अधिक लोग शरीर से खून गिरने के बाद अचानक शरीर में हुई खून की कमी होने के कारण उनकी मौत हो जाती है। ऐसे लोगों को यदि समय पर अस्पतालों से खून उपलब्ध हो जाए तो उन्हें बचाया जा सकता है। अस्पतालों में रक्तदान के माध्यम से पहले से उपलब्ध खून से ऐसे लोगों का त्वरित इलाज किया जा सकता है। रक्तदान करने के 24 घंटे के अंदर फिर उतना ही खून हमारे शरीर में उपलब्ध हो जाता है। इस दौरान उन्होंने लोगों को बढ़-चढ़कर रक्तदान करने के लिए जागरूक किया। रक्तदान करने वालों में एसआई कृष्ण कुमार सिंह, मंटू कुमार रजक, एएसआई निरंजन कुमार पाल, रामविलास पासवान, राजेश पासवान, बसंत कुमार मांझी, हरेराम यादव शामिल हैं।

कलयुग में श्रीराम नाम ही एक मात्र सहारा : पं विरेन्द्र तिवारी

गोपालगंज प्रात : किरण संवाददाता

जिले के पंचदेवरी प्रखंड के श्री राम जानकी मंदिर जमुनहां में आयोजित श्री सहस्र चंडी महायज्ञ के तीसरे दिन कथा व्यास पं विरेन्द्र तिवारी ने श्रीराम की महिमा का वर्णन करते हुए कहा कि कलयुग में श्रीराम का नाम ही एक मात्र सहारा है। श्री राम नाम का सुमिरन मात्र से भव सागर पार हो जाना है। भगवन राम की कथा प्रसाद के समान है। प्र का अर्थ प्रभु, सा का अर्थ साक्षात और द का अर्थ दर्शन है, अर्थात प्रसाद का आशय प्रभु का साक्षात दर्शन है। कथा का प्रसाद उसे ही मिलेगा जो कथा में आएगा। उन्होंने ने आदर्श गृहिणी के गुण बताते हुए कहा आदर्श गृहिणियां भोजन का पहले भगवान को भोग लगाती है, घर के सभी सदस्यों को भोजन कराने के बाद ही स्वयं भोजन करती है। भोजन ही नहीं नये वस्त्र और नये गहने भी उपयोग करने से पहले भगवान को अर्पण करनी चाहिए। भगवान को अर्पण करने से वस्तु प्रसाद बन जाता है। मौके पर समिति के अध्यक्ष उपेन्द्र मिश्र, मुखिया अशोक गुप्ता, मणि पाण्डेय, जयराम गुप्ता, राजन जायसवाल, गुरुजिता सिंह, रितेश पाण्डेय, विवेक तिवारी, सुरेन्द्र पाण्डेय, प्रदुम्न मिश्र, राजीव केशरवानी, नीरज जायसवाल, बडु जायसवाल, जितेंद्र सहित कथा सुनने के लिए पंडाल में पुरुषों के साथ ही सैकड़ों महिला भक्त भी मौजूद थे।

परसौनी खास टोला पिपराही से 18 बोतल देसी शराब बरामद, आरोपित फरार

गोपालगंज। जिले के उचकागांव थाना क्षेत्र के परसौनी खास टोला पिपराही गांव में एक आरोपित के घर के पीछे खेत से गैलन में रखें 18 बोतल देसी शराब बरामद किया गया। वैसे आरोपित मौके से भागने में सफल रहा। मौके से फरार आरोपित की पहचान थाना क्षेत्र के परसौनी खास टोला पिपराही गांव के फागू महतो के रूप में की गई है।

शराब के नशे में तीन गिरफ्तार

गोपालगंज। जिले के भोरे थाने की पुलिस ने थाना क्षेत्र के पाखोपाली के समीप हाहा पल पर कार्रवाई करते हुए शराब के नशे में तीन युवक को गिरफ्तार कर लिया। ब्रेथ एनालाइजर मशीन से जांच में शराब पीने की पुष्टि होने पर पुलिस ने तीनों को कोर्ट में पेश कर दिया। बताया जाता है कि थाना के एएसआई उमाशंकर सिंह यादव शनिवार की शाम यूपी की सीमा पर गश्ती कर रहे थे। इसी दौरान सूचना मिली कि यूपी से तीन युवक शराब पीकर हाहा पुल पर हंगामा कर रहे है।

तेल से भरा टैंकर पलटा, बाल्टी,तसला ,गैलन हाथ में थामें तेल भरने के लिए दौड़े लोग

बोचहा। ईस्ट वेस्ट कॉरिडोर सरफुद्दीनपुर फ्लाईओवर के समीप पेट्रोल डीजल से भरा टैंकर पलट गया । जैसे ही लोगों को इस घटना का पता चला तो लोग घर से बाल्टिया और बर्तन ले आए । और तेल भर भर कर ले गए। रविवार की सुबह करीब 6:00 बजे रोड किनारे खड़ी तेल टैंकर में मुजफ्फरपुर की ओर से आ रही तेज रफ्तार ट्रक ने टक्कर मार दी। घटना में टैंकर गड्ढे में पलट गया । मौके से टैंकर चालक और ट्रक चालक भाग निकले। इस घटना में एक अखबार विक्रेता गौरीकांत गंभीर रूप से घायल हो गया। उसे निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। लोगों को इस घटना के बारे में पता लगा तो वह तुरंत गैलन बंटी जिसे जो बर्तन मिला उसे लेकर लेकर मौके पर पहुंच गए और तेल भरकर ले जाने लगे। इस दौरान डीजल व पेट्रोल की महक से कईयों के सर घूमने लगे। एक व्यक्ति तो घटनास्थल पर ही बेहोश हो गया। जिसे परिजनों ने उठाकर घर ले गए। टैंकर पलटने से सड़क पर लंबा जाम लग गया घटना की सूचना मिलने के बाद एसआई रंजीत कुमार गुप्ता मौके पर पहुंच गए पुलिस ने मौके पर क्रेन को बुलवाया और टैंकर को सीधा करवाया तब जाकर रोड जाम खुलवाया।

संक्षिप्त खबरें

बंदियों के बीच प्ली बारगेनिंग को लेकर जागरूकता कैंप किया गया

आरा। उच्च न्यायालय पटना के निर्देश पर जिला विधिक सेवा प्राधिकार, भोजपुर के तत्वधान में अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश सह सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकार मिथिलेश कुमार के अध्यक्षता में मंडल कारा आरा में 7 वर्ष से कम सजा वाले सभी बंदियों के बीच प्ली बारगेनिंग को लेकर जागरूकता कैंप किया गया जिसमें सचिव मिथिलेश कुमार द्वारा प्ली बारगेनिंग से संबंधित बातों की जानकारी दी और बताया कि जिस व्यक्ति पर कम गंभीर अपराध का आरोप लगाया गया है, और अभियुक्त पहली बार अपराध किया है ऐसे में आरोपी अपनी गलती स्वीकार कर माननीय न्यायालय के समक्ष क्षमा याचना कर सकता है । इस अवसर पर मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी अजय कुमार के साथ आरा मंडल कारा के जेल अधीक्षक, जेलर, बड़ा बाबू इत्यादि उपस्थित थे।

नशे में धुत्त सात युवक को किया गिरफ्तार

नाथनगर (भागलपुर)। नाथनगर थाना पुलिस ने छापेमारी के दौरान नशे में धुत्त हो हल्ला हंगामा करते हुए सात युवक को सीटीएस चौक से गिरफ्तार किया है। सभी युवक को थाना लाने के साथ ब्रेथ एनालाइजर मशीन से जांच कर सात युवकों का शराब पीने की पुष्टि करने के साथ पुलिस ने उत्पाद अधिनियम का मामला दर्ज कर मेडिकल जांच के लिए सदर अस्पताल लेजाया गया। जहां पुलिस ने गिरफ्तार युवकों की पहचान नाथनगर मसकन बरारी के सरवन कुमार, नाथनगर के सावन कुमार, महाशय डोयहरी के प्रमोद, मधुसुदनपुर किशनपुर के विकास कुमार,भतोड़िया के विक्रम कुमार, मनोहरपुर के उत्तम सिंह व पुरानी सराय के बंटी कुमार के रूप में बतायी है। मामले को लेकर नाथनगर थाना प्रभारी थाना इंचार्ज महताब खान ने बताया कि सभी गिरफ्तार युवकों के विरुद्ध उत्पाद अधिनियम के तहत प्राथमिकी दर्ज कर न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है।

बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए मां आनंद संस्थान के द्वारा कराया ड्राइंग प्रतियोगिता

भागलपुर। जिले भर में मां आनंदी संस्थान के द्वारा बच्चों में सर्वांगीण विकास को लेकर ड्राइंग प्रतियोगिता का आयोजन कराया गया। आयोजित प्रतियोगिता में पहली कक्षा से लेकर बारहवीं कक्षा तक के बच्चे ने भागीदारी लीं। इस प्रतियोगिता में सभी बच्चों ने एक से बढ़कर एक ड्राइंग बनाकर अपनी प्रतिभा को प्रदर्शित किया। ड्राइंग प्रतियोगिता में लगभग डेढ़ सौ बच्चों ने अपनी भागीदारी दिखाई है। इसमें सभी क्लास के पहले दूसरे और तीसरे स्थान पाने वाले बच्चों को मोमेंटो देकर संस्था द्वारा सम्मानित किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत मा आनंदी संस्था के संस्थापक प्रिया सोनी के साथ-साथ आगंतुक अतिथियों ने दीप प्रज्वलित कर किया। इस मौके पर काफी संख्या में बच्चों के साथ उनके अभिभावक भी उपस्थित थे।

23 बिहार बटालियन एनसीसी द्वारा फैलेरिया रोग को लेकर चलाया गया जागरुकता अभियान

भागलपूर। 23 बिहार बटालियन एनसीसी कैडेट्स ने फाइलेरिया हाथीपॉव मुक्ती अभियान चलाया। यह कार्यक्रम का संचालन जिले के चार विद्यालयों और एक महाविद्यालय में यह कार्यक्रम आयोजित की गई है। मारवाडी पाठशाला, जिला स्कूल, सीएमएस स्कूल, कहलगांव बीएससी कॉलेज में यह कार्यक्रम आयोजित की गई है। सबौर के एनसीसी कॅडेट के अलावा स्कूल के दर्जनों बच्चे और सिविल स्टाफ भी कार्यक्रम में शामिल थे। इस दौरान टोटल 1112 बच्चों के बीच दवाइयां खिलाई गई, साथी साथी एनसीसी के कैडेट के द्वारा जागरूकता रैली भी निकाली गई।

गंगा सफाई अभियान के तहत संत निरंकारी चैरिटेबल फाउंडेशन ने बाबूपुर घाट पर चलाया सफाई अभियान

प्रातः किरण ब्यूरो। भागलपुर। स्वच्छ जल स्वस्थ कल के सूत्र पर संत निरंकारी मंडल व बाढ़ राहत सेवा तिलकामांझी ब्रांच द्वारा आजादी के 75वां अमृत महोत्सव के तत्वावधान में संत निरंकार चैरिटेबल फाउंडेशन के बैनर तले बाबूपुर घाट पर साफ-सफाई अभियान चलाया गया। इस कार्यक्रम का विधिवत उद्घाटन भागलपुर की मेयर डॉ. वसुंधरा लाल ने किया। इस मौके पर मुख्य अतिथि के रूप में नागरिक विकास समिति दक्षिणी क्षेत्र के अध्यक्ष कृष्णा साह, सत्यनारायण साह, नगर पंचायत सबौर अध्यक्ष दीपशिखा नंद परिणा के अलावे दर्जनों कार्यकर्ता व ग्रामीण गंगा की सफाई में अपना योगदान देते दिखे। कार्यक्रम के दौरान मेयर डॉ. वसुंधरा ने कहा गंगा सफाई अभियान में हम लोगों को बढ़-चढ़कर हिस्सा लेना चाहिए और हमें गंगा को स्वच्छ रखना चाहिए क्योंकि जल ही जीवन है स्वच्छ जल मिलेगा।

स्वतंत्रता सेनानी अजायब महतो की स्मृति सभा मनाई गई

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। नागरी प्रचारिणी आरा में हर साल की भांति इस साल भी जन संवाद मंच भोजपुर के तत्वाधान में बिहार लेनिन शहीद जगदेव प्रसाद कामरेड जगदीश मास्टर एवं स्वतंत्रता सेनानी अजायब महतो की स्मृति सभा मनाई गई जिसमे मंच की अध्यक्षता जगदीशपुर जिला परिषद सदस्य पूनम कुशवाहा मंच संचालन जिला अध्यक्ष पंकज कुशवाहा एवं रोहित कुशवाहा ने संयुक्त रूप से किया कार्यक्रम का मुख्य अतिथि जनसभा मंच बिहार के संरक्षक डॉक्टर आचार्य मुन्ना प्रसाद शिक्षाविद डॉक्टर कन्हैया सिंह और कार्यक्रम का उद्घाटन कर्ता जन संवाद मंच,भोजपुर संरक्षक जागा कुशवाहा उर्फ शिव शंकर प्रसाद ने दीप प्रज्वलित विधिवत कार्यक्रम का उद्घाटन किए।जन संवाद मंच,भोजपुर के सभी जिला अध्यक्ष एवं प्रखंड अध्यक्ष ने मिलकर सभी अतिथियों को अंग वस्त्र माला बुकलेट एवं सभी शहीदों की मोमेंटो देकर सम्मानित किया।कार्यक्रम के उद्घाटन करता जागा कुशवाहा ने महापुरुषों के चरणों में श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए सभा को संबोधित करते हुए बोले शहीद जगदेव प्रसाद शहीद कामरेड जगदीश मास्टर एवं स्वतंत्रता सेनानी अजायब महतो जाति नहीं विचारधारा थे उन्होंने कभी जाती की बात नहीं की वह गरीब शोषीत पीड़ित वंचितो के आवाज थे । उन लोगो ने सभी लोगो के हक के लडाई लडते लड़ते सहीद हो गए।

शहीद जगदेव प्रसाद ने कभी भी सत्ता और कुर्सी की परवाह नहीं की सत्ता में रहते हुए सामान की विचारधारा को हमेशा कुचलने का काम किया है जगदेव बाबू का नारा था 100 में 90 शोषित है 90 भाग हमारा है धन धरती और राज पाठ में 90 भाग हमारा है 10 का शासन 90 पर नहीं चलेगा नहीं चलेगा।सभी धर्म एवं सभी वर्गो में गरीब एवं शोषित हैं और सभी जाति में शोषक है आज स्मृति सभा में हम लोग संकल्प ले की महापुरुषों के विचार विचारों को जन जन तक पहुंचाएं हर जोर जुल्म की टक्कर में संघर्ष हमारा नारा है।जनसंवाद मंच ने संकल्प लिया इनकी विचारों को जन-जन तक पहुंचाना है मुख्य अतिथि शिक्षाविद डॉ कन्हैया सिंह ने कहा की शहीद जगदेव बाबू के सपनों को तभी पूरा किया जा सकता हैं जब हर घर,अतिपिक्षड़ा, पीक्षड़ा समाज, वंचित समाज तक शिक्षा को पहुंचाया जायेगा, उन्होंने गरीब और वंचित समाज के बच्चों को फ्री में पढ़ाने का वादा मंच से किया।मंच का संचालन करते हुए जिला अध्यक्ष पंकज कुशवाहा ने भोजपुर जिला के कोने कोने से आये साथियों को धन्यवाद देते हुए कहा कि अमर शहीद जगदेव प्रसाद कामरेड जगदीश मास्टर एवं स्वतंत्रता सेनानी अजायब महतो के शहादत को आज के युवा पीढ़ी व्यर्थ नहीं जाने देगी और जनसंवाद मंच उनके अधूरे सपनों को पूरा करेगा।सभा को संबोधित करते हुए जनसंवाद मंच संरक्षक बिहार आचार्य मुन्ना प्रसाद ने भोले की महापुरुषों के विचारों को जन-जन तक पहुंचाने की जरूरत है कामरेड जगदीश मास्टर स्वतंत्रता सेनानी अजायब महतो एवं बाबू जगदेव प्रसाद के विचारों को जब तक जन जन तक पहुंचाने की अपील की इन महापुरुषों के विचारों को अपनाकर समृद्ध समाज का निर्माण किया जा सकता है वक्ताओं में अजय पासवान, राजू मेहता,मुन्ना महतो पूर्व पार्षद,नितेश कुशवाहा,सुरेंद्र मुखिया,भूपेंद्र मुखिया,राजेश कुशवाहा,कुमुद पटेल,रीता सिंह,शिवकुमार शर्मा,धर्मपाल मौर्य,मनोज कुशवाहा,विनय कुशवाहा,ललन कुशवाहा,उमेश कुशवाहा, रामनाथ मास्टर,मनु राठौर,अभिमन्यु कुशवाहा,अनूप मौर्य,मनजीत कुशवाहा, भोला महतो,गायक योगेश मुरारी,कृष्ण कुमार,नेपाली मुखिया,बबलू गोंड, चंदन कुशवाहा,दिनेश ठाकुर,सुबोध केसरी,इत्यादि बहुत वक्ताओं ने श्रद्धा सुमन अर्पित किया।

आरा और बक्सर कलाकारों के बिच मैच का आयोजन

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। विधानसभा क्षेत्र के बलुआ (बेलघाट) में, सिंह क्रिकेट क्लब बलुआ के द्वारा आरा और बक्सर कलाकारों के बिच मैच का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में जन अधिकार पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष सांस्कृतिक सह पूर्व विधायक प्रत्याशी रघुपति यादव शामिल हुए और फीता काटकर मैच का शुभारंभ किया। साथ स्थानीय मुखिया फंटू सिंह जी भी अतिथि के रुप मे शामिल रहे। रघुपति यादव ने कहा कि सबसे पहले कमिटी के तमाम युवाओं के प्रति दिल से आभार व्यक्त करते हुए कहा कि आप सभी ने मुझे बुलाकर जो मान सम्मान दिया इसके लिए मैं हमेशा आजीवन आभारी रहूंगा। और आप सबको होली की बहुत-बहुत मुबारकबाद व शुभकामनाएं। रघुपति यादव ने कहा कि खेल एक दूसरे को प्रेम को जोड़ता है और इससे खिलाड़ियों में ऊर्जा का संचार होता है और ऐसे आयोजन होने चाहिए गांव स्तरों पर ताकि गांव गवाही से खिलाड़ी बड़े लेबलो तक जाएं और अपना नाम और अपने समाज गांव का जिला का रोशन करें सभी खिलाड़ियों के साथ हमारी शुभकामनाएं हैं युवा ही इस देश का भविष्य हैं और इस देश के जिम्मेवारी गांव समाज की जिम्मेवारी युवाओं पर ही निर्भर है युवा चाहते तो क्या नहीं हो सकता है ऐसे में मैं आग्रह करना चाहता हूं सभी खिलाड़ियों से और आयोजकों से कि आप लोग समाज को जोड़कर रखिए ताकि प्रेम की गंगा सबके दिल में बहती रहे। यह मैच आरा और बक्सर के बीच खेला गया बक्सर टीम ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 210 के टारगेट दिया था पीछा करते-करते भोजपुर टीम 165 रन से पराजित हो गई मैच 12,12 उभर का हुआ। मैन ऑफ द मैच बक्सर टीम के मुनि आनंद को दिया गया।आयोजन करता में नीरज सिंह , गौतम सिंह , एंकर मंतोष सिंह , अमित ,छोटू आर्यन जी,और इस मौके पर कई कला प्रेमियों बहुत बढ़िया गीतकार जख्मी जितेंद्र , अजीत हलचल , कृष्णनंदू यादव , सोनू ओझा , साथ रहे।

हर दिन कार्यक्रम के तहत सिर में समान्य रूप से चक्कर आने की समस्या पर हुआ चर्चा

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। वैद्य प्रोफेसर दिनेश्वर प्रसाद, राजकीय आयुर्वेदिक कॉलेज अस्पताल पटना, बेगूसराय , दरभंगा, बिहार के पूर्व प्राचार्य एवं पटना ,शेखपुरा ,के पाल मार्केट स्थित अमृत आयुर्वेद का निदेशक सहः मुख्य चिकित्सक हर घर, हर दिन कार्यक्रम के तहत शिरो भ्रम शी१ ३ङ्ग रोग के उपर जानकारी देने जा रहा हूं । अमृत आयुर्वेद (IGIMS) के बगल में 65 नंबर पिलर के सामने पाल मार्केट में है,

सिर में समान्य रूप से चक्कर आने की समस्या को आयुर्वेद में शिरोभ्रम कहा गया है इसे अमतौर पर Headeche , Vertigo , Mental Tension कहा जाता है, ये कइ एक बिमारियों के लक्षण के रूप में भी दिखाई देता हैं। और कभी कभी यह स्वतंत्र रोग के रूप में भी दिखाई देता हैं। निंद्रा की कमी, अत्यधिक तनाव, लम्बे समय से अत्यधिक कमजोरी, अत्यधिक शुक्र का छय होने के कारण,शरीर में पानी या खून की कमी,प्राण वायु की कमी,साइनस, माइग्रेन, लम्बे समय से अनावश्यक तनाव ,खुशी की कमी ,भय की स्थिति इत्यादि के कारण यह समान्य रूप से देखने को मिलता है। Brif ,ftumr (गांठ) या कैंसर के कारण भी यह रोग हो सकता हैं। अत्यधिक क्रोध एवं गम के कारण भी यह रोग हो सकता हैं। आचार्य चरक ने 80 प्रकार के वात वयाधियों में इसे ग्राहय किया है। पर आचार्य सुश्रूत ने वात के साथ साथ पित दोषों के साथ मानस रोग का एक प्रकार बताया है यह रोग महिलाओं में ज्यादा देखने को मिलता हैं।जिसका मुख्य कारण विलम्ब से खाना, ज्यादा देर तक भुखे रहना, बराबर रोते रहना,मीठा का कम सेवन करना, एवं खट्टा या तिखा, नमकीन का ज्यादा सेवन करना भी एक कारण माना गया हैं।कसरत,आसन प्राणायाम, मनोरंजन का अभाव, अत्यधिक रक्त स्श्राव को भी कारण माना गया हैं। ज्यादा खाये बीना अत्यधिक देर तक काम करना, विशेष रूप से एक ही पोजीशन में ज्यादा देर तक कम्प्यूटर, मोबाइल, लैपटॉप,पर काम करना, ज्यादा देर तक सोना या अनियमित रुप से सोने के कारण भी यह रोग हो सकता हैं। आंख , नाक,कान, गर्दन, एवं दिमाग के बिमारिया या कमजोरी के कारण भी यह रोग हो सकता हैं। कभी कभी अति व्यायाम, बार बार अधिक देर तक वेगविधारण (मल,मुत्र शुक्र को बलपूर्वक बहुत लम्बे समय से रोकने के कारण) रात्रि जागरण , अधिक मात्रा में तिक्त,कटु ,कषाय ,अम्ल ,लवण रस युक्त भोज्य पदार्थो का अति सेवन ,शीतल जलपान, शोक,भय को भी आयुर्वेद में कारण माना गया हैं।

इससे निजात के लिए कारणों का निवारण एवं प्रातः में ब्रम्हमूहूर्त में ही मिठा,दुध, जल,का उपयोग शुद्ध या औषध सिद्ध घृत का नियमित प्रयोग, शरीर एवं सीर में मालिश, विशेष रूप से तलवा पर मालिश,शिरोविरेचन,शिरोवसती,शिरोधारा, नेत्र तर्पण, नस्यकर्म एवं भिन्न भिन्न तरह का आश्वासन,रोगी के मन के लायक मनोरंजन इत्यादि का प्रयोग लाभदायक है। यहां यह ध्यान रहना चाहिए कि किसी रोग के कारण यह रोग हुआ है तो उस रोग के खास लक्षण से सम्बंधित डॉक्टरों के परामर्श उस खास रोग का इलाज कराया जाना चाहिए। विशेष जानकारी के लिए सम्पर्क कर सकते हैं :9773960287,9798924125

प्राथमिक कन्या विद्यालय कमलपुर कजरैली में मध्याह्न भोजन में फिर से निकला कीड़ा

छात्रों के साथ अभिभावकों ने प्रधानाध्यापक को बंदी बनाकर किया विद्यालय में हंगामा

प्रात : किरण संवाददाता

नाथनगर (भागलपुर)। राज्य सरकार द्वारा बच्चों के बेहतर शिक्षा व बेहतर विकास को लेकर कई तरह की लाभकारी योजना चला रही है। उन योजनाओं में एक योजना मध्यान भोजन जिले के पत्येक विद्यालय में बच्चों के बीच मिडडे योजना के रूप में संचालित है। वही इन योजनाओं की आड़ में विचौलियों के द्वारा गलत तरीके से आवंटन में गड़बड़ी करने का मामला सामने आता रहा है।

मामले को लेकर बताया जा रहा है कि नाथनगर प्रखंड स्थित प्राथमिक कन्या विद्यालय कमलपुर कजरैली में एमडीएम योजना के तहत खाने में कीड़ा मिलने के बाद आक्रोशित छात्र-छात्राओं ने खाना को फेंकने के साथ जमकर हंगामा किया। ज्ञात हो कि जिले के विद्यालय में पढ़ रहे बच्चों के स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ करने का मामला कोई नया नहीं रहा है। जिले के कई सरकारी स्कूलों में मध्याह्न भोजन में कीड़े मिलने का फिर एक नया मामला प्राथमिक कन्या विद्यालय कमलपुर कजरैली में सामने आया है। वही मामले को लेकर बच्चों के अभिभावकों के द्वारा बताया गया है कि अगर यू ही बच्चों के जीवन के साथ खिलवाड़ करने की दशा बनी रही और शिक्षा विभाग इसे गंभीरता से नहीं लेगा तो बच्चों के स्वास्थ्य से खिलवाड़ आगे भी होता रहेगा। मिड डे मील की गुणवत्ता में कमी आने को लेकर कई क्षेत्रों के स्कूल में भी अभिभावक आंदोलन करते दिखते हैं । वहीं मिड डे मील मामले को लेकर परिजनों ने जमकर हंगामा कर दिया। वही विद्यालय के बच्चों के मुताबिक वो कई दिनों से विद्यालय प्राध्यापक से शिकायत कर रहे थे। वही जब बच्चे ने प्रधानाध्यापक से बात कही तो उन्होंने इसे लंबा चावल वाला दाना कहकर बच्चों को खिला दिया जाता था। बताया जा रहा है कि पिछले चार दिनों से खाने में कीड़ा निकल रहा है। जब इसकी शिकायत प्रधानाध्यापक से किया गया तो उन्होंने इस पर कोई भी संज्ञान नहीं लिया। इतना ही नहीं जब बच्चों ने अपनी थाली में दाल में मरे पिल्लू को दिखाया तो प्रधानाध्यापक ने कहा यह चावल का लंबा दाना है और जबरन बच्चों को खिलाया गया । परिजनों ने स्कूल प्राध्यापक के विरुद्ध जमकर हंगामा कर दिया। इस दौरान परिजनों ने कहा कि यहां पर गुणवत्तापूर्ण खाना नहीं दिया जाता है । हम लोग शिकायत भी करते हैं बावजूद इस पर संज्ञान नहीं लिया जाता है। छोटे बच्चे की जान के साथ प्रधानाध्यापक खेल रहे हैं । अगर सैकड़ों बच्चों को एक साथ यह जहरीला खाना खाने से कुछ हो जाता है तो इसके जिम्मेदार कौन होंगे ।

इसको लेकर ग्रामीणों ने प्रधानाध्यापक के विरुद्ध हंगामा करने के साथ घंटों तक विद्यालय में ही बंदी बनाया लिया । वही प्रधानाध्यापक ने अपने बचाव में कहा- आगे से ध्यान रखूंगा साथ ही बोला की वरीय अधिकारी को बोलते हैं लेकिन दो चार दिन सही देता हैं फिर वहीं गंदा खाना भेज देता हैं, जबकि एमडीएम का खाना जिरोमाइल भागलपुर से बनकर आता है। विद्यालय के प्रधानाचार्य ने बताया कि आगे से इस पर ध्यान रखूंगा। हम लोग साफ सफाई पर ध्यान रखते हैं, लेकिन अचानक इस तरह की घटना मेरे समझ से भी परे है । बता दें कि कई विद्यालयों के बच्चे मिड डे मील के जहरीले खाने खाकर बीमार भी हो रहे हैं। कुछ दिन पहले नवगछिया में सैकड़ों बच्चे विद्यालय के मिड डे मील खाने से बीमार हो गए थे। फिर भी विद्यालय प्रशासन सचेत नहीं हुए है।

बिहार महंगाई वाला राज्य है और अब महंगाई को बिहार राज्य बर्दाश्त नहीं करेगी : मंत्री

प्रात : किरण ब्यूरो

भागलपुर। समाहरणालय के समीक्षा भवन में ग्रामीण विकास मंत्री श्रवण कुमार की अध्यक्षता में बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में ग्रामीण विकास विभाग से संबंधित योजनाओं की समीक्षा की गई। इस दौरान मुख्यमंत्री ग्रामीण आवास योजना, मनरेगा, लोहिया स्वच्छता अभियान, जीविका से संबंधित योजनाओं की समीक्षा जिला अधिकारी सुब्रत कुमार सेन समेत वरीय अधिकारियों के समक्ष मंत्री ने की। इस दौरान मंत्री ने बताया कि बहुत बेहतर तरीके से ग्रामीण विकास की योजनाओं को जमीनी स्तर पर उतारा जा रहा है, कुछ जगहों पर कार्य मे स्तिथिरता देखी गयी है, जिसे लेकर सभी योजनाओं को ससमय पूरा करने का अधिकारियों को निर्देश दिये गये है। वहीं उन्होंने केंद्र सरकार पर तंज कसते हुए नजर आए उन्होंने कहा कि बिहार महंगाई वाला राज्य है और अब महंगाई को बिहार राज्य बर्दाश्त करने वाला नहीं है, केंद्र सरकार बिहार के साथ सौतेला व्यवहार कर रही है। बिहार को विशेष राज्य का दर्जा भी नहीं मिल पा रहा है, बिहार की ओर से उठाई जा रही मांग को एक कलम से खारिज कर दिया जाता है। साथ ही उन्होंने कहा कि आगामी 2024 के चुनाव के लिए अमित शाह ने बिहार के चंपारण से रैली का शंखनाद किया है। मंच से उन्होंने कहा है कि नीतीश कुमार के लिए भाजपा का दरवाजा हमेशा के लिए बंद हो गया है। इस बयान का ग्रामीण विकास मंत्री ने पलटवार किया है। उन्होंने कहा कि उनको दरवाजा खोलने कौन कह रहा उनके दरवाजे पर कौन खड़े हैं, उसका नाम बताएं, भाजपा विकास का दरवाजा बंद करती है, केवल महंगाई का दरवाजा खुला रखा है। इसकी जनता उक्त चुनाव में जबरदस्त जबाब वोट के माध्यम से देने को तातप्यमानं है।

स्नान करने के दौरान गंगा नदी से मिली माँ दुर्गा अष्टधातु की प्रतिमा

प्रात : किरण संवाददाता

शाहकुंड (भागलपुर)। सुलतानगंज के कमरगंज पंचायत स्थित गंगा नदी में गाँव के चार छात्र को स्नान करने के दौरान माँ दुर्गा अष्टधातु कि प्रतिमा मिलने की सूचना प्रकाश में आयी है। प्रतिमा को लेकर कमरगंज पंचायत के ग्रामीणों की भीड देखने के लिए उमड़ पड़ी। इसकी सुचना ग्रामीणों के द्वारा जिला परिषद सदस्य आशा जयसवाल को दी। वही मिली सूचना पर कमरगंज पंचायत के गंगा नदी के समीप जिला परिषद सदस्या आशा ने पहुंच कर मामले को लेकर सुलतानगंज थानाध्यक्ष प्रिय रंजन को सुचना दी। वही थानाध्यक्ष प्रिय रंजन कमरगंज गाँव पहुचकर जिला परिषद सदस्य आशा जयसवाल से मुलाकात करते हुए ग्रामीणों के साथ मां दुर्गा अष्टधातु कि प्रतिमा सौपा गया। इस दौरान जिला परिषद सदस्या आशा जयसवाल ने मिडिया प्रतिनिधि के माध्यम से जिला प्रशासन से मांग की है की उक्त मां दुर्गा अष्टधातु कि प्रतिमा को जिला प्रशासन जांच कराकर कमरगंज पंचायत के दुर्गा मंदिर में स्थापित कराया जाय। जिससे कमरगंज पंचायत के सभी ग्रामीण मां दुर्गा अष्टधातु प्रतिमा का विधिवत पुजा पाठ का लाभंवित हो सके। इस दौरान कमरगंज पंचायत के ग्रामीण मिथुन यादव, सहिन्द्र यादव, नीरज यादव, विजय मांझी, रंजीत यादव, सुधीर यादव, सहित इत्यादि ग्रामीण मौजूद थे।

मिलन समारोह आज, शिरकत करेंगे भाजपा के कई दिग्गज नेता

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। आज होने वाले मिलन समारोह की सारी तैयारी पूरी कर ली गई है। मिलन समारोह में 25 हजार से अधिक लोगों की भागीदारी होगी। तैयारी की जानकारी देते हुए पूर्व मंत्री अजीत कुमार ने कहा कि यह मिलन समारोह ऐतिहासिक होगा। साथ ही पार्टी के कई दिग्गज नेता उक्त समारोह में शिरकत करेंगे।

श्री कुमार ने कहा कि बीते एक सप्ताह के अंदर मैं स्वयं एवं मेरे प्रमुख साथी जिले के ढाई सौ गांवों का दौरा कर लोगों को निमंत्रण दिया है। इस आयोजन से लोगों में भारी उत्साह है, भाड़ी संख्या में लोग समारोह में शामिल होकर इसे ऐतिहासिक बनाएंगे।

इससे पूर्व श्री कुमार ने अपने अभियान के अंतिम दिन नगर क्षेत्र के श्रीराम नगर , सरस्वती नगर , बैकुंठपुरी, दादर, कोल्हुआ हरी शाह चौक, जयप्रकाश नगर , हीरा नगर, दामोदरपुर आदि गांव में सभा आयोजित कर लोगों को चांदनी चौक स्थित महेश भगत बनवारी लाल कॉलेज मैं आयोजित मिलन समारोह में बड़ी भागीदारी सुनिश्चित करने का अपील किया।

इस मौके पर टीम अजीत कुमार के अध्यक्ष इंद्रमोहन झा ,शिवनाथ साह, अशोक सहनी, मोहन साह, राम इकबाल ठाकुर, बमबम शाही, शैलेंद्र त्रिवेदी ,संजय पाटिल, राकेश कुमार सिंह ,धर्मेंद्र मिश्रा, रमेश शर्मा ,कमलेश कांत गिरी, सुनील पासवान गणेश गुप्ता, बिट्टू गुप्ता ,छोटन सिंह, रामकिशोर भगत, रमेश पाठक, शंभू शर्मा आदि ने लोगों को संबोधित करते हुए मिलन समारोह में बड़ी भागीदारी सुनिश्चित करने का अपील किया।

कम्प वात रोग से कैसे बचाव और उपचार करें: वैद्य प्रोफेसर दिनेश्वर प्रसाद

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। वैद्य प्रोफेसर दिनेश्वर प्रसाद, राजकीय आयुर्वेदिक कॉलेज अस्पताल पटना, बेगूसराय , दरभंगा, बिहार के पूर्व प्राचार्य एवं पटना ,शेखपुरा ,के पाल मार्केट स्थित अमृत आयुर्वेद का निदेशक सहः मुख्य चिकित्सक हर घर, हर दिन आयुर्वेद कार्यक्रम के तहत कम्प वात रोग के उपर जानकारी साझा किया गया । अमृत आयुर्वेद (IGIMS) के बगल में 65 नंबर पिलर के सामने पाल मार्केट में है, ।

इसे सामान्य भाषा में parkinsans कहां जा सकता हैं।यह रोग प्रायः वृद्धावस्था में होता है, जो आयुर्वेद के अनुसार सप्त धातुओं यानी रस,रक्त, मांस,मेद,मज्जा, अस्थि , शुक्र के छय से होता है।पर आधुनिक विद्वान के अनुसार यह इफ्अक्ट एवं ठएपफ्रए से संबंधित रोग माना जाता है।जो प्रायः दो प्रकार का होता हैं। यथा

GENERALISED TREMORES, जिसमें पूरा शरीर विशेष रूप से हाथों में कंपन होता हैं जिसके कारण लिखने, बोलने, खानें एवं पीने में परेशानी होती हैं।हाथ में चम्मच, प्लेट,ग्लास, लेते ही कंपन बढ़ने लगता है। और कभी कभी हाथ में लिया हुआ ग्लास,कप, प्लेट,पेन, इत्यादि छुट जाता हैं।और इस रोग से ज्यादा ग्लानि एवं हिन भावना से यह व्यक्ति ग्रसित हो जाता हैं, फलस्वरूप कहीं या किसी कार्यक्रम में जाने से कतराने लगते हैं। DOPAMIN नामक Hormofes के कमी के कारण भी इस रोग से लोग आक्रांत हों जाया करते है। एक दूसरे प्रकार का ळफ्एटडफ्र होता हैं, जिसमें गर्दन कांपने की शिकायत ज्यादा होती हैं इन दोनो में आयुर्वेद की औषधियां विशेष लाभप्रद होती हैं DOPAMIN कौच के बीज में बहुतायत मात्रा में मिलता हैं,अतएव कौच के बीज से बनें दवाइयां एवं अश्वगंधा,ब्राह्मी,बला मुल, शंखपुष्पी,रोगनबदाम इत्यादि काफी लाभप्रद है।

विशेष जानकारी के लिए निम्न mobile पर सम्पर्क कर सकते हैं :9773960287,9798924125

वीकेएसयू के शोधार्थी प्रशांत बिहार कांग्रेस के डेलीगेट नियुक्त

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। कांग्रेस पार्टी के केंद्रीय नेतृत्व के द्वारा वीर कुंवर सिंह विश्विद्यालय के शोधार्थी प्रशांत ओझा को बिहार प्रदेश कांग्रेस कमिटी का प्रदेश डेलिगेट नियुक्त किया गया है।श्री ओझा ने विश्विद्यालय से भारतीय राष्ट्रीय छात्र संगठन एनएसयूआई से अपनी छात्र राजनीति की शुरूआत की और प्रदेश स्तरीय संगठन कई छात्र आंदोलनों में प्रमुख भूमिका निभाई है।संगठन के चुनावी प्रक्रिया से प्रदेश के महासचिव,प्रदेश उपाध्यक्ष व बिहार के कई विश्वविद्यालयों के प्रभारी रहे हैऔर वर्तमान में राष्ट्रीय संयोजक सह झारखंड प्रदेश के प्रभारी है।कांग्रेस पार्टी ने इनके समर्पण और काम को देखते हुए छात्र संगठन से प्रदेश कांग्रेस में नई जिम्मेदारी दी है।प्रदेश कांग्रेस कमिटी के डेलिगेट नियुक्त होने पर श्री ओझा ने कांग्रेस नेता राहुल गांधी,राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिका अर्जुन खड़गे, बिहार कांग्रेस के प्रभारी भक्त चरण दास, एनएसयूआई राष्ट्री अध्यक्ष नीरज कुन्दन,प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष डॉ अखिलेश प्रसाद सिंह ,बिहार युवा कांग्रेस के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष कुमार आशीष, और एनएसयूआई के प्रदेश अध्यक्ष चुन्नू सिंह के प्रति आभार व्यक्त किया।प्रशांत ओझा को प्रदेश डेलिगेट नियुक्त होने पर एनएसयूआई के जिलाध्यक्ष मनीष सिंह दुलदुल,बिक्कू सिंह,अभिषेक तिवारी गोलु,राकेश ओझा, ओमप्रकाश राय, विवेक सिंह आदि ने खुशी जाहिर किया है।

वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय को तीन खंडों में होने से बचाने की मांग को लेकर सांसद का रोषपूर्ण विरोध

प्रात : किरण संवाददाता

आरा।अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के कार्यकताओं ने वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय को तीन खंडों में होने से बचाने की मांग को लेकर स्थानीय सांसद आर के सिंह का रोषपूर्ण विरोध किया गया. विद्यार्थी परिषद के कार्यकताओं का मांग कृषि विभाग की भूखंड आवंटन कराने के संबंध में था। छात्र नेता छोटू सिंह ने बताया कि वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय का अस्तित्व खतरे में है और हम सभी आवेदन पर आवेदन देते हुए घूम रहे हैं लेकिन यहां किसी को विश्वविद्यालय के अस्तित्व की चिंता नहीं है बिहार सरकार मनमानी कर नहीं रहे हैं प्रदेश सह मंत्री राज पांडेय ने बताया की विश्वविद्यालय को तीन खंडों में बंटने से छात्रो को आर्थिक मानसिक और शारिरिक रूप से शोषण होगा जो वैवहारिक रूप से ठीक नही है..विश्वविद्यालय संयोजक चंदन तिवारी ने बताया कि छात्रों के परेशानी को अगर नजर अंदाज किया जायेगा, तो विद्यार्थी परिसद सड़क से सदन तक आंदोलन करने के लिए हम सभी तैयार हैं। वार्ता में प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य ऋतुराज चौधरी,चंदन कुमार,राजन कुमार, जिला संयोजक हिमांशु रंजन,तिवारी सूर्यमणि, निखिल कुमार,राहुल राय रवि भूषण,समीर सिंह, उमंग कुमार, आलोक राज, आदित्य कुमार, गोलू कुमार,राहुल पाण्डे एवं सैकड़ो परिषद कार्यकता उपस्थित रहे।

तीन ट्रकों की आमने-सामने हुई भिड़ंत में एक चालक की मौके पर हुई मौत

प्रात : किरण ब्यूरो

भागलपुर। नवगछिया के नारायणपुर प्रखंड अंतर्गत भवानीपुर ओपी थाना क्षेत्र स्थित नारायणपुर एनएच 31 पर सत्संग आश्रम के समीप तीन ट्रकों की सीधी भिड़ंत में एक चालक की मौत हो गई है। जबकि उक्त घटना में गंभीर रूप

सम्पादकीय

लोक सभा में डिप्ट्री स्पीकर का पद चार बर्षो से खाली क्यू है: खबरीलाल

विनोद ताकियावाला

विश्व के सबसे बडे लोकतंत्र में संसदीय शासन प्रणाली अपनाई गई है।जिसमें संसद व संविधान सर्वोच्च है। इस प्रणाली के अर्न्तगत संसद जिसमे लोक सभा-राज्य सभा का प्रावधान है। लोक सभा में जनता के चुने हुए प्रतिनिधि होते है। लोक सभा के कार्यवाही सुचारू रूप से चले इसके हमारे संविधान में वर्णित किया गया है। इसके अनुसार लोक सभा स्पीकर/डिप्ट्री स्पीकर का उल्लेख किया गया है। हालाकि डिफ्ट्री स्पीकर के पद के लिए अनिवार्य नही है। केद्र की भाजपा सरकार पुरानी परमपरा को दर किनार कर अपने हिसाब से रंग रोगन कर नया इतिहास रचकर स्वर्णाक्षर अपनी छवि अंकित करना चाहती है। ऐसे में दबी जुबान से काना पुसी होना स्वभाविक है। कुछ ऐसी ही तस्वीर जनता के समक्ष आई है। तभी तो जनता के मन कुछ सवाल उठने लगे हैं कि क्या भारतीय जनता पार्टी लोकसभा की कार्यवाही अपने हिसाब से चलाना चाहती है? विगत दिनो हिंडनबर्ग रिसर्च रिपोर्ट के बाद जिस तरह की गहमा गहमी संसद के दोनों सदन में दिखी, उसे देखते हुए अगर कांग्रेस का डिप्टी स्पीकर चेयर पर होता तो इस तरह का पक्ष-विपक्ष मेक्या दृश्य देखने को मिलता.. क्या केंद्र की सता के सिंघासन पर आसीन भाजपा को इस तरह की आशंका भी सता रही है? तभी कॉंग्रेश के नेता मलिकाजून खडगें व राहुल गांधी के भाषण के कई हिस्से को संसद के कार्यवाही से हटा दिए गए, अगर उस समय चेयर पर कोई और होता तो क्या ऐसा फैसला नहीं होता?ये सवाल सिर्फ मेरे नहीं हैं। बल्कि देश के जागरूक जनता के मन में भी शक -शंका उठना स्वाभाविक है। तभी तो सुप्रीम कोर्ट में डिप्टी स्पीकर का मुद्दा जा चुका है। आये दिनो देश का सर्वोच्च न्यायलय मोदी सरकार से खफा है। दिल्ली नगर निगम के चुनाव सम्पन्न हुए महीने बीत जाने के बाद काफी ड्रामा हो के वाद दिल्ली को मेयर और डिप्ट्री मेयर मिल गया है। लैकिन दिल्ली नगर निगम के सदन में स्टेडिंग कमिटि के सदस्यो के चुनाव जो घटना घटी है और मामला उच्च न्यायलय में पहुँच गई। इसके पूर्व माननीय सर्वोच्च न्यायालय को यह कहना पड़ा कि क्यूं बार न्यायलय को हस्तक्षेप करना पड़ता है। इससे पहले कोलीजियम सिस्टम पर सरकार व माननीय सर्वोच्च न्यायलय तनातनी समाने आई थी।

सर्वविदित है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के चार साल का कार्यकाल पूरा करने वाले हैं एवं अगले वर्ष 2024 में नई लोकसभा के चुनाव होने वाली है। केंद्र मे भाजपा सरकार के दुसरे कार्यकाल में मात्र एक साल से कुछ ही ज्यादा का समय बचा है, लेकिन अभी तक मोदी सरकार लोकसभा का डिप्टी स्पीकर नहीं बना पाई। राजनीतिज्ञ मामले के जानकार का कहना है कि एक ऐसी राजनीति पार्टी जो 30 साल बाद पूर्ण बहुमत से 2014 में सत्ता में आई और जनता ने पुनः जिसे दूसरी बार 2019 में प्रचंड बहुमत दिया !लोकसभा में बहुमत का जादुई आंकड़ा 273 हैऔर भारतीय जनता पार्टी को अकेले 303 सीटें मिलीं। इसके बावजूद डिप्टी स्पीकर न बना पाना हैरान करने वाला है। आखिरकार भाजपा की सरकार व भाजपाईयो को किस बात का डर सता रही है। इसी मसले पर सुप्रीम कोर्ट में एक जनहित याचिका डाली गई है जिसकी सुनवाई के दौरान कोर्ट ने दो हफ्तों में मोदी सरकार से जवाब मांगा है। लोकसभा के डिप्टी स्पीकर का जिक्र संविधान के अनुच्छेद 93 में है।

पड़ोसियों के हालातों से देश को सीख लेना आवश्यक

डा. रवीन्द्र अरजरिया

देश के वर्तमान हालात बेहद अच्छे दिख रहे हैं। आर्थिक पैमाने पर भारत ने ब्रिटेन से भी ऊपर पहुंच कर दुनिया का पांचवां स्थान प्राप्त कर लिया है। अन्य देशों की मदद के लिए भी हमेशा खडा रहता है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मानवता की मिशाल बनने के साथ-साथ देश के अन्दर भी नित नये कीर्तिमान गढे जा रहे हैं। मुफ्त में अनाज, मकान, घरेलू वस्तुयें, कन्याओं का विवाह, तीर्थ यात्रा, सरकारी कर्मचारियों को पेन्शन, फसल बीमा, वृध्दावस्था पेंशन, विभिन्न वर्गों को सम्मान राशि, हज के लिए अनुदान, आस्था के स्थलों हेतु सहायता राशि, खास वर्ग के छात्रों हेतु छात्रवृत्ति, निःशुल्क शिक्षा, अधिकांश लोगों को पांच लाख तक की निःशुल्क चिकित्सा, बच्चों को मध्यान्ह भोजन, आंगनवाली में पोषक आहार, बीमारियों की रोकथाम हेतु अग्रिम टीकाकरण जैसे अनगिनत कार्यक्रम निरंतर चलाये जा रहे हैं। मानव शक्ति के स्थान पर यांत्रिक शक्ति, भौतिक दस्तावेजों के स्थान पर डिजिटल दस्तावेज जैसी अत्याधुनिक व्यवस्थायें भी लागू हो रहीं हैं। यंत्र, यंत्री और यांत्रिकी पर आश्रित होता देश आज विश्व में अपनी तीव्रतम विकास यात्रा के लिए उदाहरण बनता जा रहा है। निश्चित ही वर्तमान में सब कुछ सुखद है परन्तु भविष्य को लेकर वर्तमान की कार्य प्रणाली अब चिन्ता का कारण भी बनती जा रही है। देश में एसी, टीवी, फ्रिज, कार जैसी भौतिक विलासता की वस्तुयें निरंतर मंहगी होती जा रहीं है। आलू, टमाटर, गेंहू, चावल आदि के मूल्यों में अपेक्षाकृत गिरावट आती जा रही है। टमाटर उगाने वाले किसान को उसकी फसल के लिए आढतियों से 2 से 3 रुपये प्रति किलो ही प्राप्त हो रहे हैं। गेहूं के लिए 20 से 25 रुपये मिलते हैं। जीवन को चलाने वाली वस्तुओं का उत्पादन करने वालों की हथेली पर चन्द सिक्के ही आ रहे हैं जबकि भौतिक विलासता के संसाधनों का निर्माण करने वाले भारी लाभ कमा रहे हैं। विलासता के संसाधनों को जीवन चलाने का आधार कदापि नहीं माना जा सकता बल्कि इनका उपयोग करके बीमारियों की सौगात ही मिलती है। मुफ्तखोरी के कारण एक बडा तबका कामचोर होता जा रहा है। सरकारी कर्मचारियों और जनप्रतिनिधियों की वेतन तथा भत्तों में आशातीत वृध्दि हो रही है। विलासता के उपकरणों के निमार्ताओं की झोलियां निरंतर भरती रहतीं हैं। कथित निम्नवर्गीय आबादी को मुफ्त में जीवकोपार्जन सहित विलासता की सुविधायें उपलब्ध कराई जा रहीं हैं। केवल और केवल मध्यम वर्गीय जनसंख्या ही कोल्हू के बैल की तरह आंख पर पट्टी बांधकर सरकारी महकमों और हरामखोरों के लिए तेल निकालने का काम कर रही है। इसी तेल से देश के तंत्र को ईंधन मिलता है। हरामखोरों को सुविधायें मिलतीं है। मगर कब तक। यह एक यक्ष प्रश्न है। आज पडोसी देश पाकिस्तान के वर्तमान हालातों से सीख लेने का अवसर है। वहां की सरकार ने अपने खर्चे कम करना शुरू कर दिये हैं। पश्चिम की नकल के पीछे दौडने वाला देश आज आत्म अवलोकन करने के लिए बाध्य है। यह हाल केवल पाकिस्तान का ही नहीं है बल्कि श्रीलंका, बंगलादेश सहित एक दर्जन से ज्यादा राष्ट्रों का है जो अब आत्म निरीक्षण करने में जुटे हैं। संविधान निमार्ताओं से लेकर समय-समय पर संशोधन करने वालों ने स्वयं के हितों के अलावा केवल सरकारी अधिकारियों-कर्मचारियों की सुविधा का ही ध्यान रखा है ताकि खास राजनैतिक दल को सत्ता पर काबिज रहने के अवसर यह सरकारी तंत्र ऐन-केन-प्रकारेण उपलब्ध कराता रहे। मगर इस तंत्र के सिपाहसालार का एक बडा तबका हमेशा ही आत्मकेन्द्रित होकर रहा। पांच सालों तक सरकार पर काबिज रहने वाले लोगों को सब्जबाग दिखाकर यह तबका हमेशा ही अपना, अपने परिवार और आत्मीयजनों के हितों के अवसर ही तलाशता रहा। निरीह नागरिकों पर हुकूमत करता रहा। वास्तविकता तो यह है कि हमारे संविधान में विधायिका को केवल कानून बनाने तथा निर्देश देने के अधिकारों तक ही सीमित कर दिया गया है। देश में चयनित राष्ट्रपति से लेकर गांव के सरपंच तक को किसी की नियुक्ति, निलंबन या निष्कासन करने का अधिकार नहीं है। कार्यपालिका को ही यह अधिकार दिये गये हैं। वरिष्ठ अधिकारी ही अधीनस्त अधिकारियों-कर्मचारियों की नियुक्त, निलंबन, निष्कासन कर सकते हैं। चौराहों से लेकर चौपालों तक में इस व्यवस्था को चोर-चोर मौसेरे भाई की कहावत के रूप में परिभाषित करते सुना जा सकता है। कार्यपालिका के किसी भी सदस्य की अनियमिततायें उजागर होने के बाद भी विधायिका उसे कारण बताओ नोटिस तक नहीं दे सकती। गण पर थोपा गया तंत्र बेहद पैचींदगी भरा है। संविधान में विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका के लिये निर्धारित दायित्वों की व्याख्या को इतना जटिल बना दिया गया है कि अनेक अवसरों पर टकराव की स्थिति तक निर्मित हो जाती है। ऐसे में देश की बेहतरी के लिए संयुक्त प्रयासों का मूर्तरूप लेना असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है। तिस पर तुष्टीकरण के आधार पर वोट बैंक में इजाफा करने वाले दलों की अपनी नीतियां ग्रहण की तरह लगीं हुईं है। इतिहास गवाह है कि जब-जब मध्यम वर्गीय आवाम को उसकी सहनशक्ति से अधिक दबाया गया, तब-तब क्रान्ति का शंखनाद हुआ। उच्चवर्गीय लोगों के पास सेवकों की जमात खडी रहती है, टैक्स को समायोजित करने के लिये कानूनी दावपैंचों के महारथी हाजिरी भरते हैं, चाटुकारों की फौज मुनाफे की नयी संभावनायें बताते हैं, सत्ता के गलियारों से लाभ के अवसर मिलते हैं।

मेरा नाम हैं आजाद: चंद्रशेखर

हेमेन्द्र क्षीरसागर
(पत्रकार, लेखक व स्तंभकार)

आजाद ने इन तीनों की सजा कम कराने का काफी प्रयास किया था। वे पण्डित नेहरू से भी आग्रह किए थे कि तीनों की फांसी को उम्रकैद में बदलवा दिया जाए, लेकिन सफलता नहीं मिली। मनमुग्ध, चंद्रशेखर को आजाद नाम एक खास वजह से मिला। चंद्रशेखर जब 15 साल के थे तब उन्हें किसी केस में एक जज के सामने पेश किया गया। वहां पर जब जज ने उनका नाम पूछा तो उन्होंने ने कहा, मेरा नाम आजाद है, मेरे पिता का नाम स्वतंत्रता और मेरा घर जेल है। जज ये सुनने के बाद भड़क गए और चंद्रशेखर को 15 कोड़ों की सजा सुनाई, यही से उनका नाम आजाद पड़ गया...

आजाद एक ऐसा शब्द है जो महान स्वतंत्रता सेनानी चंद्रशेखर आजाद के साथ जुड़ा है। इन्होंने अपनी पूरी जिंदगी को आजाद रखने का वचन था और उसे आखिरी सांस तक निभाया भी। ऐसे आजादी के महानायक, मां भारती के सच्चे उपासक जगदानी देवी- पंडित सीताराम तिवारी के सपूत चंद्रशेखर आजाद का अवतरण 23 जुलाई, 1906 को मध्य प्रदेश के झाबुआ जिले के भाबरा नामक स्थान पर हुआ था। आजाद का बचपन आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र में स्थित भाबरा गांव में बीता था। यहां पर आजाद ने भील बालकों के साथ खूब धनुष बाण चलाए थे। जिसके कारण उन्होंने निशानेबाजी बचपन में ही सीख ली थी। स्तुत्य, जलियांवाला बाग कांड के समय चन्द्रशेखर बनारस में पढ़ाई कर रहे थे। जब गांधीजी ने सन् 1921 में असहयोग आन्दोलन शुरू किया तो वे अपनी पढ़ाई छोड़कर सड़क पर उतर आए। इन्होंने अपना पूरा जीवन देश की आजादी की लड़ाई के लिए कुर्बान कर दिया। चंद्रशेखर बेहद कम्र उम्र में देश की आजादी की लड़ाई का हिस्सा बने थे। जब सन् 1922 में चौरी चौरा की घटना के बाद गांधीजी ने अपना आंदोलन वापस ले लिया तो आजाद का कांग्रेस से मोहभंग हो गया। इसके बाद वे पण्डित राम प्रसाद बिस्मिल और शचीन्द्रनाथ सान्याल योगेश चन्द्र चटर्जी द्वारा 1924 में गठित हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन से जुड़ गए। इस एसोसिएशन के साथ जुड़ने के बाद चंद्रशेखर ने रामप्रसाद बिस्मिल के नेतृत्व में काकोरी कांड 1925 में पहली बार सक्रिय रूप से भाग लिया।

कालजयी, आजाद, भगत सिंह और राजगुरु ने मिलकर 17 दिसंबर, 1928 की शाम को लाहौर में पुलिस अधीक्षक जेपी सांडर्स को मार दिया। जब सांडर्स के अंगरक्षक ने उनका पीछा किया, तो चंद्रशेखर आजाद ने अपनी गोली से उसे भी समाप्त कर दिया। इस हत्याकांड के बाद लाहौर में जगह-जगह परचे चिपका दिए गए, जिन पर लिखा था-लाला लाजपतराय की मृत्यु का बदला ले लिया गया है। आजाद ने भगत सिंह, सुखदेव तथा राजगुरु की फांसी रुकवाने के लिए दुर्गा भाभी को गांधीजी के पास भेजा था, लेकिन वहां से उन्हें कोरा जवाब मिल गया था।

आजाद ने इन तीनों की सजा कम कराने का काफी प्रयास किया था। वे पण्डित नेहरू से भी आग्रह किए थे कि तीनों की फांसी को उम्रकैद में बदलवा दिया जाए, लेकिन सफलता नहीं मिली। मनमुग्ध, चंद्रशेखर को आजाद नाम एक खास वजह से मिला। चंद्रशेखर जब 15 साल के थे तब उन्हें किसी केस में एक जज के सामने पेश किया गया। वहां पर जब जज ने उनका नाम पूछा तो उन्होंने ने कहा, मेरा नाम आजाद है, मेरे पिता का नाम स्वतंत्रता और मेरा घर जेल है। जज ये सुनने के बाद भड़क गए और चंद्रशेखर को 15 कोड़ों की सजा सुनाई, यही से उनका नाम आजाद पड़ गया। चंद्रशेखर पूरी जिंदगी अपने आप को आजाद रखना चाहते थे। अभिभूत आजाद का कहना था, देश की स्वतंत्रता के लिए विपत्तियों से युद्ध करना ही मेरा राष्ट्रधर्म है। अविनाशी, अंग्रेजों से लड़ाई करने के लिए चंद्रशेखर आजाद इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में सुखदेव और अपने एक अन्य साथियों के साथ बैठकर आगामी योजना बना रहे थे। इस बात की जानकारी अंग्रेजों को पहले से ही मिल गई थी। जिसके कारण अचानक अंग्रेज पुलिस ने उन पर हमला कर दिया। आजाद ने अपने साथियों को वहां से भगा दिया और अकेले अंग्रेजों से लोहा लगने लगे। इस लड़ाई में पुलिस की गोलियों से आजाद बुरी तरह घायल हो गए थे। वे सैकड़ों पुलिस वालों के सामने 20 मिनट तक लड़ते रहे थे। उन्होंने संकल्प लिया था कि वे न कभी पकड़े जाएंगे और न ब्रिटिश सरकार उन्हें फांसी दे सकेगी। इसीलिए अपने संकल्प को पूरा करने के लिए अपनी पिस्तौल की आखिरी गोली खुद को मार ली और मातृभूमि के लिए महज 24 बरस की अल्पायु में 27 फरवरी 1931 को प्राणों की आहुति दे दी। इतिहास के अमर पन्नों में दर्ज यह वीरगाथा सदा-सर्वदा प्रेरणापुंज रहेगी। वंदेमातरम्!

भारत के आर्थिक विकास में भारतीय नागरिकों का है भरपूर योगदान

आर्थिक सर्वेक्षण में आगे आने वाले वर्षों में भारतीय अर्थव्यवस्था के सम्बंध में आशावादी दृष्टिकोण बताया गया है जो कि कई विभिन्न सकारात्मक तथ्यों पर आधारित है। जैसे, निजी खपत में लगातार मजबूती आ रही है जिससे उत्पादन गतिविधियों को बढ़ावा मिल रहा है; केंद्र सरकार का पूंजीगत व्यय (कैपेक्स) लगातार उच्च स्तर पर बना हुआ है; सार्वभौमिक टीकाकरण कवरेज का बहुत बड़े स्तर पर हो रहा है, जिससे संपर्क आधारित सेवाओंझ्ररेस्टोरेंट, होटल, शोपिंगमॉल, सिनेमा, परिवहन, पर्यटन आदि जैसे क्षेत्रों में आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा मिला है; शहरों में विभिन्न निर्माण स्थलों पर प्रवासी श्रमिकों के वापिस लौटने से भवन निर्माण सम्बंधित गतिविधियों में तेजी देखाई दे रही है; कॉरपोरेट जगत के लेखा विवरण पत्रों में मजबूती आई है क्योंकि इस बीच उनकी लाभप्रदता में भरपूर सुधार दिखाई दिया है...

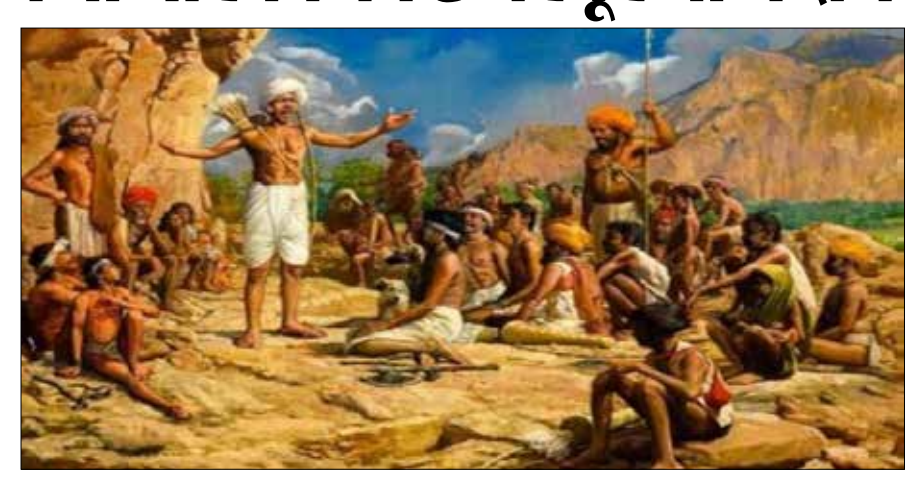

प्रहलाद सबनानी
जनरल मैनेजर, एसबीआई बैंक, मुंबई

प्रत्येक वर्ष भारतीय संसद में बजट प्रस्तुत किए जाने के एक दिन पूर्व देश का आर्थिक सर्वेक्षण माननीय वित्त मंत्री द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। देश की आर्थिक स्थिति के सम्बंध में गहराई से अध्ययन करने के उपरांत यह आर्थिक सर्वेक्षण संसद में पेश किया जाता है। दिनांक 31 जनवरी 2023 को भारत की वित्त मंत्री माननीया श्रीमती निर्मला सीतारमन द्वारा वर्ष 2022-23 का आर्थिक सर्वेक्षण पेश किया गया। इस वर्ष के आर्थिक सर्वेक्षण में भारत की आर्थिक स्थिति के सम्बंध में कई ऐसी जानकारीयां उभरकर सामने आई हैं, जिनसे भारतीय नागरिकों को संतोष प्राप्त होगा। कोरोना महामारी एवं रूस यूक्रेन युद्ध के चलते वैश्विक स्तर पर लगभग सभी देशों ने गम्भीर आर्थिक समस्याओं का सामना किया है। परंतु, यह सुखद तथ्य उभरकर सामने आया है कि भारतीय नागरिकों के सहयोग से भारत ने इन आर्थिक समस्याओं का सामना बहुत सहज तरीके से किया है जिससे इनमें से कई गम्भीर आर्थिक समस्याओं से भारतीय अर्थव्यवस्था बहुत शीघ्रता से उबर सकी है। जबकि अन्य कई देश, विकसित देशों सहित, अभी भी इन समस्याओं से उबरने का गम्भीर प्रयास करते हुए दिखाई दे रहे हैं। सबसे पहिले तो कोविड महामारी से संबंधित चुनौतियों के कारण वैश्विक स्तर पर अर्थव्यवस्था में गम्भीर रुकावटें आई। अभी यह रुकावटें दूर भी नहीं हुईं थीं कि रूस-यूक्रेन युद्ध प्रारम्भ हो गया जिसका प्रतिकूल प्रभाव वैश्विक स्तर की आपूर्ति श्रृंखला पर पड़ा। विशेष रूप से खाद्य पदार्थों (गेहूं, आदि), ईंधन तथा उर्वरक की आपूर्ति में अत्यधिक बाधा उत्पन्न हुई और इसके कारण कई देशों में महंगाई की दर इन देशों के पिछले 40 से 50 वर्षों के उच्चतम स्तर पर पहुंच गई। इसके उपरांत, महंगाई की दर को कम करने के लिए अमेरिका में फेडरल रिजर्व ने ब्याज की दरों में उच्च स्तरीय वृद्धि करते जाने के कारण अन्य कई देशों की केंद्रीय बैंकों के सामने अपने देश की मुद्रा के अवमूल्यन की समस्या खड़ी हो गई। अमेरिकी डॉलर अन्य देशों की मुद्राओं की तुलना में लगातार मजबूत होता चला गया जिसके परिणामस्वरूप इन देशों की अर्थव्यवस्थाओं में आयात मुद्रा स्फीति की दर बढ़ती गई एवं इन देशों का व्यापार चालू खाता घाटा भी लगातार बढ़ता चला गया। कई देशों ने तो इस समस्या के चलते अपने आयात ही कम कर दिए। अन्य देशों की तुलना में भारत ने उक्त वर्णित सभी समस्याओं के प्रभाव को कम करने में बहुत तीव्र गति से सफलता पाई एवं भारतीय अर्थव्यवस्था पुनः पटरी पर लौट आई।

आज भारत विश्व की लगभग समस्त बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में पुनः सबसे तेज गति से आर्थिक विकास करती हुई अर्थव्यवस्था बन गया है। बल्कि, वर्ष 2022-23 में ही सकल घरेलू उत्पाद के स्तर के अनुसार भारत विश्व की पांचवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया। भारत में एक विशेषता दिखाई दी है कि देश के नागरिकों ने देश की आर्थिक समस्याओं को हल करने में केंद्र सरकार, राज्य सरकार एवं आर्थिक क्षेत्र के विभिन्न संस्थानों का भरपूर सहयोग किया है। क्योंकि, वित्तीय वर्ष 2022-23 के दौरान भारत के आर्थिक विकास का मुख्य आधार निजी खपत और छोटी छोटी बचतों के माध्यम से किया गया पूंजी निर्माण रहा है, जिसने रोजगार के सृजन में मदद की है। साथ ही भारतीय अर्थव्यवस्था का औपचारीकरण भी हुआ है जिससे करों के संग्रहण में जबरदस्त सुधार दिखाई दिया है। कोविड के टीकाकरण में देश के नागरिकों को 220 करोड़ से अधिक खुराकें दी गई ताकि कोविड महामारी से बचाव हो सका एवं उपभोक्ता के मनोभाव को मजबूती मिली। यह सब भारतीय नागरिकों के सहयोग के बिना सम्भव नहीं था। वित्तीय वर्ष 2022-23 में सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमियों (एमएसएमई) द्वारा ऋण के उपयोग में तेज वृद्धि दर्ज की गई है, यह जनवरी-नवम्बर, 2022 के दौरान औसत आधार पर 30.6 प्रतिशत की गति से बढ़ा है और इसे केन्द्र सरकार की आपात ऋण से जुड़ी गारंटी योजना (ईसीएलजीएस) का भरपूर समर्थन मिला है। इससे सिद्ध होता है कि एमएसएमई क्षेत्र में आर्थिक गतिविधियां तेज हुई हैं एवं उनके द्वारा भुगतान की जाने वाली वस्तु एवं सेवाकर (जीएसटी) की धनराशि में भी अत्यधिक वृद्धि परिलक्षित हुई है। कुल मिलाकर बैंक ऋण में 16 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि लगातार बनी हुई है जो उधार लेने वालों के बदलते रुझानों को दशार्ता है एवं अर्थव्यवस्था में केंद्र सरकार के अलावा अब निजी क्षेत्र की बढ़ती भागीदारी को दशार्ता है। जैसी कि भरपूर सम्भावना है कि भारत में मुद्रास्फीति की दर वित्त वर्ष 2024 में नियंत्रण में रहेगी इससे उद्योग जगत द्वारा उत्पादित की जा रही वस्तुओं की वास्तविक लागत नहीं बढ़ेगी, अतः वित्त वर्ष 2024 में भी ऋणराशि में तेज वृद्धि के बने रहने की भरपूर सम्भावना है। केंद्र सरकार का पूंजीगत व्यय (कैपेक्स) भी वित्त वर्ष 2023 के पहले 8 महीनों में 63.4 प्रतिशत तक बढ़ गया है, जो चालू वित्त वर्ष में भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास का प्रमुख घटक रहा है। वर्ष 2022 के जनवरी-मार्च तिमाही से निजी पूंजीगत व्यय में भी वृद्धि दृष्टिगोचर हुई है। वर्तमान रुझानों के अनुसार ऐसा आभास हो रहा है कि वित्तीय वर्ष 2023 के लिए निर्धारित पूंजीगत व्यय के बजट को हासिल कर लिया जाएगा। केंद्र सरकार एवं निजी क्षेत्र से पूंजीगत व्यय के बढ़ने से वित्तीय वर्ष 2023 में आर्थिक गतिविधियों को गति मिली है और सकल घरेलू उत्पाद में 7 प्रतिशत की वृद्धि दर की कल्पना की गई है। कई अंतरराष्ट्रीय संस्थानों जैसे गोल्डमेन सेच्स, मूडी, फिच, एशियाई विकास बैंक आदि ने भी वित्तीय वर्ष 2023 में भारतीय अर्थव्यवस्था के 7 प्रतिशत से आगे बढ़ने के संकेत दिए हैं। एसएंडपी ने तो 7.3 प्रतिशत का अनुमान दिया है। भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के आत्मनिर्भर भारत सम्बंधी आह्वान को भी भारतीय नागरिकों द्वारा बहुत गम्भीरता से लिया गया है एवं चीन से आयात किए जा रहे ऐसे कई उत्पादों (खिलौने, फटाके, रंग, बिजली की झालरें, भगवान की मूर्तियां, आदि), जिनका भारत में ही आसानी से उत्पादन किया जा सकता है, का एक तरह से बहिष्कार ही किया है। केंद्र सरकार ने भी अपने नागरिकों का भरपूर ध्यान रखते हुए ऐसी कई योजनाएं लागू की हैं जिससे विशेष रूप से गरीब वर्ग के नागरिकों की रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा एवं स्वास्थ्य सम्बंधी जरूरतें पूरी हो सकें। महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना (एमजीएनआरईजीएस) के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में प्रत्यक्ष तौर पर रोजगार प्रदान किया जा रहा है इससे अप्रत्यक्ष तौर पर ग्रामीण परिवारों को अपनी आय के स्त्रोतों में बदलाव करने में मदद मिल रही है।

ऐसे थे नानाजी देखमुख, जिन्होंने राष्ट्र और समाज को दिया सारा जीवन

सुप्रसिद्ध राष्ट्रसेवी भारत रत्न नानाजी देशमुख की पुण्यतिथि

डॉ धनंजय गिरि
लेखक सामाजिक कार्यकर्ता और बिहार प्रदेश भाजपा के प्रवक्ता हैं

नानाजी यह कहकर अस्वीकार कर दिया कि वे साठ वर्ष की आयु पार कर चुके हैं इस आयु के बाद व्यक्ति को समाज सेवा करना चाहिए। और अपने संकल्प के साथ नानाजी समाज सेवा में जुट गये। उन्होंने चित्रकूट में ग्रामोदय विश्व विद्यालय आरंभ किया। चित्र कूट का यह प्रकल्प नानाजी का पहला प्रकल्प नहीं था। वे जहां रहे वहां उन्होंने ऐसे प्रकल्प कार्यकताओं से आरंभ कराये। इसके लिये उन्होंने सदैव पिछड़े गाँव चुने। उनके संकल्प में स्वत्व और स्वावलंबन को प्राथमिकता रही। उन्होंने इसी दिशा के प्रकल्प आरंभ किये। उन्हे अपने अभियान में दीनदयाल जी के आकस्मिक निधन से भारी क्षय अनुभव किया। वे दीनदयाल उपाध्याय की असामयिक मृत्यु के बाद काफी दिनों तक अन्यमनस्क रहे और अंततः उन्होंने 1972 में दीन दयाल शोध संस्थान की स्थापना की और पूरा जीवन इसी संस्थान को सशक्त करने में लगा दिया....

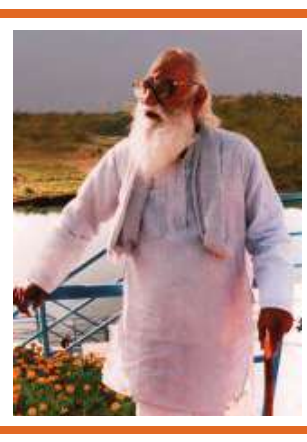

हजार वर्ष की दासता के अंधकार के बीच यदि आज राष्ट्र और संस्कृति का वट वृक्ष पुनः पनप रहा है तो इसके पीछे उन असंख्य तपस्वियों का जीवन है जिन्होंने अपना कुछ न सोचा। जो सोचा वह राष्ट्र के लिये सोचा, समाज के लिये सोचा और संस्कृति रक्षा में अपने जीवन को समर्पित कर दिया। इन्हीं महा विभूतियों में एक हैं नानाजी देशमुख। स्वतंत्रता के पूर्व उन्होंने असंख्य स्वतंत्रता संग्राम सेनानी तैयार किये और स्वतंत्रता के बाद राष्ट्रसेवा के लिये सैकड़ों स्वयंसेवक तैयार किये। ऐसे हुतात्मा संत नानाजी की पुण्यतिथि 27 फरवरी को है। नानाजी देशमुख का जन्म 11 अक्तूबर 1916 को महाराष्ट्र के हिगोंली जिला के छोटे से कस्बे कडोली में हुआ था। उनका प्रारंभिक जीवन अति अभाव और संघर्ष से भरा था। लेकिन चुनौतियों ने उन्हे कमजोर नहीं सशक्त बनाया, संकल्पशक्ति को दृढ़ किया। उन्होंने पुस्तकें खरीदने के लिये सब्जी बेचकर पैसे जुटाये, पढ़ाई की। मंदिरों में रहे लेकिन उच्च शिक्षा प्राप्त की। उन्होंने पिलानी के बिरला इंस्टीट्यूट से उच्च शिक्षा की डिग्री ली। अपनी शिक्षा के दौरान उन्होने राष्ट्र और समाज की दयनीय स्थिति को अपनी आँखों से देखा और समझा। सनातन समाज के भोलेपन का लाभ लेकर विभाजन का षड्यंत्र सब। उन्होंने साहित्य का अध्ययन किया। दयानंद सरस्वती, स्वामी विवेकानन्द और तिलक जी के साहित्य से बहुत प्रभावित हुये और समय के साथ संघ से परिचय हुआ। वे 1930 में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से जुड़े। और जीवन राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ को ही समर्पित कर दिया। संघ के संस्थापक डा हेडगेवार से उनके व्यक्तिगत और पारिवारिक संबंध थे। नानाजी ने डा हेडगेवार की कार्यशैली देखी। डा हेडगेवार ने अपना व्यक्तित्व, अपना जीवन ही नहीं अपितु अपना पूर्ण अस्तित्व ही राष्ट्र और संस्कृति की सेवा के लिये समर्पित कर दिया था। ठीक उसी प्रकार नानाजी ने भी उच्च शिक्षा से सम्पन्न अपना जीवन संघ की धारा पर राष्ट्र और संस्कृति की सेवा में अर्पित कर दिया। उन्होंने संघ रचना का प्रारंभिक कार्य महाराष्ट्र के विदर्भ क्षेत्र से आरंभ किया। उनका कार्य त्रिस्तरीय था। परिवार से संपर्क, शिक्षण संस्थान से संपर्क और खेल मैदान में बच्चों से संपर्क करके उन्हेरचनात्मक कार्यों में जोड़ा। नानाजी का कार्य केवल संघ की संगठन रचना तक सीमित भर नहीं था। उनका प्रयास पीढ़ी में संस्कार, संयम, समाज सेवा और संगठन का भाव उत्पन्न करना था। उन्होंने ऐसे समर्पित और अनुशासित युवाओं की एक पीढ़ी तैयार की। उनके द्वारा तैयार स्वयंसेवकों ने 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया।

पूरे विदर्भ ही नहीं अपितु संपूर्ण विदर्भ क्षेत्र के साथ महाराष्ट्र और मध्यप्रदेश के महाकौशल क्षेत्र में भारत छोड़ो उस आँदोलन का नेतृत्व भले किसी ने किया हो पर बड़ी संख्या। समय के साथ नाना जी को महाराष्ट्र से बाहर संगठन विस्तार के दायित्व मिले। उनका अधिकांश जीवन राजस्थान और उत्तर प्रदेश में बीता। सबसे पहले उत्तर प्रदेश के गोरखपुर में संघ प्रचारक का दायित्व मिला। उन्होंने गोरखपुर में संघ की पहली शाखा आरंभ की। नाना जी धर्मशाला में रहते थे, स्वयं अपने भोजन का प्रबंध करते और संघ और राष्ट्रसेवा कार्य में जुटे रहते थे। गोरखपुर के बाद उत्तर प्रदेश के अन्य जिलों में संघ कार्य करने के बाद वे उत्तर प्रदेश ही प्रांत प्रचारक बने। संघ ने जब ह्लराष्ट्र-धर्मह्व और ह्लपाञ्चजन्यह्व समाचार पत्र निकालने का निर्णय लिया तो नानाजी इसके प्रबंध संपादक थे। अटलजी और दीनदयाल जी के साथ उनकी एक ऐसी सशक्त टोली बनी जिसने पूरे देश को एक वैचारिक दिशा दी। 1951 में जब तत्कालीन सरसंघचालक गुरु जी राजनीतिक दल गठित करने का निर्णय लिया तो इसकी रचना में महत्वपूर्ण भूमिका नाना जी की रही। वे नवगठित इस राजनैतिक दल ह्लभारतीय जनसंघह्व के संस्थापक महासचिव बने। उन्होंने एक ओर जहाँ जनसंघ को कार्य विस्ता, देने का कार्य किया वहीं भारतीय विचारों के समीप राजनेताओ से भी संपर्क साधा। इसमें समाजवादी पार्टी के नेता डा राम मनोहर लोहिया भी थे। यह नानाजी का प्रयास महत्वपूर्ण था कि समाजवादी पार्टी और जनसंघ की निकटता बढ़ी। यदि 1967 में देश के कुछ प्रांतों में संविद सरकारें बनी तो इसके पीछे नानाजी और डा लोहिया की निकटता ही रही है। नानाजी ने ही उत्तर प्रदेश में गठबंधन की राजनीति की शुरूआत की थी जो देशभर एक उदाहरण बनी। इसी शक्ति के कारण उत्तर प्रदेश के चंद्रभानु गुप्ता जैसे बड़े नेता को पराजय का मुँह देखना पड़ा। 1977 में जनता पार्टी की केंद्रीय सरकार बनी तो प्रधानमंत्री मोरारजी भाई ने नानाजी के सामने मंत्री पद का प्रस्ताव रखा। नानाजी यह कहकर अस्वीकार कर दिया कि वे साठ वर्ष की आयु पार कर चुके हैं इस आयु के बाद व्यक्ति को समाज सेवा करना चाहिए। और अपने संकल्प के साथ नानाजी समाज सेवा में जुट गये। उन्होंने चित्रकूट में ग्रामोदय विश्व विद्यालय आरंभ किया। चित्र कूट का यह प्रकल्प नानाजी का पहला प्रकल्प नहीं था। वे जहां रहे वहां उन्होंने ऐसे प्रकल्प कार्यकताओं से आरंभ कराये। इसके लिये उन्होंने सदैव पिछड़े गाँव चुने। उनके संकल्

नौगांवा सादात ने भाजपाइयों ने सुनी पीएम की मन की बात

प्रात : किरण, संवाददाता

नौगावां। रविवार को भारतीय जनता पार्टी राष्ट्रीय महा संपर्क अभियान विभाग के जिला संयोजक,नौगांवा सादात नगर पंचायत के निवर्तमान नामित सभासद पूर्व जिला मंत्री वीरेंद्र सिंह सैनी ने अपने आवास स्थित मोहल्ला अली नगर में बूथ संख्या 265 पर बूथ अध्यक्ष व बूथ कमेटी के साथ रेडियो के माध्यम से मन की बात कार्यक्रम को ध्यानपूर्वक सुना।तत्पश्चात कार्यक्रम सुनने के बाद सभी कार्यकर्ता अपने-अपने घर से टिफिन लेकर आए और भोजन पर चर्चा कार्यक्रम किया गया।वीरेंद्र सिंह सैनी ने भोजन पर चर्चा करते हुए बताया कि प्रधानमंत्री जी ने रविवार को अपने मन की बात कार्यक्रम के 98 एपिसोड में कहा कि समाज की शक्ति से बढ़ती है देश की शक्ति प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मन की बात कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि मन की बात को आप सभी ने जनभागीदारी की अभिव्यक्ति का अद्भुत प्लेटफार्म बना दिया है आप अपने मन की शक्ति तो जानते ही हैं वैसे ही समाज की शक्ति से कैसे देश की शक्ति बढ़ती है यह हमने मन की बात के अलग-अलग एपिसोड में देखा और अनुभव किया है और इसे स्वीकार भी किया है पीएम ने कहा मुझे वह दिन याद है जब हमने मन की बात में भारत के पारंपरिक खेलों का जिक्र किया था तभी से युवाओं ने खेलों में अपना व अपने देश का नाम रोशन किया।इस अवसर पर भाजपा नेता वीरेंद्र सिंह सैनी, मयंक सैनी, ऋषभ कुमार ,जितेंद्र जाटव, दिनेश जाटव, सुमित्रा सिंह, दीवान सिंह ,मुन्नी देवी, नरेंद्र सैनी ,मोनू सैनी आदि मौजूद रहे।

वृक्षारोपण करने से मिलता है बहुत बड़ा पुण्य:सोहन सिंह

मंडी धनौरा।महाविद्यालय परिसर में सात दिवसीय शिविर के पांचवे दिन पर्यावरण दिवस मनाया गया। इस मौके पर स्वम सेवियों ने जगह जगह पौधारोपण किया। नगर के वाई एम एस डिग्री कॉलेज में राष्ट्रीय सेवा योजना ईकाई द्वारा रविवार को सात दिवसीय शिविर के पांचवे दिन पर्यावरण दिवस मनाया गया। इस दौरान स्वम सेवियों ने रासेयो का लक्ष्य गीत गाकर कार्यक्रम को आगे बढ़ाया। इस अवसर पर स्वम सेकियो ने विभिन्न स्थानों पर जाकर पौधारोपण किया। इस दौरान कार्यक्रम अधिकारी सोहन सिंह ने बताया कि वृक्षारोपण करने से बहुत बड़ा पुण्य मिलता है। हर एक व्यक्ति को अपने जीवन में एक पौधा जरूर लगाना चाहिए। आज कल के माहौल में जिस प्रकार धुएं और गैस का प्रकोप बढ़ता जा रहा है। इसकी रोकथाम के लिए पेड़ पौधे बहुत जरूरी हैं। इससे ही वातावरण शुद्ध व स्वच्छ रह सकता है। इस मौके पर स्वम सेवियों ने भी अपने अपने विचार रखे। और ग्रामीणों को ज्यादा से ज्यादा पौधारोपण करने के लिए कहा।इस मौके पर कमल सिंह चौहान, आकाशभीम,रिया वर्मा,दिव्य प्रताप सिंह,दिव्य गिल, सोनिया,शिवानी,ज्योति, काजल आदि लोग मौजूद रहे।

संक्षिप्त खबरें

किसान के कपड़ों में आग लगी, गंभीर झुलसा

नांगल सोती। नांगल सोती क्षेत्र के ग्राम रसूलपुर सैद उर्फ सैदपुरी में एक किसान मुंन्डा फूटने गया था अचानक तेज हवा चलने से किसान के कपड़ों में आग लगी निवासी कैसर अली आग की चपेट में आ गए और बुरी तरह से झुलस गए जिसको नजीबाबाद प्राइवेट हॉस्पिटल में ले जाया गया जिसकी हालत अभी तक नाजुक बताई जा रही है। समाचार लिखे जाने तक हालत में कोई सुधार नहीं बताया जा रहा है।

सड़क पार करते दिखा तेंदुआ,वन विभाग ने लगाया पिंजरा

नौगांवा सादात।थाना इलाके में तेंदुए का सड़क पार करते वीडियो सामने आया है। सीसीटीवी में कैद हुए तेंदुए को सड़क पार करते देखा जा सकता है। वीडियो बीती रात का बताया जा रहा है। वीडियो सामने आने के बाद वन विभाग अलर्ट हो गया है। वन विभाग ने गांव बीलना में पिंजरा लगाने की बात कही है। वहीं तेंदुए को लेकर ग्रामीण दहशत में है। खेतों पर गुट बनाकर और लाठी--डंडे लेकर जा रहे हैं।शनिवार रात तेंदुए की सड़क पार करने की तस्वीरें सीसीटीवी कैमरे में कैद हुई है, जो अब सोशल मीडिया पर वायरल हो रही है। वीडियो नौगांवा सादात थाना क्षेत्र के जनपद बिजनौर के बॉर्डर से सटे गांव बीलना स्थित मार्ग का बताया जा रहा है। वीडियो में तेंदुआ सड़क पार करते दिखाई दे रहा है।इस दौरान बाइक सवार ने जब तेंदुए को सड़क पार करते देखा तो वह सहम गया। बाइक सवार ने यह जानकारी ग्रामीणों को दी। जिसके बाद सीसीटीवी वीडियो सामने आया। डीएफओ इंद्रमणि वर्मा ने बताया कि ग्रामीणों ने बीलना गांव में तेंदुए के होने की बात कही है।ग्रामीणों की शिकायत पर जंगल में पिंजरा लगवाया गया है।

देश में फिर रिपीट हो रहा इतिहास.. कांग्रेस तपस्वियों की पार्टी है, पुजारियों की नहीं : राहुल गांधी

नवा रायपुर। छत्तीसगढ़ में कांग्रेस के महा अधिवेशन का आज अंतिम दिन है। कांग्रेस महाधिवेशन को संबोधित करते हुए राहुल गांधी ने कहा कि भारत जोड़ो यात्रा में मेरे साथ देश के लाखों लोग चले। यात्रा के दौरान मैं लोगों की समस्या जानी। इस दौरान मैने भारत जोड़ो यात्रा से बहुत कुछ सीखा। राहुल गांधी ने कहा कि मैं 52 साल का हो गया लेकिन मेरा घर नहीं। कांग्रेस महाधिवेशन के अंतिम दिन सभा को संबोधित करते हुए राहुल गांधी ने कहा कि अडानी और मोदी का रिश्ता है, दोनों एक हैं। आजादी की लड़ाई एक कंपनी के खिलाफ हुई थी, आज एक बार फिर इतिहास रिपीट हो रहा हैं। हमें मोदी और अडानी के खिलाफ लड़ाई लड़ने की जरूरत है। कांग्रेस तपस्वियों की पार्टी है, पुजारियों की नहीं। यह तपस्या नहीं रुकेगी, हम सब काम करेंगे। पूरा देश हम तपस्वियों के साथ खड़ी होगी खड़गे जी कार्यक्रम बनाए, हम मेहनत करेंगे। राहुल गांधी ने कहा कि भारत जोड़ों यात्रा के दौरान हजारों कश्मीरियों ने तिरंगा उठाया था। आतंकी प्रभावित जिलों में भी तिरंगा उठा था। मोदी ने भाजपा के कुछ लोगों के साथ झंडा फहराया लेकिन हमनें कश्मीर के लाखों लोगों के साथ झंडा फहराया।

शादी समारोह में चले लाठी-डंडे और धारदार हथियार, जांच पड़ताल में जुटी पुलिस

प्रात : किरण, संवाददाता

बछरायूं।औद्योगिक नगरी क्षेत्र के मोहल्ला सुल्तान नगर का रहने वाला युवक शनिवार की रात शादी समारोह में शामिल होने के लिए बछरायूं गया हुआ था। इस दौरान वहीं के रहने वाले कुछ युवकों से उसकी कहासुनी हो गई। गुस्से में आए दबंग युवकों ने धारदार हथियार से युवक पर जानलेवा हमला बोल दिया।जिसका लाइव वीडियो रविवार की सुबह सोशल मीडिया पर वायरल हुआ सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची जांच पड़ताल में जुटी। प्राप्त जानकारी के अनुसार थाना क्षेत्र के मोहल्ला सुल्तान नगर के रहने वाले अल्तमस पुत्र इसरार अहमद ने बताया है कि वह शादी समारोह में शामिल होने के लिए बछरायूं थाना क्षेत्र में गया था।इस दौरान सब लोग शादी की मस्ती में झूम रहे थे।तभी वहीं के रहने वाले कुछ दबंग लोगों से अल्तमस की कहासुनी हो गई। गुस्से में आए दबंग लोगों ने धारदार हथियार से युवक पर जानलेवा हमला बोल दिया। जिसका लाइव वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है।वहां मौजूद लोगों ने बीच-बचाव कराया तब जाकर मामला शांत हुआ। पुलिस ने मामले में जांच पड़ताल शुरू कर दी और घायल का मेडिकल कराया जा रहा है। बछरायूं थाना प्रभारी राजेश कुमार तिवारी ने बताया है कि मारपीट की घटना का मामला संज्ञान में है, जांच के बाद कार्रवाई की जाएगी।

होमगार्ड के साथ धक्का-मुक्की और गाली गलौज,मुकदमा दर्ज

सैदनंगली।थाना क्षेत्र में होमगार्ड के साथ धक्का-मुक्की करने एवं गाली गलौज करने का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। वहीं,वीडियो वायरल होने के बाद पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ संगीन धाराओं में मुकदमा दर्ज किया है। पुलिस आरोपियों की तलाश में जुटी है।गौरतलब है कि थाना सैदनगली में होमगार्ड के साथ दबंग युवक द्वारा धक्का-मुक्की करने व गाली गलौज देने का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ है। वायरल वीडियो में दंपत्ति होमगार्ड के साथ धक्का-मुक्की एवं गाली गलौज करते नजर आ रहे हैं। होमगार्ड के साथ धक्का-मुक्की एवं गाली गलौज करने का वीडियो वहीं मौजूद किसी व्यक्ति द्वारा बनाकर सोशल मीडिया पर वायरल कर दिया गया।वीडियो वायरल होने के बाद थाना पुलिस हरकत में आ गई। पुलिस ने आरोपी दबंग युवक एवं उसकी पत्नी के खिलाफ संगीन धाराओं मुकदमा दर्ज कर तलाश शुरू कर दी है। मामलें में थानाध्यक्ष रणवीर सिंह ने बताया कि आरोपी अब्दुल रहमान एवं उसकी पत्नी के खिलाफ संगीन धाराओं में मुकदमा दर्ज कर लिया है। आरोपियों को गिरफ्तार करने के लिए लगातार दबिश दी जा रही है।

युवक ने जहर खाकर आत्महत्या का प्रयास किया

मंडी धनौरा।युवक ने जहर खाकर आत्महत्या करने की कोशिश की आनन फानन में युवक को निजी चिकित्सक के यहां भर्ती कराया गया।नगर के एक मौहल्ला निवासी युवक ने जहर खाकर आत्महत्या करने का प्रयास किया। जिससे युवक की हालत बिगड़ गई। आनन फानन में युवक को निजी चिकित्सक के यहां भर्ती कराया गया। जहां उपचार के बाद युवक की हालत में सुधार बताया जा रहा है। सूत्रों के अनुसार मामला प्रेम प्रसंग से जुड़ा हुआ बताया जा रहा है। उधर मामले में पुलिस को सूचना नही दी गई है।

नगर में लड़खड़ाई ट्राफिक व्यवस्था, राहगीर परेशान

मंडी धनौरा।मुख्य मार्गो पर लंबा जाम लग गया।जाम लगने से राहगीरों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ा।कड़ी मशक्कत के बाद पुलिस ने जाम खुलवाया।नगर में जाम की समस्या आम हो गई है।

आए दिन नगर के मुख्य मार्गो पर जाम की समस्या सिर का दर्द बनी हुई है।रविवार को नगर की शेरपुर चुंगी पर लंबा जाम गया।जिससे यातायात व्यवस्था चरमरा गई।सड़क के दोनो और वाहनों की लंबी लंबी कतारें लग गई।जाम लगने से राहगीरों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ा।मौके पर पहुंची पुलिस ने कड़ी मशक्कत के बाद जाम को खुलवाया। जिसके बाद राहगीरों ने राहत की सांस ली।

कांग्रेस महाधिवेशन: राहुल गांधी ने भारत जोड़ो यात्रा की दिल छूने वाली यादों को किया साझा, कहा- हाथ पकड़ते ही समझा लोगों का दर्द

नवा रायपुर, एजेंसी। छत्तीसगढ़ के रायपुर में कांग्रेस महाधिवेशन के आखिरी दिन राहुल गांधी ने संबोधित किया। उन्होंने अधिवेशन को संबोधित करते हुए कहा कि चार महीने कन्याकुमारी से श्रीनगर तक भारत जोड़ो यात्रा हमने की। वीडियो में आपने मेरा चेहरा देखा, लेकिन मेरे साथ लाखों लोग चले थे। हर राज्य में चले। बारिश में गर्मी में, सर्दी में एक साथ हम सब चले। बहुत कुछ सीखने को मिला। अभी मैं जब वीडियो देख रहा था तो मुझे बातें याद आ रही थीं। वीडियो में आपने देखा होगा, पंजबा में एक मैकेनिक आकर मुझ से मिला। सालों की जो उसकी तपस्या थी, सालों का जो उसका दर्द था, जैसे ही मैंने उसके हाथ पकड़े, मैंने उसकी बात पहचान ली। वैसे ही लाखों किसान जैसे ही हाथ पकड़ते थे, जैसे ही गले लगते थे। एक ट्रांसमिशन सा हो जाता था। शुरूआत में बोलने की जरूरत होती थी। क्या करते हो, कितने बच्चे हैं। क्या मुश्किलें है। यह एक डेढ़ महीना चला। उसके बाद बोलने की जरूरत नहीं पड़ती थी। जैसे ही हाथ पकड़ा, गले लगे, सन्नाटे में एक शब्द नहीं बोला जाता था। मगर जो उनका दर्द था, उनकी मेहनत थी, एक सेकेंड में मुझे समझ आ जाया करती थी। उनसे जो मुझे कहना होता था बिना कुछ बोले वह समझ जाते थे।

राहुल गांधी ने कहा, आपने वह बोट देखी होगी केरल में। उस समय मैं जब मैं नाव में बैठा था। पूरी टीम के साथ था, मेरे पैर में भयंकर दर्द था। मैं उस फोटो में मुस्कुरा रहा हूं, लेकिन उस समय मुझे रोना आ रहा था। इतना दर्द था। मैंने यात्रा शुरू की, काफी फिट आदमी हूं। 10-12 किलोमीटर ऐसे ही दौड़ लेता हूं। घमंड था, मैंने सोचा था कि 10-12 किलोमीटर चल लेता हूं। तो 20-25 किलोमीटर चलने में कौन सी बड़ी बात है। मेरे दिमाग में यह बात थी। पुरानी चोट थी। कॉलेज में चोट लगी थी फुटबॉल खेलते समय। मैं दोड़ रहा था कि मैरे दोस्त में पीछे से अड़ंगी मार दी और घुटने में चोट लगी। दर्द गायब हो गया था सालों के लिए। और अचानक जैसे मैंने यात्रा शुरू की दर्द वापस आ गया। आप मेरे परिवार हो तो मैं आप से कह सकता हूं। सुबह उठता था तो सोचता था कि कैसे चला जाए, फिर उसके बाद सोचता था कि 25 किलोमीटर नहीं, 3500 किलोमीटरर चलना है कैसे चलूंगा। और फिर कंटेनर से उतरता था और चलना शुरू करता था। लोगों से मिलता तो पहले 10-15 दिन में जिसको अहंकार कह सकते हो, घमंड कह सकते हो वह सारा गायब हो गया। क्यों गायब हुआ? क्योंकि भारत माता ने मुझे मैसेज दिया कि देखो अगर तुम कन्याकुमारी से कश्मीर चलने निकले हो तो अपने दिल से अहंकार मिटा दो, घमंड मिटाओ नहीं तो मत चलो। मुझे यह बात सुननी पड़ी, मुझमें इतनी शक्ति नहीं थी कि मैं इस बात को ना सुनूं। और धीरे-धीरे मैंने यह ध्यान दिया कि मेरी आवाज चुप होती गई। पहले किसान से मिलता था मैं उसको अपने ज्ञान समझाने की कोशिश करता था, थोड़ी बहुत मुझमें जो जानकारी है, खेती के बारे में, मनरेगा के बारे में, खाद के बारे में, मैं कहने की कोशिश करता था। धीरे-धीरे यह सब बंद हो गया। शांति सी आ गई। और सन्नाटे में सुनने लगा। यह धीरे-धीरे बदलाव आया। और जब मैं जम्मू-कश्मीर पहुंचा तो मैं बिलकुल चुप हो गया। कांग्रेस सांसद ने आगे कहा, मेरी मां मंच पर यहीं बैठीं हैं, मैं छोटा सा था 1977 की बात है। चुनाव आया, मुझे चुनाव के बारे में मालूम नहीं था। मैं 6 साल का था। एक दिन घर में अजीब सा माहौल था। मैं मां के पास गया, मैंने मां से पूछा कि मां क्या हुआ? मां ने कहा कि हम घर छोड़ रहे हैं। तब तक मैं सोचता था कि वह घर हमारा था। मैंने अपनी मां से पूछा कि मां हम अपने घर को क्यों छोड़ रहे हैं? पहली बार मेरी मां ने मुझे बताया कि यह घर हमारा नहीं है।

वर वधू को आशीर्वाद देने अमरोहा पहुचें उत्तराखंड के पूर्व मुख्यमंत्री भगत सिंह कोश्यारी

- नौगावां विधानसभा क्षेत्र के गांव गालिब बढ़ा में हुआ रिसेप्शन कार्यक्रम
- उत्तराखंड के पूर्व सफल मुख्यमंत्री भगत सिंह कोश्यारी हैलिकॉप्टर से गांव पहुचें
- शिक्षक विधायक हरिसिंह ढिल्लों, जिलापंचायत अध्यक्ष ललित तवंर एवं अनुज चौधरी ने गर्मजोशी से किया स्वागत

प्रात : किरण संवाददाता

नौगावां सादात। विधानसभा क्षेत्र के गांव गालिब बड़ा मे आयोजित पूर्व ग्राम प्रधान अनुज चौधरी के शादी रिसेप्शन कार्यक्रम में महाराष्ट्र के पूर्व राज्यपाल/उत्तराखंड के सफल पूर्व मुख्यमंत्री भगत सिंह कोश्यारी पहुचें।यहां उन्होंने वर वधु को आशिर्वाद देते हुए सुखद वैवाहिक जीवन की कामना की। गौरतलब है कि जनपद अमरोहा की विधानसभा नौगावां सादात क्षेत्र के गांव गालिब बढ़ा मे रविवार को पूर्व ग्राम प्रधान के शादी रिसेप्शन का कार्यक्रम आयोजित हुआ।जिसमें जनपद भर के सत्तारूढ़ एवं विपक्षी नेता मौजूद रहे। कार्यक्रम में क्षेत्र के दर्जनों गांवों के लोग को भी निमंत्रण किया गया था।जिन्होंने वहां पहुंच कर कार्यक्रम की शोभा बड़ाई। इसी कार्यक्रम मे चार चाँद लगाने के लिए उत्तराखंड के पूर्व मुख्यमंत्री भगत सिंह कोश्यारी भी वर वधु को आशिर्वाद देने पहुंचे।उनके पहुचने से पहले जनपद के प्रशासन के उनके सुरक्षा व्यवस्था के मुक्कमल इंतजाम भी किए थें।उनके वहां पहुचने पर शिक्षक विधायक हरि सिंह ढिल्लों, जिला पंचायत अध्यक्ष ललित तवर ग्राम प्रधान अनुज चौधरी व कार्यकताओं ने गर्मजोशी के साथ फूल मालाओं से उनका स्वागत किया।पूर्व मुख्यमंत्री हैलिकॉप्टर से तीन बजें कार्यक्रम में पहुचें।जहां उनका कार्यक्रम में हजारों को बेसब्री से इंतजार कर रहे थे। उनके कार्यक्रम में पहुचते ही खुशी का माहौल पैदा हो गया। हर कोई उन्हें देखने को उमड़े। पुलिस ने काफी मक्कसत से हालात पर काबू पाया।भगत सिंह कोश्यारी ने वर वधू पक्ष को आशीर्वाद देकर बुके भेंट कर हेलीकॉप्टर द्वारा वापस चले गए। इनकी तैयारी में 2 दिन से पुलिस प्रशासन जुड़ा हुआ था जाने के बाद पुलिस प्रशासन ने राहत की सांस ली।

निर्देश गूगल मीट में पुलिस महानिरीक्षक बरेली परीक्षेत्र पुलिस उपमहानिरीक्षक मुरादाबाद परिक्षेत्र एवं जोन के समस्त पुलिस अधीक्षक शामिल रहे....

गूगल मीट के माध्यम से अपर पुलिस महानिदेशक ने दिये पुलिस अधिकारियों को निर्देश

प्रात : किरण, संवाददाता

बिजनौर। बरेली जोन के पुलिस महानिदेशक पीसी मीणा ने जोन के पुलिस अधिकारियों को गूगल मीट के माध्यम से वीडियो कान्फ्रेंसिंग कर आगामी त्यौहारों पर सतर्क रहने के निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि होली एवं शबे ए बारात को सकुशल सम्पन्न कराने के लिये पुलिस अधिकारी स्थिति पर कडी निगाह रखें।

कहीं कोई गडबडी न हो यदि कोई खुराफात करने का प्रयास करे तो उसके विरूद्ध कडी कार्यवाही की जाये। प्राप्त जानकारी के अनुसार गूगल मीट में पुलिस महानिरीक्षक बरेली परीक्षेत्र पुलिस उपमहानिरीक्षक मुरादाबाद परिक्षेत्र एवं जोन के समस्त पुलिस अधीक्षक शामिल रहे। श्री मीणा ने पुलिस अफसरों को निर्देश दिये कि थानों के त्यौहार रजिस्टरों का अवलोकन कर लिया जाये। होली दहन स्थल का थाना प्रभारी भौतिक सत्यापन कर सहसुनिश्चित कर लें कि उस जगह विवाद की स्थिति तो नहीं। मिश्रित आबादी वाले क्षेत्रों में प्रभावी गश्त की जाये। रंजिशन हत्या के प्रकरणों व धार्मिक भावनाओं से जुडे प्रकरणों को सूचिबद्ध कर प्रभावी निरोधात्मक कार्यवाही की जाये।

इसके अतिरिक्त श्री मीणा ने निर्देश दिये कि सोशल मीडिया पर भ्रामक व आपत्तिजनक पोस्ट का तत्काल खण्डन किया जाये। सोशल मीडिया सेल लगातार मानिटरिंग करे।

जनता कॉलोनी का उद्घाटन समारोह हुआ आयोजित, फीता काटा

नांगल सोती। नांगल मंडावली मार्ग पर ग्राम सैदपुरी के सामने शहजाद अली व नईम मुंशी द्वारा जनता कालोनी का निर्माण कार्य शुरू कराया गया। जिसके उद्घाटन समारोह में उपस्थित हुए भारतीय किसान यूनियन लोकशक्ति के बिजनौर जिलाध्यक्ष चै. वीर सिंह सहरावत ने फीता काटकर जनता कालोनी का उद्घाटन किया। उद्घाटन समारोह में भाकियू लोकशक्ति के जिला मिडिया प्रभारी अरूण कुमार, शहजाद अली, नईम मुंशी, डॉ. लड्डन, वसी हैदर ,धर्मपाल सिंह, जहूर अहमद, असलम अली, दिलशाद, अजर अली सहित बड़ी संख्या में अन्य क्षेत्रवासी मौजूद रहे।

पुलिस ने दबोचे तीन शातिर बदमाश

किरतपुर। रविवार को थाना किरतपुर पुलिस द्वारा तीन बदमाशों शादिक पुत्र साइम निवासी मोहल्ला लडापुर तथा इसमाइल पुत्र यासीन निवासी मोहल्ला लडापुर कस्बा व थाना किरतपुर तथा नसीम पुत्र साइम निवासी ग्राम झिर थाना कोतवाली शहर जनपद बिजनौर को धारा 151 सीआरपीसी के अन्तर्गत गिरफतार किया गया।

तीन अभियुक्तों को किया गया गिरफ्तार

मंडावर। रविवार को थाना मंडावर पुलिस द्वारा अभियुक्त मदनपाल पुत्र ब्रिदरं निवासी रायपुर वेरी साल थाना मंडावर तथा शुमित पुत्र शेर सिंह निवासी रायपुर वेरी साल थाना मंडावर तथा सुधीर कुमार पुत्र पप्पू सिंह निवासी जहांगीरपुर थाना मंडावर को अन्तर्गत धारा 151, 107, 116 सीआरपीसी के अन्तर्गत गिरफ्तार कर कोर्ट में पेश किया गया।

मजनुओं को पुलिस ने सिखाया सबक

नहटौर। मुख्यमंत्री उ0प्र0 द्वारा नारी सुरक्षा, नारी सम्मान, नारी स्वावलंबन के लिये चलाए जा रहे अभियान मिशन शक्ति के अन्तर्गत थाने पर गठित पुलिस टीम द्वार अपने थाना क्षेत्र में बालिकाओं व छात्राओं को मिशन शक्ति अभियान के संबन्ध में जागरूक किया गया तथा हेल्पलाईन नंबर 102, 108, 112, 181, 1076, 1098, 1090 की जानकारी दी गई। इस अवसर पर सडकों पर तथा स्कूल व कॉलेजों के आसपास बेवजह घूम रहें मनचलों पर शिकंजा कसा गया।

महिलाओं व युवतियों को मिशन शक्ति के प्रति किया जागरूक

बढापुर। मुख्यमंत्री उ0प्र0 द्वारा नारी सुरक्षा, नारी सम्मान, नारी स्वावलंबन के लिये चलाए जा रहे अभियान मिशन शक्ति के अन्तर्गत थाने पर गठित पुलिस टीम द्वार अपने थाना क्षेत्र में बालिकाओं व छात्राओं को मिशन शक्ति अभियान के संबन्ध में जागरूक किया गया तथा हेल्पलाईन नंबर 102, 108, 112, 181, 1076, 1098, 1090 की जानकारी दी गई। इस अवसर पर सडकों पर तथा स्कूल व कॉलेजों के आसपास बेवजह घूम रहें मनचलों पर शिकंजा कसा गया।

हैल्प डैस्क के प्रति चलाया अभियान

हल्दौर। मुख्यमंत्री उ0प्र0 द्वारा नारी सुरक्षा, नारी सम्मान, नारी स्वावलंबन के लिये चलाए जा रहे अभियान मिशन शक्ति के अन्तर्गत थाने पर गठित पुलिस टीम द्वार अपने थाना क्षेत्र में बालिकाओं व छात्राओं को मिशन शक्ति अभियान के संबन्ध में जागरूक किया गया तथा हेल्पलाईन नंबर 102, 108, 112, 181, 1076, 1098, 1090 की जानकारी दी गई। इस अवसर पर सडकों पर तथा स्कूल व कॉलेजों के आसपास बेवजह घूम रहें मनचलों पर शिकंजा कसा गया।

अवैध रुप से खनन एवं ओवरलोड दो डम्फरों को पकड़ा गया

नूरपुर। पुलिस अधीक्षक बिजनौर के निर्देशन व अपर पुलिस अधीक्षक ग्रामीण, उपजिलाधिकारी चांदपुर व क्षेत्राधिकारी चांदपुर के कुशल पर्यवेक्षण में थाना नूरपुर पुलिस द्वारा अवैध रुप से खनन एव ओवरलोड दो डम्फरो को पकडा गया। इसके सम्बन्ध में उपजिलाधिकारी चांदपुर व खनन निरीक्षक एवं संभागीय परिवहन अधिकारी को विधिक कार्यवाही करने हेतु थाना नूरपूर पुलिस द्वारा रिपोर्ट प्रेषित की गई।

सीओ ने किया पुलिसकर्मियों के साथ पैदल गश्त

नजीबाबाद। गजेन्द्र पाल सिंह पुलिस क्षेत्राधिकारी नजीबाबाद व प्रभारी निरीक्षक राधेश्याम द्वारा कस्बा नजीबाबाद क्षेत्रान्तर्गत आगामी त्यौहारों को सकुशल सम्पन्न कराने व कानून व्यवस्था के दृष्टिगत पैदल गस्त की गई तथा आमजन को सुरक्षा का एहसास दिलाया गया।

संक्षिप्त खबरें

शहर वासियों के लिए G S क्लैशन का उद्घाटन नैयर अहमद ने किया

गया।शहर के टावर चौक के मुख्य सड़क मार्ग पर स्थित कृष्ण मिष्ठान भंडार के सामने जी एस क्लैशन का उद्घाटन वार्ड पार्षद 21 नैयर अहमद ने फीता काटकर किया गय है। इस मौके पर शहर के कई गणमान्य लोग उपस्थित हुए हैं। इस मौके पर वार्ड पार्षद नैयर अहमद ने कहा कि इस तरह के कपड़े कि दुकान अब शहर बहुत खुल रहे हैं। होली जैसे त्यौहार में हर लोगों के लिए नये कपड़ों का रेज उपलब्ध है।लेकिन जी एस क्लैशन सभी बड़े से बुढे तक के लेटेस्ट डिजाइन के कपड़े एक जगह आसानी से मिल जाएगे, महिलाओं के लिए भी बहुत सारे नये आकषर्क डिजाइन के कपडे इस साप गया जिला वासियों को मिल जाएगे,भिड भाड से बचकर अच्छी तरह से खरिदारी कर सकते हैं शहर और गया जिला वासि। इस अवसर पर कैसर खान,एमडी परवेज रिहान,दिलीप,रंजीत,राजा, नन्हे भाई, और काफी संख्या में लोग उपिस्थत थे।

सेवानिवृत पुलिस अधिकारी का हुआ विदाई

मधुबनी/खजौली। खजौली थाना पर शनिवार को सेवानिवृत पुलिस अधिकारी एसआइ सुरेश प्रसाद सिंह का विदाई समारोह का आयोजन थानाध्यक्ष अजीत प्रसाद सिंह के नेतृत्व में किया गया। समारोह की अध्यक्षता बीडीओ मनीष कुमार ने की। जबकी मंच संचालन हेमंत ठाकुर ने किया। जिसमें उन्हें मिथिलांचल की रीतिरिवाजानुसार पाग दोपटा, अंगवस्त्र एवं फूल मालाओं से सम्मानित किया गया। वक्ताओं ने उनके गुणों का बखान कियां कहा कि इनका कार्यकार्य काफी सराहनीय रहा। मौके पर पुलिस इंस्पेक्टर राजकिशोर शर्मा, बीडीओ मनीष कुमार, सीओ मनीष कुमार, कलुआही थानाध्यक्ष मृत्युजय कुमार जिप सदस्य दिपक कुमार सिंह, मिथिलावादी पार्टी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष दिलीप कुमारएसआइ मदन उरांव, कविता माटे, मुखिया अमरेंद्र कुमार सिंह उर्फ मुन्ना सिंह, सीता शरण, दिलजीत कुमार सिंह उर्फ बबलु सिंह रंजीत कुमार सहित अन्य मौजूद थे।

हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर पर सास-बहु सम्मेलन आयोजित।

मधुबनी/खजौली। खजौली हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर दुर्गास्थान ठाहर परिसर स्थित आंगनबाड़ी केंद्र संख्या 156 पर सास बहू सम्मेलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का आयोजन एएनएम नीतू कुमारी, सीएसओ खुशबू कुमारी के नेतृत्व में हुआ। इस कार्यक्रम के तहत सास-बहु से संबंधित बिन्दुओं पर विस्तार से चर्चा हुई। इन दोनो के बीच होने वाली नोक-झोक पर भी चर्चा की गई। सम्मेलन में उपस्थित सौभाग्यवती सास-बहु को सम्मान देकर प्रोत्साहित किया गया। जिसमें सौन्दर्य प्रसाधन की वस्तु ऐनक, सिंदूर, कंधा, बिंदी, बैलून,काजल, एवं फल दिया गया। इस दौरान एएनएम नीतू कुमारी, सीएचओ खुशबू कुमारी आंगनबाड़ी सेविका निभा झा ने सभी सास बहू को स्वास्थ्य संबंधित जानकारी दी। फैमली प्लानिंग की नारा हम दो-हमारे दो को समझाते हुए कहा कि छोटा परिवार सुखी परिवार होता है। उन्होनें कहा दो बच्चों के बीच तीन वर्षो का अंतराल जरूरी है। इस बीच फैमली प्लानिंग के उपायों को समझाया, उसे अपनाने को कहा। मौके पर एएनएम नीतू कुमारी, सीएचओ खुशबू कुमारी, आंगनवाड़ी सेविका निभा झा, बबीता देवी,आशा नीलम देवी, नगीना देवी, मंजू कुमारी, रीना कुमारी, उर्मिला देवी, उपस्थित थे।

14 अप्रैल को सम्पूर्ण बिहार में अंबेडकर जयंती मनाएगी जदयू, अभी से तैयारी शुरू

गया।बिहार प्रदेश जदयू ने अभी से अंबेडकर जयंती को लेकर तैयारी शुरू कर दी है। पार्टी कैलेंडर का पालन करते हुए एवं बिहार प्रदेश अध्यक्ष उमेश कुशवाहा जी के निदेर्शानुसार 14 अप्रैल को आयोजित किए जाने वाले कार्यक्रमों की रूप-रेखा बना ली गई है। इसी क्रम में आज जदयू आमस प्रखंड के कई जदयू नेताओं के साथ एक बैठक आयोजित की गई जिसमें आगामी 14 अप्रैल को होने वाले अम्बेडकर जयंती की तैयारी को लेकर रूप रेखा तैयार की गई है। इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से पूर्व मंत्री बिनोद प्रसाद यादव, शेरघाटी प्रखंड प्रभारी वारिस अली खान, प्रखंड प्रभारी दिलीप यादव, आमस प्रखंड अध्यक्ष रामवृक्ष प्रसाद, अनुमंडल प्रभारी, रौशन मांझी, रंधीर रजक, पूर्व मुखिया कृष्ण यादव, जय प्रकाश मांझी, पूर्व जिला परिषद सदस्य सियाराम, मो. अंजर, महेश मंडल, राजेंद्र यादव समेत कई जदयू नेता उपस्थित थे।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर हजारों की संख्या में महिलाएं कार्यकर्ता जाएगी पटना : मनोरमा देवी

मुख्यमंत्री ने महिलाओं के लिए बहुत काम किए – जिलाअध्यक्ष

प्रात : किरण संवाददाता

गया। रविवार को जदयू कार्यालय नागमतिया रोड गया में महिला जिला संजोजक मनोरमा देवी,जिला अध्यक्ष अभय कुशवाहा,निवर्तमान महिला जिला अध्यक्ष जूली मेहता के नेतृत्व में 5 मार्च को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पटना जदयू कार्यालय कपूर्री सभागार में मनाने की तैयारी बैठक की गई है। जदयू पार्टी द्वारा तय किया गया है की 8 मार्च को होली त्योहार के कारण 5 मार्च को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया जाएगा। जिला अध्यक्ष अभय कुशवाहा ने कहा मुख्यमंत्री नीतीश कुमार महिलाओं की उत्थान के लिए बहुत काम किए हैं, सरकारी नौकरी में 35% आरक्षण, पंचायत एवं नगर निकाय चुनाव में 50% आरक्षण, जीविका के लिए किया गया काम मुख्यमंत्री नीतीश कुमार एक मिशाल है। आगे उन्होंने बताया की गया जिला से 500 महिला 5 मार्च को पटना पहुंचेगी। इस कार्यक्रम की संजोजक पूर्व विधानपरिषद सदस्य मनोरमा देवी ने कहा कि महिलाएं 5 मार्च को पटना कार्यक्रम में चलने के लिए काफी उत्साहित हैं। गया जिला से प्रत्येक प्रखंड से पार्टी एवं पंचायत की 10 महिला प्रतिनिधि सभा में उपस्थित रहेंगी। इस अवसर पूर्व महिला अध्यक्ष सोनम दास, पूनम कुशवाहा, कोच प्रखंड अध्यक्ष रामती देवी, परैया अध्यक्ष रिंकी कुमारी, नगर प्रखंड अध्यक्ष बेबी देवी,खिजरसराय अध्यक्ष रेखा देवी, वार्ड पार्षद ममता किरण, सुशीला देवी,गीता देवी, कलावती देवी,रूबी कुमारी,माधुरी देवी,अनिता देवी, गीता वर्मा, संगीता कुमारी, ननगी देवी ,बबिता देवी एवं पार्टी की कई महिला साथी उपस्थित थी।

सात दिवसीय जन सहभागिता मोटर साइकिल रैली जन सम्पर्क अभियान हुआ समापन

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी/खुटौना। बिहार पुलिस महानिदेशक राघवेंद्र सिंह भट्टी के दिशा निर्देश में पहली बार पुलिस स्थापना दिवस से पुर्व बिहार पुलिस द्वारा सात दिवसीय जन सहभागिता मोटर साइकिल रैली के माध्यम से आम जनों के बीच जाकर उनसे संपर्क साधने की कोशिश की गई।बताते चलें कि इस अभियान के तहत पुलिस लोगों के बीच जाकर उनकी समस्याओं, पुलिस के प्रति आम जनों की अपेक्षाओं व लोगों द्वारा दिए जा रहे महत्वपूर्ण सुझावों को गंभीरता पूर्वक अध्ययन कर रहे थे।

इस संदर्भ में लौकहा थानाध्यक्ष संतोष कुमार मंडल ने विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि उनके थाना क्षेत्र में पड़ने वाले सात पंचायतों को मिलाकर कुल 45 से अधिक गांवों में पुलिस की एक टीम व पदाधिकारियों ने जाकर लोगों से संवाद स्थापित किया। वहीं उनकी समस्याओं की भी जानकारी लेते हुए मिलने वाले सुझावों से अवगत कराया। आगे बताते हुए उन्होंने कहा कि लौकहा पुलिस आम नागरिकों की सेवा व सुरक्षा में सदैव तत्पर रहती है वहीं लोगों को अपराध व भय मुक्त समाज प्रदान करने की दिशा में सार्थक प्रयास करती है।आम लोगों से अपील करते हुए थानाध्यक्ष ने कहा किसी भी प्रकार के अपराध, तस्करी अथवा अन्य प्रकार की सूचना लोग निर्भीक होकर उन्हें दें और ऐसे सभी शिकायतों पर पुलिस कारवाई सुनिश्चित करेगी।

साथ ही उन्होंने अपील करते हुए कहा आम लोगों को भी पुलिस के प्रति सहयोगात्मक रवैया अपनाया जाना चाहिए व किसी भी परिस्थिति में नकारात्मक चीजों उग्र भीड़ प्रदर्शन अफवाहों आदि से बचना और बचाना चाहिए। फिल्हाल आज जन सहभागिता रैली के समापन तिथि पर उन्होंने सभी थाना क्षेत्र वासियों के सहयोग के प्रति आभार जताया और कल मनाए जाने वाले बिहार पुलिस स्थापना दिवस को लेकर थाना के सभी पुलिस कर्मियों व आम लोगों को शुभकामनाएं दीं। वहीं लौकहा पुलिस के इस प्रयास व रैली के बीच लोगों से संवाद स्थापित करने को लेकर इसे बिहार पुलिस की एक अच्छी पहल बताते हुए कारमेघ उत्तरी के मुखिया संजीव कुमार साह माधोपुर पंचायत के मुखिया अरविंद गुरमैता पुर्व मुखिया लाल बाबू साह पुर्व मुखिया राजेंद्र ठाकुर वासुदेव पुर पंचायत के मुखिया प्रतिनिधि योगेंद्र प्रसाद साह कारमेघ मध्य के मुखिया सह प्रखंड मुखिया संघ के अध्यक्ष कपिलेश्वर यादव कारमेघ उत्तरी के सरपंच रॉबिन प्रसाद पैक्स अध्यक्ष विनोद सिंह समेत अन्य सभी लोगों व ग्रामीणों उपस्थित होकर प्रशंसा की।

बिहार पुलिस दिवस पर जयनगर थाना परिसर में प्रोजेक्टर के माध्यम से जनसंवाद कार्यक्रम आयोजित

मुख्यमंत्री के संवाद कार्यक्रम को सुनने को लेकर विद्यालय के छात्रों और पुलिस बल शामिल

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी/जयनगर । जयनगर बिहार पुलिस दिवस के अवसर पर मुख्यमंत्री नीतीश कुमार डीजीपी आर. एस. भट्टी समेत अन्य पदाधिकारियों के जन सवांद कार्यक्रम को लेकर थाना परिसर में पुलिस पदाधिकारियों और कर्मियों एवं विद्यालय के बच्चों प्रोजेक्टर के माध्यम पटना से लाइव टेलीकास्ट का प्रसारण देखने और सुनने को लेकर कार्यक्रम आयोजित की गई। प्रसारण के माध्यम से उपस्थित पुलिस कर्मियों और छात्रों ने बिहार पुलिस दिवस के कार्यक्रम को देखा और सुना। कार्यक्रम के माध्यम से पुलिस दिवस की शुभकामनाएं दी गई। बिहार पुलिस का इतिहास स्थापना दिवस, वर्तमान में पुलिस क्या क्या कार्य कर रही हैं और आगे क्या क्या विजन है, पुलिस ले लिए चुनौतियां क्या है बिहार पुलिस में महिला सशक्तिकरण के तहत की गई भतीर्या उनके द्वारा किये गये सराहनीय कार्य, महिला थाना और हेल्प डेस्क , परामर्श, शिकायत, सुझाव को लेकर बेवसाईट की जानकारी आम जनो और महिलाओं एवं बाल सुरक्षा हमारी पहली प्राथमिकता , सोशल मीडिया की जानकारी, जन जन से पुलिस का जुड़ाव, पुलिस बेहतर ढंग से कार्य कर रही हैं। जन सहयोग और पुलिस के द्वारा जन जागरूकता अभियान के माध्यम से शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में जन संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया। पुलिस टीम ने पुलिस आपकी सेवा में है पुलिस आपके सहयोग और सुरक्षा को लेकर सदैव तंतपर है को लेकर आम जनो के सुझाव को लेते हुए विभिन्न मुद्दों समस्याओं को सुना और विस्तृत जानकारी ली गई और उन पहलुओं पर पुलिस कार्य कर रही हैं। लोगों के बीच पुलिस के कार्यो की विस्तृत जानकारी दी डायल 112 , बेवसाइट , महिला थाना, पुलिस थाना का मोबाईल नम्बर पम्पलेट के माध्यम से वितरण कर साईबर फ्रॉड से बचने को लेकर भी आम लोगों को जागरूक किया । पुलिस की पहली प्राथमिकता आम लोगो की सुरक्षा , कानून व्यवस्था, सकारात्मक फल, अपराध नियंत्रण की भी जानकारी दी गई। 27 फरवरी को स्थापना दिवस पर पुलिस के द्वारा संकलन लेते हुए सुरक्षित सशक्त बिहार हो रक्त दान शिविर कई जनउपयोगी कर्यो को किया जायेगा। वीडियो फिल्म के माध्यम से सुना। अनुमण्डल पुलिस पदाधिकारी विपल्व कुमार ने कहा कि यह दिवस आम जनो को समर्पित हैं शुभकामनाएं दी। पुलिस बेहतर कार्य करने वाले आम लोगो को सम्मानित करती हैं। मौके पर डीएसपी विपल्व कुमार, थाना अध्यक्ष अमित कुमार, पुलिस पदाधिकारी सुप्रिया कुमारी, धिरेन्द्र कुमार सिंह, वीपीन कुमार सिंह, बी.डी. राम, रौशन कुमार, अजित कुमार, भरत कुमार, समेत कई पुलिस पदाधिकारी और पुलिस कर्मी एवं विद्यालय छात्रों ने कार्यक्रम में उपस्थित थे।

सीपीआईएम के कार्यकताओं की बैठक और कार्यकर्ताओं के द्वारा लेकर केंद्र सरकार का पुतला दहन किया गया

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी/जयनगर। मधुबनी ज़िला के जयनगर मे सीपीआईएम के कार्यकताओं ने विभिन्न मांगो जनसमस्याओं को लेकर स्टेशन चौक के समीप केन्द्र सरकार का पुलता दहन किया गया। वक्तताओं ने कहा कि आज देश गंभीर संकट के दौड़ से गुजर रहा हैं। गरीबी बेरोजगारी तथा असमानताओं के साथ जनता की रोजी-रोटी पर भारत सरकार का लगातार हमला जारी हैं। वैश्विक भूख सूचकांक में भारत की स्थिति बदतर हैं। धार्मिक और जातीय पहचान के आधार पर लोगों की एकता को तोड़ा जा रहा हैं। सार्वजनिक सम्पदा मुट्ठीभर चहेते पूंजीपतियों के हाथों में सौंपी जा रही हैं। केंद्र सरकार के द्वारा जनता पर लगातार जारी हमलों के खिलाफ भारत की कम्युनिस्ट पार्टी मार्क्सवादी के द्वारा 22 से 28 फरवरी तक देश भर में विरोध कार्यक्रम का आयोजन कर रही हैं। इसी क्रम में वकालत खाना परिसर में लोकल कमिटी की बैठक शिव कुमार यादव की अध्यक्षता में हुई। बैठक में पार्टी सचिव कुमार राणा प्रताप सिंह ने सांगठनिक रिपोर्ट सभी सदस्यों के समक्ष पेश किया तथा 15 मार्च तक हर हाल में पार्टी नवीकरण के साथ हरेक ब्रांच में 5 नये साथी को पार्टी में जोड़ने जनसंगठन की सदस्यता अभियान को तेज करने की बात कही। बैठक में कृष्ण देव यादव,बरही ब्रांच सचिव शिव कुमार यादव,पवन कुमार यादव, शत्रुधन साह,मीना देवी, रेणु देवी, सुनील कुमार सिंह,गुरुदेव मुखिया,कृष्ण कुमार दास, कन्हैया कुमार चौधरी, अधिवक्ता मुकेश कुमार , पार्टी सचिव कुमार राणा प्रताप सिंह समेत कई कार्यकताओं ने भाग लिया। बैठक समाप्ति के बाद भारत सरकार का पुतला दहन जयनगर के स्टेशन चौक जयनगर पर किया गया पुतला दहन के माध्यम से मांग किया की रोजगार पैदा करने वाली ढांचागत परियोजनाओं में सार्वजनिक निवेशों को बढ़ाया जाय। 05 किलो मुफ्त राशन के साथ-साथ 05 किलो सस्ता खाद्यान्न वितरण बहाल किया जाय।

मजदूरी में बढ़ोतरी के साथ मनरेगा के लिए आबंटन में भारी बढ़ोतरी की जाय।सम्पदा तथा पैतृक सम्पदा कर लगाया जाय। अमीरों को दी गयी रियायतों को वापस लिया जाय और अति-धनिकों पर अलग से एक कर लगाया जाय।खाद्य सामग्री तथा दवाओं समेत अन्य आवश्यक वस्तुओं पर से जी.एस.टी. हटायी जाय। किसान के साथ वादाखिलाफी बन्द करो तथा एमएसपी का कानूनी दर्जा देने। देवधा जयनगर के बीच संचालित बस एवं टेम्पू चालक द्वारा मनमाना भाड़ा वसूली पर रोक लगाने की मांग स्थानीय पदाधिकारी से की हैं।

भारत नेपाल जिला स्तरीय सीमा समन्वय समिति की बैठक अत्यंत सौहार्दपूर्ण वातावरण में हुई आयोजित

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी। नेपाल के जनकपुरधाम में आयोजित बैठक में मानव तस्करी शराब के भारतीय सीमा में प्रवेश पर नियंत्रण मादक पदार्थो की तस्करी नो मेंस क्षेत्र में अतिक्रमण जाली नोटों पर अंकुश अपराधियों की धड़पकड़ सहित कई विषयों पर हुई विस्तृत चर्चा।भारत नेपाल संबंध सदियों से प्रगाढ़ जिलाधिकारी।जिलाधिकारी अरविन्द कुमार वर्मा के नेतृत्व में जिले का दल दिनांक 25 जनवरी 2023 को होटल यात्री निवास जनकपुर धाम नेपाल में आयोजित भारत नेपाल जिला स्तरीय सीमा समन्वय समिति की बैठक में शामिल होने जनकपुरधाम पंहुचा।अत्यंत सौहार्दपूर्ण वातावरण में आयोजित इस बैठक के दौरान विभिन्न मुद्दों पर द्विपक्षीय चर्चा हुई। जिनमें मानव तस्करी शराब के भारतीय सीमा में प्रवेश पर नियंत्रण बॉर्डर पर इंक्रोचमेंट जाली नोटों पर अंकुश अपराधियों की धड़पकड़ सहित अन्य मुद्दे शामिल थे।जिलाधिकारी अरविन्द कुमार वर्मा ने कहा कि बैठक अत्यंत सौहार्दपूर्ण वातावरण में आयोजित हुई। जिसके लिए वे नेपाल के अधिकारियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करते हैं। उ

न्होंने कहा कि भारत और नेपाल के संबंध सदियों से अत्यंत प्रगाढ़ रहे हैं। ऐसे में हमेशा से दोनों ही पक्ष विभिन्न मुद्दों पर आपसी बातचीत से सभी बातों का हल निकाल लेते हैं। उन्होंने बताया कि अपराधियों पर अंकुश लगाना मानव तस्करी को रोकना नो मैन्स लैंड अतिक्रमण शराब के धंधेबाजों के धड़पकड़ सहित कई मुद्दों पर आपसी सहमति जताई गई है।

कोतवाली थाना क्षेत्र में बम डिफ्यूज करते समय हुआ विस्फोट, में घायल हुए कर्मी को अस्पताल में भर्ती

प्रात : किरण संवाददाता

गया। गया के कोतवाली थाना क्षेत्र मे एक बढी खबर सामने आ रही है जहा बम डिफ्यूज करने के दौरान हुआ विस्फोट हो गया जिसमें पाच पुलिसकर्मी जख्मी हो गए हैं।इन सभी पुलिसकर्मियों को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। मिली जानकारी के अनुसार कोतवाली थाना क्षेत्र में यह हादसा हुआ है।इस मौके पर कोतवाली थाना के साथ ही सीनियर पुलिस अधिकारी पहुंचे हैं। इस संबंध में सिटी एसपी अशोक प्रसाद ने बताया कि पुलिस को सूचना मिली थी कि कोतवाली थाना क्षेत्र के किरानी घाट मोहल्ला के समीप नदी किनारे बम रखा गया हैं। जिसके बाद बीएमपी के बम स्क्वायड के जवान एवं कोतवाली थाने की पुलिस मौके पर पहुंची है।जहां कुल 6 बम रखा हुआ पाया गया है उक्त बमों को डिफ्यूज करने के दौरान विस्फोट हो गया है।जिस कारण 5 पुलिसकर्मी घायल हो गए हैं वही डॉग स्क्वायड के अर्जुन कुमार पंडित एवं शिव प्रसाद पासवान गंभीर रूप से घायल हो गए है। और इसके अलावा कोतवाली थाना के विद्या प्रसाद, यादव प्रमोद कुमार एवं दिलीप कुमार पुलिसकर्मी घायल हो गए हैं इन गंभीर रूप से घायल पुलिसकर्मियों को शहर के अनुग्रह नारायण मगध मेडिकल अस्पताल में भर्ती कराया गया है।जहां उनका इलाज आईसीयू में चल रहा है। जबकि मामूली रूप से घायल पुलिसकर्मियों का इलाज शहर के जयप्रकाश नारायण अस्पताल में कराया गया है इस संबंध में उन्होंने कहा कि उक्त स्थल पर बम किसके द्वारा रखा गया ? और इसके पीछे क्या मंशा थी ? इसकी पूरी छानबीन की जा रही है।

बढती गर्मी को देखते हुए नगर आयुक्त ने शहर के जलापूर्ति दो समय करे

प्रात : किरण संवाददाता

गया। गया पुरे बिहार में बहुत ज्यादा गर्मी पड़ती है उसे अभी से ही गर्मी पडने के लक्षण को देखते हुए नगर निगम आयुक्त अभिलाषा शर्मा ने गया नगर निगम क्षेत्र में जलापूर्ति की समीक्षा करते हुए जलापूर्ति के सभी विभाग और इससे जुड़े इंजीनियर और ठेकेदार मौजूद थे। आयुक्त ने निर्देश बुडको को दिए कि सभी पंपिंग केन्द्र में दो समय जलापूर्ति सुनिश्चित करें, इसके लिए जो भी जरूरी काम है उसे एक सप्ताह के अंदर पूरा करे, अगर जलापूर्ति करने मे कोई भी पेरशानी एवं विधि व्यवस्था की स्थिति उत्पन्न होगी तो उसकी जिम्मेदारी बुडको की होगी। जिस वार्ड में जलसंकट बहुत गंभीर है उस वार्ड का सर्व करके तीन दिनो के अंदर रिपोर्ट सोपे,हाउस होल्ड जिनके घर मे पाइप लाइन का कनेक्शन नहीं दिया गया है उनके यहा सर्वे करके गर्मी से पहले कनैक्शन दे,आगे कार्यपालक अभियंता जलापूर्ति नगर निगम कार्यरत वेट, प्याऊ,चापाकल को समेकित सूची जल्द दे,वही बुडको को जल्द से जल्द गेवालबिगहा, विष्णुपद,नयी सडक को फीडर से जोडने का निर्देश दिया गया है।वही नगर निगम आयुक्त ने जल संसाधन विभाग को जल्द मुरली हिल, आजाद पार्क एवं रामशिला ओवरहेड टैंक में गंगा जल आपूर्ति करने का निर्देश दिया ,अक्षयवट से सिंगरा स्थान टैंक में गंगा जल की आपूर्ति करने का निर्देश दिया गया है जिससे जल संकट श्रेत्र वार्ड 29,30,31,32 मे आने वाले गर्मी के दिनो मे राहत मिलेगी।

लौकहा थाना में महिला डेस्क की शुरूआत थानाध्यक्ष संतोष कुमार मंडल व एएसआई सुनीता कुमारी ने की

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी/खुटौना। पुलिस स्थापना दिवस के मौके पर एक साथ राज्य के सभी थानों में महिला हेल्प डेस्क की शुरूआत हो चुकी है। लौकहा थाना में विधिवत अलग से महिला डेस्क की शुरूआत थानाध्यक्ष संतोष कुमार मंडल व एएसआई सुनीता कुमारी ने किया। इस मौके पर एसआई राज किशोर पंडित एसआई निर्मल कुमार राम, एएसआई सूरज सिंह, एएसआई अनिल चौबे समेत सभी महिला व पुरूष पुलिस कर्मी उपस्थित रहे।महिला हेल्प डेस्क की शुरूआत करते हुए एसएचओ संतोष कुमार मंडल ने बताया महिलाओं से जुड़ी शिकायतों के त्वरित समाधान हेतु इस हेल्प डेस्क की शुरूआत की गई हैं। जहां शिकायत को आने वाली महिलाओं की समस्या सुनी जा सकेगी।वहीं उन्होंने ने अपील करते हुए कहा महिला पर किसी प्रकार का अत्याचार, घरेलू हिंसा स्कूल कॉलेज की छात्राओं आदि के साथ छेड़खानी अथवा टीजिंग जैसी गंभीर मामलों पर शिकायत मिलते ही पुलिस तुरंत एक्शन लेगी। बता दें कि लौकहा थाना की महिला एएसआई सुनीता कुमारी को फिल्हाल महिला हेल्प डेस्क का चार्ज दिया गया है। वहीं एएसआई सुनीता कुमारी ने हेल्प डेस्क की शुरूआत को एक अच्छी पहल बताते हुए कहा की महिलाएं निसंकोच होकर यहां अपनी सभी निजी समस्याओं को खुलकर बता सकती हैं व पुलिस उनके समस्याओं के समाधान हेतु तत्पर रहेगी।

जिलाधिकारी ने प्रतिनियुक्त कर्मियों एवं अधिकारियों को किया संबोधित एवं तैयारियों का लिया जायजा

कल 27फरवरी से 06 मार्च 2023 तक आयोजित होने वाले गृह रक्षकों की दक्षता परीक्षा को लेकर सभी प्रशासनिक तैयारियां पूर्ण

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी। जिलाधिकारी अरविन्द कुमार वर्मा आज हवाई अड्डा मैदान, मधुबनी में दिनांक 27 फरवरी से 06 मार्च 2023 तक आयोजित होने वाले गृह रक्षकों की दक्षता परीक्षा की तैयारियों का जायजा लेने के मद्देनजर आयोजन स्थल पर पहुंचे।बताते चलें कि सभी प्रखंडों के हिसाब से दिनांक 27 फरवरी 2023 सोमवार को कलुआही,जयनगर एवं फुलपरास प्रखंड, 28 फरवरी मंगलवार को खजौली, पंडौल एवं मधवापुर प्रखंड, 01 मार्च बुधवार को बाबूबरही, घोघरडीहा एवं बिस्फी प्रखंड, 2 मार्च गुरुवार को बेनीपट्टी, लखनौर, झंझारपुर एवं उमगाऊं (हरलाखी) प्रखंड, 03 मार्च शुक्रवार को रहिका, खुटौना, शहरी क्षेत्र (नगर निगम), 04 मार्च शनिवार को राजनगर, लदनिया एवं अंधराठाढ़ी प्रखंड, 05 मार्च रविवार को मधेपुर, लौकही एवं बासोपट्टी प्रखंड तथा 6 मार्च 2023 सोमवार को सुरक्षित दिवस रखा गया है। गौरतलब है कि निबंधन का समय पूर्वाहन 8:00 बजे से पूर्वाहन 10:30 बजे तक रखा गया है। इस अवधि के बाद किसी अभ्यर्थी को प्रवेश की अनुमति नहीं होगी।

हवाई अड्डा मैदान में आयोजित ब्रीफिंग के दौरान उपस्थित अधिकारियों व प्रतिनियुक्त कर्मियों को संबोधित करते हुए जिलाधिकारी ने कहा कि वर्ष 2011 के आवेदन के आधार पर ही इस बार यह दक्षता परीक्षा आयोजित की जा रही है। इस दक्षता परीक्षा में शामिल होने वाले अभ्यर्थियों में से कई अभ्यर्थी इस मौके को उनके करियर के आखरी उम्मीद के रूप में देख रहे होंगे। ऐसे में पारदर्शी और कदाचारमुक्त दक्षता परीक्षा का आयोजन जिला प्रशासन की प्राथमिकता में है। उन्होंने कहा कि सभी संबंधित अधिकारी और कर्मी अपनी भूमिका को अच्छी तरह समझ लें। ताकि कल से आरंभ होने वाली दक्षता परीक्षा के दौरान उन्हे किसी तरह की असमंजस की स्थिति से सामना न करना पड़े। उन्होंने बताया कि यहां कुल 15 निबंधन काउंटर बनाए गए हैं। सबसे आखरी काउंटर उन अभ्यर्थियों के लिए है, जिनके आवेदन के साथ उनका जन्म प्रमाण पत्र उपलब्ध नहीं था। ऐसे में उनके नामों की सूची अलग से जिले के वेबसाइट पर प्रकाशित कर दी गई है और ऐसे अभ्यर्थियों के लिए अलग से काउंटर भी बनाया गया है। जहां उन्हें अपने जन्म प्रमाण पत्र को प्रस्तुत करना होगा। जिसके बाद ही उन्हें दक्षता परीक्षा में शामिल होने की अनुमति दी जाएगी।

उन्होंने कहा कि दक्षता परीक्षा के दौरान किसी भी अप्रिय स्थिति से निपटने के लिए पर्याप्त संख्या में पुलिस बल की तैनात की गई है। इतना ही नहीं, चेस्ट नंबर दिए जाने से पूर्व सभी अभ्यर्थियों का बायोमैट्रिक पद्धति से उपस्थिति ली जाएगी। उपस्थित सभी अभ्यर्थियों का उनके काउंटर के आधार पर जत्था बनाया जाएगा। जिसके साथ जत्था प्रभारी सदैव मौजूद रहेंगे। सबसे पहले अभ्यर्थियों को 1600 मीटर की दौड़ छह मिनट में पूरी करनी होगी। इसमें सफल होने के बाद ही अभ्यर्थियों के सीना और ऊंचाई की जांच की जाएगी। इन सभी में अभ्यर्थी को उत्तीर्ण होना आवश्यक होगा। इसके बाद अभ्यर्थियों को ऊंची कूद, लंबी कूद और शॉटपुट में उनके प्रदर्शन के आधार पर अंक प्रदान किए जायेंगे। जिसके आधार पर उनकी मेघा सूची तैयार की जाएगी। सभी चरण का वीडियोग्राफी भी कराया जाएगा। साथ ही चप्पे चप्पे पर सीसीटीवी कैमरे लगाने के निर्देश दिए गए हैं।दौड़ के आयोजन के दौड़न लैप स्कोरर को अपना उत्कृष्ट देने को कहा गया है। पारदर्शिता बरतने के लिए आयोजन स्थल पर बड़े साइज का डिजिटल घड़ी भी लगाई गई है। सभी तरह की दक्षता में उत्तीर्ण अभ्यर्थियों को सफल मानते हुए आरक्षण रोस्टर के आधार पर मेघा सूची तैयार की जाएगी। जिलाधिकारी द्वारा बढ़ती गर्मी को देखते हुए पानी और एंबुलेंस की व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए हैं। इसके अतिरिक्त विधि व्यवस्था में किसी भी प्रकार की समस्या उत्पन्न करने वालों पर तुरंत कठोर कार्रवाई करने के निर्देश भी दिए गए हैं। उक्त अवसर पर अपर समाहर्ता, नरेश झा, विशेष कार्य पदाधिकारी, जिला गोपनीय शाखा, अनुमंडल पदाधिकारी सदर, अश्वनी कुमार, जिला समादेष्टा, गृह रक्षा वाहिनी, संजय कुमार, जिला पंचायती राज पदाधिकारी, शैलेंद्र कुमार, सहायक निदेशक सामाजिक सुरक्षा, आशीष प्रकाश अमन, प्रभारी खेल पदाधिकारी, मयंक सिंह, जिला कल्याण पदाधिकारी, राजीव रंजन देसाई, डीसीएलआर सदर, राकेश कुमार, सिविल सर्जन, डॉ ऋषिकांत पांडेय, अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी मुख्यालय, प्रभाकर तिवारी सहित सभी संबंधित पदाधिकारी और कर्मी उपस्थित थे।

संक्षिप्त खबरें

महागठबंधन की रैली से भाजपा में बेचैनी : भाई अरुण

पटना। राष्ट्रीय जनता दल के प्रदेश महासचिव भाई अरुण कुमार, युवा राजद के नेता मनोज यादव ने भाजपा सांसद सुशील मोदी के द्वारा यह कहे जाने पर कि लालू प्रसाद जी पर एक और मुकदमा ठोक देंगे पर गहरी नाराजगी व्यक्त करते हुए कहा कि सुशील मोदी का यह वक्तव्य उनके बिगड़ती हुई मानसिक संतुलन का परिणाम है। इससे यह भी जाहिर होता है कि इसके पहले भी जो मुकदमे किए गए थे वह राजनीति से प्रेरित थे और आज महागठबंधन की रैली की सफलता से भारतीय जनता पार्टी के तमाम नेताओं में इस कदर बेचैनी छा गई है। वे अनाप-शनाप बोलने लगे हैं, भाजपा के तमाम नेताओं की बेचैनी इस प्रकार बढ़ गई है कि उनको यह समझ में नहीं आ रहा कि क्या करें क्योंकि उसी दिन भाजपा के दूसरे नंबर के नेता अमित शाह की दो दो सभाएं बिहार में आयोजित थी, और दोनों सभाओं में आमजन का जुटान, नग्नय था।

पारस एक दिवसीय दौरे पर आज पहुंचेंगे पटना

पटना। केन्द्रीय मंत्री पशुपति कुमार पारस यूएई यात्रा के बाद दो दिवसीय दौरे पर आज पटना आ रहे हैं। वे यूएई यात्रा से लौटने के बाद सोमवार को दो दिवसीय दौरे पर पटना आ रहे हैं। प्रदेश प्रवक्ता ललन कुमार चन्द्रवंशी ने बताया कि श्री पारस सोमवार को ही अपने संसदीय क्षेत्र हाजीपुर जाएगें और वहां के स्थानीय कार्यक्रम में भाग लेगें। केन्द्रीय मंत्री श्री पारस अपने संसदीय क्षेत्र हाजीपुर के विदुपुर से मोहनपुर चौक तक प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना का उदघाटन करेगें। आगे श्री चन्द्रवंशी ने बताया कि उदघाटन के बाद गोरौल थाना अन्तर्गत वन्य महोदत ग्राम में स्थानीय कार्यक्रम में भाग लेगें। 27 फरवरी को ही श्री पारस पटना के महाराजा गार्डेन में ई0 दशरथ प्रसाद के सुपुत्री के शादी समारोह में भाग लेगें। पार्टी प्रवक्ता ने बताया कि 28 फरवरी को केन्द्रीय मंत्री सड़क मार्ग होते हुए आरा के रमना मैदान में खाद्य प्रसंस्करण उद्योग के द्वारा आयोजित मिलेट महोत्सव में भाग लेगें। पार्टी कार्यकताओं के द्वारा भोजपुर जिला के आरा में स्वागत करने का कार्यक्रम रखा गया है।

वार्ड नंबर 1 में चला संपत्ति असेसमेंट का महा अभियान

भवनों के री-असेस्मेंट के लिए रविवार को वार्ड एक में एक साथ घूमी 147 टीम

पटना। पटना नगर निगम द्वारा शहर के सभी व्यवसायिक, आवासीय एवं सरकारी भवनों का संपत्ति कर के लिए री-असेस्मेंट किया जा रहा है। रविवार को महा अभियान के तहत पटना नगर निगम के पदाधिकारी एवं राजस्वकताओं की टीम द्वारा एक साथ नए भवनों के असेस्मेंट के साथ पुराने भवनों का री-असेस्मेंट भी किया गया। वार्ड संख्या 1 में टीम सम्पूर्ण वार्ड का री-असेसमेंट किया गया। इसके साथ ही नए एवं पुराने भवनों फ्लैट एवं सरकारी एवं निजी संपत्तियों का असेसमेंट किया गया। जिसमें लगभग 1200 से अधिक नए होल्डिंग प्राप्त हुए(रिपोर्ट प्राप्त होने तक)। नए संपत्ति कर दाताओं से उसी मूल्यांकन के आधार पर संपत्ति शुल्क वसूल किया जाएगा। पटना नगर निगम द्वारा 147 टीम एक साथ एक वार्ड का असेसमेंट एक दिन में ही पूरा करेंगे। रोस्टर अनुसार अलग अलग दिन टीम एक साथ एक वार्ड को कवर करेगी। सभी 75 वार्डों में इस प्रकार टीम घूमेंगी। फाइलों को डिजिटली किया जा रहा है सुरक्षित। पटना नगर निगम कर्मियों द्वारा किए गए रिएसेसमेंट को डिजिटल करने की प्रक्रिया भी शुरू कर दी गई है 50 ऑपरेटरों की टीम द्वारा सभी दस्तावेजों को डिजिटली सुरक्षित कर एक डेटाबेस भी तैयार किया जा रहा है। गंगा रिसर्च सेंटर से एक साथ सभी टीमें वार्ड नंबर 1 में रवाना की गई जिसके बाद शाम में उन्हें पुनः वार्ड का एसेसमेंट करने के बाद दस्तावेजों को जमा करने की सुविधा दी गई। पटना नगर निगम द्वारा आमजनों से अपील की जा रही है कि वह अपनी संपत्ति का सही मुल्यांकन करवाएं और नगर निगम को ससमय ऑनलाइन संपत्ति शुल्क जमा करें। सही समय पर संपत्ति शुल्क जमा करने से आमजन पेन्लटी एवं अतिरिक्त खर्च से बच सकते है। किसी भी प्रकार की समस्या होने पर पटना नगर निगम की बेवसाइट एवं हेल्पलाइन नंबर 155304 पर संपर्क करें।

बिहार के विकास के लिए हरसंभव मदद कर रही केन्द्र सरकार : गिरिराज

केन्द्रीय मंत्री ने केन्द्र से मदद नहीं मिलने के आरोपों को बताया बेबुनियाद

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के दौरे से भाजपा नेताओं व कार्यकताओं में नए जोश का संचार हुआ है। रविवार को आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में केंद्रीय ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मंत्री गिरिराज सिंह ने केंद्र से पैसा नहीं मिलने के बिहार सरकार के आरोपों का खंडन किया है और उसे पूरी तरह से बेबुनियाद बताया है। गिरिराज सिंह ने कहा है कि सरकार झूठ बोलकर लोगों में भ्रम फैला रही है। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार अगर पैसा नहीं दे तो बिहार के अधिकारियों और नेताओं की गाड़ी का डीजल तक खत्म हो जाएगा। गिरिराज सिंह ने कहा है कि बिहार सरकार के वित्त मंत्री और मुख्यमंत्री एनडीए से अलग होने के बाद केंद्र से पैसा नहीं देने का आरोप लगाते रहते हैं लेकिन केंद्र की सरकार ने हर मौके पर बिहार की मदद की है और बिहार के विकास के लिए अबतक हजारों करोड़ रुपए राज्य सरकार को दे चुकी है। महागठबंधन की सरकार की गलत नीतियों के कारण बिहार आर्थिक बदहाली के दौर से गुजर रहा है। प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत बिहार में 31 हजार करोड़ से अधिक पैसा 8 सालों में केंद्र सरकार ने दिया है। बिहार में अभी तक 13646 भूमिहीनों को जमीन नहीं दिया गया। बिहार सरकार ने डेढ़ लाख आवेदकों का आवंटन अभी तक विभाग ने अटका कर रखा है। नीतीश कुमार अपनी गद्दी को बचाने में लगे हुए हैं। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार बिहार की मदद कर रही है फिर भी केन्द्र पर निशाना साधा जा रहा है। बिहार की भोली भाली जनता को बरगलाने का काम किया जा रहा है। केंद्र अगर पैसा नहीं देता को बिहार में 31 हजार करोड़ कहां से आवंटित हुआ। गिरिराज सिंह ने कहा कि भारत सरकार 8 सालों में बिहार को 1 लाख 66 हजार करोड़ रुपए दे चुकी है। बिहार सरकार के पास अपने कर्मचारियों को देने के लिए पैसा नहीं है लेकिन नीतीश कुमार को इसकी कोई चिंता नहीं है वे सिर्फ अपनी सरकार को बचाने के लिए काम कर रहे हैं। विकास से कोई मतलब नहीं है वे सिर्फ लोगों में भ्रम फैलाने का काम कर रहे हैं। केन्द्रीय मंत्री ने कहा कि मनरेगा के लिए हर पंचायत में वाट्सऐप ग्रुप बनेगा। इसमें उन सभी जनप्रतिनिधि को रखा जाएगा, जो हारे हैं या जीते हैं। जो भी काम होगा, वो पारदर्शी तरीके से होगा। बिहार इसे नहीं कर रहा है। मार्च तक इंतजार करूंगा, नहीं तो लेबर बजट रोक दूंगा। प्रेस वार्ता में नेता विरोधी दल बिहार विधान परिषद सम्राट चौधरी भी मौजूद थे।

पूर्वी भारत में हरित क्रान्ति की उप योजना क्यों बंद की गई : नीरज

छोटे व सीमांत किसानों के लिए पेंशन योजना क्यों नहीं शुरू हुयी: अंजुम

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। जदयू के प्रदेश प्रवक्ता सह विधानपार्षद नीरज कुमार व प्रवक्ता अंजुम आरा भाजपा व केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह पर जोरदार हमला बोला है। रविवार को पार्टी कार्यालय में प्रेस कांफ्रेंस को संबोधित करते हुए जदयू प्रवक्ताओं ने कहा कि बिहार सरकार द्वारा बाल्मिकिनगर में जो काम किया गया था उसके लिए केन्द्रीय संस्थानों ने 2014, 2017, 2018, 2021 में विभिन्न पुरस्कारों से नवाजा था। उम्मीद थी कि अमित शाह जी वहां चीता लेकर आयेंगे पर चीता की चर्चा तक नहीं की। कहा कि स्वामी सहजानंद सरस्वती महान स्वतंत्रता सेनानी थे, मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने उनके जन्म तिथि व पुण्य तिथि को राजकीय समारोह का दर्जा दिया। उनकी आदमकद प्रतिमा पटना में लगवाई लेकिन शाह ने उन्हें भारत रत्न जैसे पद से नवाजने की घोषणा करना तक आवश्यक नहीं समझा। न ही बिहार के किसी बयानवीर भाजपा नेता ने यह मांग करने की हिम्मत की। प्रवक्ताओं ने कहा कि केन्द्रीय गृहमंत्री का झूठ फिर से पकड़ा गया।

उन्होंने कहा कि रक्सौल में हवाई अड्डे के लिए जमीन नहीं दिया गया, जबकि चहारदीवारी युक्त 152.775 एकड़ भूमि 26 मई 2022 को ही दे दिया गया है। साथ ही अमित शाह ने टेक्सटाइल पार्क के लिए जमीन नहीं देने की बात कही, जबकि पश्चिमी चंपारण के 3 अंचलों में लगभग 1700 एकड़ जमीन प्रस्तावित की जा चुकी है। प्रवक्ताओं ने कहा जबतक नीतीश कुमार बिहार की राजनीति में हैं तब तक बिहार में भाजपा के सत्ता के दरवाजे में अलीगढ़ का ताला लगा हुया है। 2015 के चुनाव में नरेंद्र मोदी ने 52 चुनावी सभायें की थीं और भाजपा के सीटों की संख्या लगभग आधी रह गयी थी।

प्रवक्ताओं ने कहा कि भाजपा को यह बताना चाहिए कि 2021-22 से पूर्वी भारत में हरित क्रान्ति की उप योजना क्यों बंद कर दी गयी? भाजपा को यह भी बताना चाहिए कि छोटे और सीमांत किसानों को पेंशन देने की योजना शुरू करने की बात लोकसभा चुनाव 2019 के घोषणा पत्र में की थी पर अबतक वो योजना शुरू क्यों नहीं की गयी? इस वर्ष पेश किये गए केन्द्रीय बजट में उर्वरक सब्सिडी के मद में 22.3 प्रतिशत की कमी क्यों की गयी? प्रवक्ताओं ने कहा कि भाजपा नेताओं को जंगल राज की बात करने के पूर्व उन्हें नेशनल क्राईम ब्यूरो के आंकड़ों को भी एक बार देखना चाहिए। पटना एवं चम्पारण जिलों के आंकड़ों के अनुसार जनवरी 2022 से जुलाई 2022 की तुलना में बिहार में क्राईम के आंकड़े बाद के महीनों में घटे ही हैं।

नीतीश कुमार के नेतृत्व में शिक्षा की नई अलख जागी : श्रवण कुमार

ग्रामीण विकास मंत्री ने रघुनंदन बाबू के प्रतिमा का किया अनावरण

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में शिक्षा की नई अलख जागी है गरीब छात्र के लिए भी अब हाईस्कूल में स्मार्ट क्लास के जरिये बच्चों को गुणवत्ता शिक्षा मिल रही है। प्रदेश में शिक्षा में काम हुआ है उसका जोड़ा देश का कोई राज्य नही है। बिहार मॉडल देश मे बेहतर है। उक्त बातें ग्रामीण विकास मंत्री श्रवण कुमार कुमार ने रविवार को सरमेरा प्रखण्ड के गोपालबाद गांव मे शिक्षक व समाजसेवी जदयू के वरिष्ठ नेता स्व रघुनंदन प्रसाद के आदमकद प्रतिमा के अनावरण के मौके पर कही। मंत्री श्रवण कुमार ने कहा कि रघुनंदन बाबू एक गुणवान शिक्षक व सच्चे समाजसेवी व्यक्तित्व के धनी व्यक्ति थे, वे काफी अच्छे शिक्षक तो थे ही एक सच्चे समाजसेवी के रूप ग्रामीणों की समस्या सुनते थे और उनकी समस्या को निदान करवाते थे उनका मुख्यमंत्री नीतीश कुमार से काफी अच्छा सम्बन्ध था तथा उनके सहयोगी रहे थें। उनके द्वारा पढ़ाये गयें छात्र आज सरकारी नौकरियों एवं बडे संस्थानों में अपनी सेवा दे रहे है उनका पढ़ाने का अलग अंदाज था, वो छात्र को खेल खेल में पढ़ाई करवा देते थे। वे शिक्षा का अलख जगाई लोगो को शिक्षा के प्रति जागरूक किया। उनका व्यक्तित्व ईमानदार नेता के साथ साथ उनका जीवन संघर्ष पूर्ण था नेतृत्वकर्ता की क्षमता उनके अंदर भरी पड़ी थी। वही, इस अवसर पर बिहार सरकार के लघु सिंचाई मंत्री जयंत राज ने कहा कि शिक्षक स्व रघुनंदन बाबू नालन्दा में शिक्षा को बड़े मुकाम तक पहुचाये वे शिक्षा के साथ समाजसेवा का काम किया करते थे जनता की समस्या के निराकरण करवाने के प्रति हमेशा संघर्ष करते रहते थे। इस अवसर पर सांसद कौशलेन्द्र कुमार ने कहा शिक्षक स्व रघुनंदन बाबू गुणवान विद्वान व्यक्तित्व के धनी व्यक्ति थे। इस अवसर पूर्व विधान पार्षद राजू यादव, शिक्षक स्व रघुनंदन प्रसाद की पत्नी राजकुमारी देवी, राजेन्द्र प्रसाद, जगलाल चौधरी, डा धनंजय कु देव, विपिन चौधरी आदि लोग उपस्थित थे।

युवा रालोजपा चली गांव की ओर : उपेन्द्र यादव

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। राष्ट्रीय लोक जनशक्ति पार्टी के प्रदेश कार्यालय के स्व रामविलास पासवान स्मृति सभागार में राष्ट्रीय लोजपा के राष्ट्रीय व केन्द्रीय मंत्री पशुपति कुमार पारस एवं प्रदेश अध्यक्ष प्रिंस राज के निदेशार्नुसार युवा रालोजपा की प्रदेश कार्यकारिणी की बैठक हुई। बैठक की अध्यक्षता करते हुए युवा रालोजपा प्रदेश अध्यक्ष उपेन्द्र यादव ने आगामी 2024 के लोकसभा चुनाव मद्येनजर सभी युवा पदाधिकारियों को पूरी तरह तैयार रहने एवं राज्य, जिला, प्रखण्ड, पंचायत, वार्ड एवं बूथ कमिटि स्तर तक संगठन को अविलम्ब विस्तार कर जिला एवं प्रखण्ड में जहां कार्यालय नहीं खुला है वहां अविलम्ब कार्यालय को खोलने को कहा है। पार्टी के युवा संगठन को और धारदार बनाने के लिए सभी पदाधिकारियों को 25-25 प्राथमिक क्रियाशील बनाने पर बल दिया। प्रदेश प्रवक्ता चन्दन कुमार ने बताया कि युवा रालोजपा की बैठक में प्रदेश के सभी पदाधिकारी सभी जिलाध्यक्ष, प्रखण्ड अध्यक्ष एवं पंचायत अध्यक्ष उपस्थित थे। बैठक का उदघाटन युवा रालोजपा प्रदेश अध्यक्ष उपेन्द्र यादव ने पद्यम भूषण रामविलास पासवान, बाबा साहब अम्बेदकर एवं स्व रामचन्द्र पासवान की तैल्य चित्र पर माल्यापर्ण कर दीप प्रजव्वलित कर की। उन्होंने बताया कि युवा रालोजपा ने राष्ट्रीय स्तर पर युवा आयोग का गठन कर, जीरो प्रतिशत ब्याज पर ऋण मुहैया कराने, बेरोजगारों को बेरोजगारी भत्ता एवं पार्टी के संस्थापक पदम भूषण रामविलास पासवान जी के नाम पर हाजीपुर रेलवे स्टेशन का नामकरण, भारत रत्न तथा उनके जयंती पर सार्वजनिक अवकाश एवं हाजीपुर में आदमकद प्रतिमा की स्थापना की मांग केन्द्र एवं राज्य सरकार से की है। बैठक में पूर्व जिला परिषद सदस्य श्रीमति पुष्पा सिंह एवं उपमुखिया वीणा देवी ने अपने समर्थकों के साथ पार्टी की सदस्यता ग्रहण की। बैठक में प्रदेश प्रवक्ता ललन चन्द्रवंशी, वरीय उपाध्यक्ष मनीष पासवान, धीरज कुमार, महासचिव अमरेश पाठक, शेखर कुशवाहा, कार्यालय प्रभारी राधाकान्त पासवान, अंकित दूबे, रंजीत कुशवाहा, कौशल रजक, विनय कुमार मंडल, बबलू चन्द्रवंशी, राजेश कुमार, विक्की यादव, पंकज दांगी, गोल्डेन शर्मा, मिंटू यादव, मनीष स्वर्णकार, सहित कई लोग उपस्थित थे।

सामाजिक बदलाव की विभिन्न धाराओं को एकजुट होना होगा: दीपंकर

जगजीवन राम स्मृति व्याख्यानमाला के तहत बिहार में सामाजिक बदलाव की चुनौतियां विषय आयोजित हुआ सेमिनार

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। भाकपा माले महासचिव दीपांकर भट्टाचार्या ने कहा कि आज देश जिस कठिन परिस्थिति से गुजर रहा है, उसमें सामाजिक बदलाव की सभी धाराओं को मिलकर काम करना होगा। दौर सबसे कठिन है लेकिन इसी दौर में नए लोग नए तेवर के साथ खड़े होते हैं।हाशिए पर खड़े लोगों के लिए सामाजिक बदलाव जरूरी शर्त है। श्री भट्टाचार्या रविवार को जगजीवन राम स्मृति व्याख्यानमाला के अंतर्गत जगजीवन राम संसदीय अध्ययन एवं राजनीतिक शोध संस्थान में बिहार में सामाजिक बदलाव की चुनौतियां विषय पर एक सेमिनार का को संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि यह लड़ाई कभी तेज, कभी धीमी लेकिन लगातार चलने वाली एक प्रक्रिया है। आजादी की लड़ाई को केवल राजनीतिक आजादी के लिहाज से नहीं देखना होगा बल्कि उसके भीतर सामाजिक बदलाव का संघर्ष भी उतनी ही तीव्रता के साथ मौजूद था। कहा कि सामाजिक बदलाव का मतलब यह नहीं है कि जमीन या आर्थिक सत्ता मिल जाए, बल्कि जाति व्यवस्था के कारण दलितों-महिलाओं की शिक्षा व अन्य अधिकारों से वंचना के खिलाफ संघर्ष भी सामाजिक बदलाव के एजेंडे में शामिल हैं। कहा कि आरक्षण के कारण विश्वविद्यालयों व कुछेक अन्य जगहों पर दलित-पिछड़े समुदाय को प्रतिनिधित्व मिलने लगा है, लेकिन न्यायालय व प्राइवेट सेक्टर में अब भी यह नहीं हो रहा है। आरक्षण ने माहौल बदला है, लेकिन जबत तक समाज का ढांचा नहीं बदलता, न्याय की गुंजाइश कम रहेगी। उन्होंने यह भी कहा कि अब तो आरक्षण की पूरी अवधारणा पर ही कुठाराघात हो रहा है। आज देश फासीवादी दौर से गुजर रहा है। अंग्रेजी राज की तर्ज पर शासन चलाने की कोशिश हो रही है और हमारे सारे अधिकार छीने जा रहे हैं। ये सारी चीजें समाज को पीछे ले जाने वाली हैं। हमें न केवल मिले अधिकारों, लोकतंत्र और सामाजिक न्याय की अवधारणा के पक्ष में मजबूती से खड़ा होना है, बल्कि इसे गुणात्मक रूप से बेहतर बनाने के बारे में भी काम करना होगा। इस अवसर पर बिहार विधान परिषद् के सदस्य प्रो. रामवचन राय ने कहा कि आज देश में जो सरकार है, वह अमृतकाल के नाम पर नफरत का कारोबार कर रही है। विष वमन कर रही है। यह बहुत दुखद है। पूरे देश में कुहासा सा माहौल है। इससे हम सबको मिलजुलकर निपटना होगा। माले के राज्य सचिव कुणाल, विधायक दल के नेता महबूब आलम, धीरेन्द्र झा, प्रो. अभय कुमार, सतीश पटेल, केडी यादव और बड़ी संख्या में शहर के बुद्धिजीवी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन डा. कुमार परवेज ने किया।

पीएमईजीपी एवं खादी ग्रामोद्योग महोत्सव से खादी जागृति यात्रा का हुआ शुभारंभ

प्रदर्शनी के पांचवे दिन गांधी मैदान से 10 वाहनों को किया गया रवाना

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। खादी और ग्रामोद्योग आयोग, सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय द्वारा गांधी मैदान में आंचलिक स्तरीय पीएमईजीपी एवं खादी और ग्रामोद्योग के विशेष प्रदर्शनी के 5 वें दिन रविवार को जन सामन्य को खादी का परिचय कराने हेतु मेला प्रागंण से एक खादी जागृति यात्रा का शुभारम्भ किया गया। खादी एवं ग्रामोद्योग उत्पादों के प्रचार-प्रसार तथा खादी और ग्रामोद्योग आयोग के द्वारा संचालित प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के आत्म निर्भर भारत एवं महात्वाकांक्षी योजनाओं की जानकारी आम जनता तक पहुंचाने हेतु डॉ मोहम्मद हनीफ मेवाती, राज्य निदेशक, खादी और ग्रामोद्योग आयोग के द्वारा रविवार कोको प्रदर्शनी स्थल से कार्यक्रम की जानकारी की ब्रांडिंग से सुसज्जित 10 टोटो (वाहन) के माध्यम से प्रदर्शनी के प्रचार-प्रसार हेतु हरी झण्डी दिखा कर जागृति यात्रा गाड़ियों को रवाना किया गया।

आंचलिक पीएमईजीपी एवं खादी ग्रामोद्योग महोत्सव में बिहार, झारखण्ड, पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, मध्य प्रदेश, गुजरात, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र के साथ-साथ देश के कई राज्यों से आये हुए पीएमईजीपी इकाई तथा खादी संस्थाओं द्वारा उत्पादित सूती, रेशमी एवं ऊनी उत्पादों के साथ अपने-अपने स्टॉल के माध्यम से प्रदर्शनी सह बिक्री का कार्य किया जा रहा हैं।

प्रदर्शनी में सिल्क, सूती एवं ऊनी उत्पाद जैसे कटिया, मुंगा, मलवरी, तसर, पेपर सिल्क के साड़ी, समीज-सलवार, कुर्ता-पैजामा, शर्ट एवं बण्डी, धोती-कुर्ता, गमछा, रूमाल, खादी मास्क इत्यादि के साथ-साथ ग्रामोद्योगी वस्तुयें जैसे - शहद, सरसो तेल, साबुन, सत्तु-बेसन, पापड़, अनेको प्रकार के आचार, मुरब्बा, जैम-जेली, इत्यादि की प्रदर्शनी एवं बिक्री किया जा रहा है। प्रदर्शनी में काफी संख्या में लोग आकर भ्रमण एवं खरीदारी कर रहें है। प्रदर्शनी में तेल-घानी, कुम्भकारी, चरखा - करघा एवं रेडिमेड वस्त्रों का जीवन्त प्रदर्शन भी किया जा रहा है। साथ हीं प्रदर्शनी में बड़ो के साथ आये हुए बच्चों के लिए तरह-तरह के झूला भी लगाया गया है। प्रदर्शनी में भ्रमण एवं खरीदारी के साथ खाने-पीने का तरह-तरह के फूड स्टॉल भी लगाया गया है।

बिहार को विकसित राज्य बनाना मकसद : चिराग

युवा संवाद महासभा में बोलें लोजपा रा के राष्ट्रीय अध्यक्ष

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) के राष्ट्रीय अध्यक्ष चिराग पासवान ने बिहार सरकार पर युवा विरोधी होने का आरोप लगाया है। रविवार को गया जिले के टीकारी राज इंटर विद्यालय में पार्टी के युवा प्रकोष्ठ की तरफ से आयोजित युवा संवाद महासभा में युवाओं को संबोधित करते हुए श्री चिराग ने कहा कि मेरी रगों में मेरे नेता, मेरे पिता रामविलास पासवान का खून है, जिसका एक-एक कतरा बिहार को विकसित राज्य बनाने के लिए है। श्री चिराग ने कहा कि आप लोग एक कदम बढ़ें मैं सौ कदम आपके साथ चलुंगा। श्री चिराग ने कहा कि प्रदेश की मौजूदा सरकार के साथ उनकी लड़ाई बिहारी युवाओं के बेहतर भविष्य, बुजूर्गों और महिलाओं की सुरक्षा के लिए है। श्री चिराग ने कहा कि हम चाहते हैं कि बिहार अन्य प्रदेशों की तरह विकसित राज्य बने, यहां बेहतर शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार के असरों का सृजन हो, ताकि किसी को भी इन आवश्यकताओं के पूर्ति के लिए प्रदेश से बाहर न जाना पड़े। कहा कि प्रदेश में दिन-ब-दिन अपराध बढ़ता जा रहा है। पूरे प्रदेश में भव का माहौल व्याप्त है। श्री चिराग ने कहा कि मुख्यमंत्री कहते हैं कि बिहार में शासन-प्रशासन के संरक्षण में धडल्ले से शराब का अवैध करोबार फल-फूल रहा है। पार्टी के प्रदेश मीडिया प्रभारी कुंदन पासवान ने बताया कि पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष चिराग की उपस्थिति में गया जिले से युवा संवाद महासभा की शुरूआत हुई। महासभा की अध्यक्षता युवा प्रदेश अध्यक्ष वेद प्रकाश पाण्डेय ने की, जिसे अपार जन समर्थन मिला। यह ह्यायुवा संवाद महासभा, बिहार के सभी जिलों में होगी।

कृषि विभाग के उद्यान निदेशालय द्वारा अयोजित दो दिवसीय बागवानी महोत्सव सह प्रतियोगिता कार्यक्रम का हुआ समापन

बागवानी महोत्सव में 46 हजार के पौध सामग्रियों की हुई बिक्री

सामान्य प्रशासन विभाग के प्रधान सचिवडॉ बी राजेन्दर ने विजेता किसानों व संस्थाओं को किये पुरस्कृत

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। कृषि विभाग के उद्यान निदेशालय द्वारा वीर कुंवर सिंह पार्क में अयोजित दो दिवसीय बागवानी महोत्सव सह प्रतियोगिता का रविवार को समापन हो गया। सामान्य प्रशासन विभाग के प्रधान सचिवडॉ बी राजेन्दर द्वारा महोत्सव का समापन किया गया। इस अवसर पर उन्होंने विजेता किसानों व संस्थाओं के बीच पुरस्कार का वितरण भी किया। प्रधान सचिव ने कृषि विभाग को बागवानी महोत्सव के सफलतापूर्वक आयोजन के लिए बधाई दी। उन्होंने कहा कि 14 वर्गो के विभिन्न 138 शाखाओं के तहत ऑनलाईन पंजीकरण के आधार पर प्रदर्श आमंत्रित किये गये हैं, जिसमें राज्य के 38 जिलों से कुल 7837 प्रदर्श के साथ 1216 किसान भाग लिया।

उन्होंने आगे बताया कि 10 हजार किसानों एवं आमजनों द्वारा इस दो दिवसीय महोत्सव का भ्रमण किया गया। इस महोत्सव के आम जन तथा किसानों द्वारा सेन्टर ऑफ एक्सेलेंस, चण्डी, नालन्दा एवं देसरी, वैशाली द्वारा उत्पादित सब्जियों एवं फलों के पौध सामग्री को खरीदा। विगत दो दिनों में कुल 46 हजार मूल्य के पौध सामग्रियों की बिक्री हुई। उन्होंने कहा कि इस महोत्सव में कृषि विभाग, असम सरकार, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् - केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ, केन्द्रीय औषधीय एवं सगंधीय पौधा संस्थान, लखनऊ ने भाग लिया। उन्होंने बताया कि राज्य के सेन्टर ऑफ एक्सेलेंस, चण्डी, नालन्दा एवं देसरी, वैशाली, राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम, पटना, वेजफेड, पटना, जीविका, बिहार, बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर, भागलपुर, खाद्य प्रसंस्करण निदेशालय, उद्योग विभाग, बिहार सरकार के अलावे राज्य के 38 सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमी अपने उत्पाद के साथ भाग लिया। उद्यान एवं उससे संबंधित कुल 50 स्टॉल भी महोत्सव में लगाया गया। साथ ही, बागवानी महोत्सव में बिहार में ळप ज्ंहमक उत्पादों के ठतंदकपदह हेतु विभिन्न स्टॉल लगाये गये। उन्होंने कहा कि उन्होंने कहा कि इस महोत्सव में सामान्य रूप से उत्पादित फल, फूल, सब्जी के अलावे पॉली हाउस में उत्पादित सब्जी, (शिमला मिर्च, चेरी टमाटर, सीड्लेस खीरा) यूरोपियन सब्जी (ब्रोक्ली, रेड कैवेज), मशरूम, मखाना, विशिष्ट फल (स्ट्राबेरी, डेज्गन फ्रूट, रसभरी मकोई) घर की बनी फल एवं सब्जी प्रसंस्कृत साम्रगी, शहद एवं पान को भी प्रमुखता देते हुए बागवानी महोत्सव में सम्मिलित किया गया है।इस कार्यक्रम की अध्यक्षता कृषि विभाग के सचिव डॉ एन सरवण कुमार, उद्यान निदेशक नन्द किशोर, निदेशक, बामेती आभांशु सी जैन, संयुक्त निदेशक, उद्यान श्री राधा रमण, उप निदेशक, उद्यान डॉ राकेश कुमार, कृषि वैज्ञानिकगण सहित विभागीय पदाधिकारी एवं कर्मचारीगण तथा बड़ी संख्या में राज्य के सभी जिलों से आये किसान और आगन्तुक मौजूद थे।

तीन उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले किसान को पुरस्कार: प्रतिभागियों द्वारा प्रदर्शित विभिन्न वर्गों के विभिन्न शाखाओं का मूल्यांकन वैज्ञानिकों की कमिटी द्वारा की गई एवं प्रत्येक वर्ग के प्रत्येक शाखा में तीन उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले कृषकों एवं कलाकारों को पुरस्कृत किया गया। चयनित 130 प्रतिभागियों को प्रथम 130 प्रतिभागियों को द्वितीय एवं 128 प्रतिभागियों को तृतीय अर्थात कुल 388 चयनित प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र के साथ क्रमशः 5 हजार रुपए, 4 हजार रुपए एवं 3 हजार रुपए पारितोषिक दिया गया तथा विभिन्न श्रेणियों में 30 पुरस्कार पाने वाले चन्द्रशेखर सिंह, भागलपुर को इस बागवानी महोत्सव में आयोजित प्रतियोगिता मे सर्वश्रेष्ठ बागवान घोषित किया गया एवं उन्हें प्रमाण-पत्र, मोमेन्टो के साथ 10 हजार रुपए का विशिष्ट पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया। इस प्रकार विजेता किसानों के बीच कुल 15,64,000 रुपए पुरस्कार के रूप में डीबीटी के माध्यम से उनके खाते में सीधे अंतरित की गई।

टैक्स छूट और ज्यादा ब्याज के लिए पीपीएफ में निवेश, मिल रहा 7.1 फीसदी ब्याज

नई दिल्ली, एजेंसी

वित्त वर्ष 2022-23 के खत्म होने में अब ज्यादा समय नहीं रह गया है। ऐसे में इस वित्त वर्ष के लिए इनकम टैक्स छूट पाने के लिए आपको 31 मार्च तक कुछ खास स्कीम्स में निवेश करना होगा। ऐसे में अगर आप टैक्स बचाने के साथ अपने निवेश पर ज्यादा रिटर्न चाहते हैं तो आप पब्लिक प्रॉविडेंट फंड (पीपीएफ) में निवेश कर सकते हैं। इस स्कीम में 7.1 फीसदी सालाना ब्याज मिल रहा है। हम आपको आज इसके बारे में बता रहे हैं।

इस पर मिलता है टैक्स छूट का लाभ

पीपीएफ ईईई की श्रेणी में आती है। यानी योजना में किए गए पूरे निवेश पर आपको टैक्स छूट का लाभ मिलता है। इसमें इनकम टैक्स एक्ट के सेक्शन 80उ के तहत सालाना 1.5 लाख रुपए तक के निवेश पर टैक्स छूट का लाभ लिया जा सकता है। वहीं इस योजना में निवेश से मिलने वाले ब्याज और मैच्योरिटी पर मिलने वाली राशि पर भी किसी तरह का टैक्स नहीं देना होता।

500 रुपए में खोल सकते हैं अकाउंट

पीपीएफ अकाउंट खोलने के लिए आवश्यक न्यूनतम राशि 500 रुपए है। किसी वित्त वर्ष में न्यूनतम 500 रुपए जमा करने की जरूरत है, जबकि अधिकतम निवेश सीमा 1.5 लाख रुपए सालाना तय की गई है।

मैच्योरिटी के बाद 5-5 साल के लिए मिलेगा एक्सटेंशन

पीपीएफ अकाउंट 15 साल में मैच्योर होता है, हालांकि अवधि को परिपक्वता के एक साल के भीतर 5-5 साल के लिए बढ़ाया जा सकता है। इसके लिए मैच्योरिटी पूरा होने के एक साल पहले ही बढ़ाना होगा। यानी आप इस स्कीम में कुल 25 साल के लिए निवेश कर सकते हैं। आप 15, 20 या 25 साल बाद अपना पैसा निकाल सकते हैं।

5 साल का रहता है लॉक इन पीरियड

हालांकि पीपीएफ अकाउंट खोलने वाले साल के बाद 5 साल तक इस खाते से पैसा नहीं निकाला जा सकता। ये अवधि पूरा होने के बाद फॉर्म 2 भर कर पैसा निकाला जा सकेगा। हालांकि 15 साल साल पहले पैसा निकालने पर आपके फंड से 1 फीसदी की कटौती की जाएगी।

पोस्ट ऑफिस या बैंक में खोल सकते हैं अकाउंट

एक पीपीएफ खाता किसी पोस्ट ऑफिस या बैंक में अपने नाम से और नाबालिग की तरफ से किसी और व्यक्ति द्वारा खोला जा सकता है। हालांकि, नियमों के अनुसार, एक हिंदू अविभाजित परिवार (एचयूएफ) के नाम पर एक पीपीएफ अकाउंट खोला नहीं जा सकता है।

आसानी से तैयार होगा बड़ा फंड

इस स्कीम के जरिए अगर आप हर महीने 1 हजार रुपए निवेश करते हैं तो आपको 15 साल बाद 3 लाख 20 हजार रुपए मिलेंगे। वहीं अगर 2 हजार रुपए महीना निवेश करते हैं तो आपको 15 साल बाद 6 लाख 40 हजार रुपए मिलेंगे। यहां जानें इसमें निवेश करने पर आपको कितना फायदा होगा।

कौन खोल सकता है पीपीएफ अकाउंट?

कोई भी व्यक्ति किसी पोस्ट ऑफिस या बैंक में अपने नाम पर यह अकाउंट खोल सकता है। इसके अलावा नाबालिग की तरफ से किसी और व्यक्ति द्वारा भी से खाता खोला जा सकता है।

संक्षिप्त खबरें

पेट्रोल और डीजल की कीमतें यथावत

नई दिल्ली। वैश्विक बाजार में कच्चे तेल की कीमतों में जारी तेजी के बीच देश में पेट्रोल और डीजल की कीमतें आज भी यथावत रहीं। अंतरराष्ट्रीय बाजार में सप्ताहांत पर लंदन ब्रेंट क्रूड बढ़त के साथ 83.16 डॉलर प्रति बैरल और अमेरिकी क्रूड 1.41 प्रतिशत चढ़कर 76.45 डॉलर प्रति बैरल पर पहुंच गया। घरेलू स्तर पर तेल विपणन कंपनी भारत पेट्रोलियम के अनुसार, पेट्रोल और डीजल की कीमतों में आज भी टिकाव रहा। दिल्ली में पेट्रोल 96.72 रुपये प्रति लीटर और डीजल 89.62 रुपये प्रति लीटर पर स्थिर है। देश में पांच महीने से अधिक समय से ईंधन की कीमतों में कोई बदलाव नहीं हुआ है। मुंबई में पेट्रोल के दाम 106.31 रुपये प्रति लीटर और और डीजल की कीमत 94.27 रुपये प्रति लीटर है। पेट्रोल और डीजल की कीमतें मूल्य वर्धित कर (वैट) और माल ढुलाई शुल्क के आधार पर सभी राज्यों में अलग-अलग हैं। पेट्रोल-डीजल के मूल्यों की प्रतिदिन समीक्षा की जाती है।

विदेशी मुद्रा भंडार 5.7 अरब डॉलर कम होकर 561.3 अरब डॉलर पर

मुंबई। विदेशी मुद्रा परिसंपत्ति, स्वर्ण भंडार, विशेष आहरण अधिकार (एसडीआर) और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) के पास आरक्षित निधि में भारी कमी आने से 17 फरवरी को समाप्त सप्ताह में देश का विदेशी मुद्रा भंडार 5.7 अरब डॉलर घटकर 561.3 अरब डॉलर पर आ गया जबकि इसके पिछले सप्ताह यह 8.32 अरब डॉलर गिरकर 566.9 अरब डॉलर रहा था। रिजर्व बैंक की ओर से जारी साप्ताहिक आंकड़े के अनुसार, 17 फरवरी को समाप्त सप्ताह में विदेशी मुद्रा भंडार के सबसे बड़े घटक विदेशी मुद्रा परिसंपत्ति 4.5 अरब डॉलर की गिरावट लेकर 496.1 अरब डॉलर पर आ गयी। इसी तरह इस अवधि में स्वर्ण भंडार में 1.04 अरब डॉलर की कमी आई और यह गिरकर 41.82 अरब डॉलर रह गया। आलोच्य सप्ताह विशेष आहरण अधिकार में 8.7 करोड़ डॉलर की गिरावट आई और यह घटकर 18.3 अरब डॉलर पर आ गया। इस अवधि में अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के पास आरक्षित निधि 3.4 करोड़ डॉलर कम होकर 5.1 अरब डॉलर रह गई।

बुनियादी ढांचा क्षेत्र की 335 परियोजनाओं की लागत 4.46 लाख करोड़ रुपये बढ़ी

नई दिल्ली, एजेंसी

बुनियादी ढांचा क्षेत्र की 150 करोड़ रुपये या इससे अधिक के खर्च वाली 335 परियोजनाओं की लागत तय अनुमान से 4.46 लाख करोड़ रुपये से ज्यादा बढ़ गई है। एक रिपोर्ट में कहा गया है कि देरी और अन्य कारणों से इन परियोजनाओं की लागत बढ़ी है। सांख्यिकी और कार्यक्रम क्रियान्वयन मंत्रालय 150 करोड़ रुपये या इससे अधिक की लागत वाली बुनियादी ढांचा परियोजनाओं की निगरानी करता है। मंत्रालय की जनवरी, 2023 की रिपोर्ट में कहा गया है कि इस तरह की 1,454 परियोजनाओं में से 335 की लागत बढ़ गई है, जबकि 871 परियोजनाएं देरी से चल रही हैं। रिपोर्ट के अनुसार, इन 1,454 परियोजनाओं के क्रियान्वयन की मूल लागत 20,59,065.57 करोड़ रुपये थी, लेकिन अब इसके बढ़कर 25,05,248.43 करोड़ रुपये हो जाने का अनुमान है। इससे पता चलता है कि इन परियोजनाओं की लागत 21.67 प्रतिशत यानी 4,46,182.86 करोड़ रुपये बढ़ गई है। रिपोर्ट के अनुसार, जनवरी, 2023 तक इन परियोजनाओं पर 13,53,875.70 करोड़ रुपये खर्च हो चुके हैं, जो कुल अनुमानित लागत का 54.04 प्रतिशत है।

हालांकि, मंत्रालय ने कहा है कि यदि परियोजनाओं के पूरा होने की हालिया समयसीमा के हिसाब से देखें तो देरी से चल रही परियोजनाओं की संख्या कम होकर 703 पर आ जाएगी। वैसे इस रिपोर्ट में 309 परियोजनाओं के चालू होने के साल के बारे में जानकारी नहीं दी गई है। रिपोर्ट में कहा गया है कि देरी से चल रही 871 परियोजनाओं में से 169 परियोजनाएं एक महीने से 12 महीने, 157 परियोजनाएं 13 से 24 महीने की, 414 परियोजनाएं 25 से 60 महीने की और 131 परियोजनाएं 61 महीने या अधिक की देरी से चल रही हैं। इन 871 परियोजनाओं में हो रहे विलंब का औसत 39.69 महीने है। इन परियोजनाओं में देरी के कारणों में भूमि अधिग्रहण में विलंब, पर्यावरण और वन विभाग की मंजूरियां मिलने में देरी और बुनियादी संरचना की कमी प्रमुख है। इनके अलावा परियोजना का वित्तपोषण, विस्तृत अभियांत्रिकी को मूर्त रूप दिये जाने में विलंब, परियोजना की संभावनाओं में बदलाव, निविदा प्रक्रिया में देरी, ठेके देने व उपकरण मंगाने में देरी, कानूनी व अन्य दिक्कतें, अप्रत्याशित भू-परिवर्तन आदि की वजह से भी इन परियोजनाओं में विलंब हुआ है।

जीडीपी और वाहन बिक्री के आंकड़ों का बाजार पर रहेगा असर

मुंबई, एजेंसी

दुनिया के केंद्रीय बैंकों के ब्याज दर में आगे भी बढ़ोतरी करने की आशंका से बीते सप्ताह ढाई फीसदी से अधिक लुढ़के घरेलू शेयर बाजार पर अगले सप्ताह वैश्विक रुख के साथ ही स्थानीय स्तर पर चालू वित्त वर्ष की तीसरी तिमाही के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) और फरवरी की वाहन बिक्री के जारी होने वाले आंकड़ों का असर रहेगा। बीएसई का तीस शेयरों वाला संवेदी सूचकांक सेंसेक्स 1538.64 अंक अर्थात 2.52 प्रतिशत का गोता लगाकर सप्ताहांत पर 60 हजार अंक के मनोवैज्ञानिक स्तर से नीचे 59463.93 अंक पर आ गया। इसी तरह नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) का निफ्टी 478.4 अंक यानी 2.7 प्रतिशत की बड़ी गिरावट लेकर 17465.80 अंक पर रहा। समीक्षाधीन सप्ताह में बीएसई की दिग्गज कंपनियों की तरह मझौली और छोटी कंपनियों में भी जमकर बिकवाली हुई। इससे सप्ताहांत पर मिडकैप 506.47 अंक यानी 2.1 प्रतिशत लुढ़ककर 24178.73 अंक और स्मॉलकैप 461.81 अंक अर्थात 1.65 प्रतिशत टूटकर 27584.59 अंक पर आ गया।

बाजार विश्लेषकों के अनुसार, पिछले सप्ताह सेंसेक्स और निफ्टी लगातार छठे दिन गिरते हुए सप्ताहांत पर ढाई प्रतिशत से अधिक की गिरावट पर रहा। बाजार पहले से ही उच्च स्तर पर जाने के लिए संघर्ष कर रहा था और अब अमेरिकी बॉन्ड प्रतिफल में उछाल के कारण वैश्विक बाजारों में बिकवाली सेंसेक्स-निफ्टी के लिए बाधक बनी रही।

घरेलू शेयर बाजार बाजार निकट अवधि में अमेरिकी बॉन्ड प्रतिफल और डॉलर सूचकांक की गति के साथ-साथ वैश्विक बाजारों की दिशा पर नजर रखेगा क्योंकि वर्ष 2023 की पहली छमाही में अमेरिका में ब्याज दर परिदृश्य एक प्रमुख कारक बना रहेगा। वर्तमान में बाजार भू-राजनीतिक स्थिति पर अधिक प्रतिक्रिया नहीं दे रहा है। स्थानीय स्तर पर अगले सप्ताह 28 फरवरी को वित्त वर्ष 2022-23 की तीसरी तिमाही के जीडीपी के आंकड़े जारी होने वाले हैं, जिसका बाजार पर स्पष्ट असर देखा जा सकेगा। इसके साथ ही अगले सप्ताह फरवरी की वाहन बिक्री के आंकड़े भी आने वाले हैं। बाजार को दिशा देने में इसकी भी महत्वपूर्ण भूमिका रहेगी।

बीते सप्ताह सेंसेक्स की शीर्ष 10 में नौ कंपनियों का बाजार पूंजीकरण 1.87 लाख करोड़ रुपये घटा

नई दिल्ली, एजेंसी

सेंसेक्स की शीर्ष 10 सबसे मूल्यवान कंपनियों में से नौ के बाजार पूंजीकरण (मार्केट कैप) में बीते सप्ताह सामूहिक रूप से 1,87,808.26 करोड़ रुपये की गिरावट आई। सबसे अधिक नुकसान एचडीएफसी बैंक और रिलायंस इंडस्ट्रीज को हुआ। बीते सप्ताह बीएसई का 30 शेयरों वाला सेंसेक्स 1,538.64 अंक या 2.52 प्रतिशत नीचे आया। बाजार में इस बात को लेकर चिंता है कि मुद्रास्फीति की वजह से अमेरिकी केंद्रीय बैंक ब्याज दरों में और बढ़ोतरी कर सकता है। इसके अलावा विदेशी कोषों की निकासी से भी बाजार की धारणा पर असर पड़ा। समीक्षाधीन सप्ताह में आईटीसी को छोड़कर शीर्ष 10 में शा8मिल अन्य सभी कंपनियों के बाजार मूल्यांकन में गिरावट आई। सप्ताह के दौरान एचडीएफसी बैंक का बाजार मूल्यांकन 37,848.16 करोड़ रुपये घटकर 8,86,070.99 करोड़ रुपये रह गया। रिलायंस इंडस्ट्रीज की बाजार हैसियत में 36,567.46 करोड़ रुपये की गिरावट आई और यह 16,14,109.66 करोड़ रुपये रह गई। टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस) का बाजार पूंजीकरण 36,444.15 करोड़ रुपये के नुकसान से 12,44,095.76 करोड़ रुपये पर और एचडीएफसी का 20,871.15 करोड़ रुपये की गिरावट के साथ 4,71,365.94 करोड़ रुपये पर आ गया। आईसीआईसीआई बैंक की बाजार हैसियत 15,765.56 करोड़ रुपये घटकर 5,86,154.58 करोड़ रुपये रह गई। इन्फोसिस का मूल्यांकन 13,465.86 करोड़ रुपये के नुकसान से 6,52,862.70 करोड़ रुपये पर आ गया।

भारती एयरटेल का बाजार पूंजीकरण 10,729.2 करोड़ रुपये घटकर 4,22,034.05 करोड़ रुपये रह गया। भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) का बाजार मूल्यांकन 8,879.98 करोड़ रुपये के नुकसान से 4,64,927.66 करोड़ रुपये पर आ गया। हिंदुस्तान यूनिलीवर की बाजार हैसियत 7,236.74 करोड़ रुपये घटकर 5,83,697.21 करोड़ रुपये रह गई। इस रुख के उलट आईटीसी का बाजार पूंजीकरण 2,143.73 करोड़ रुपये के उछाल के साथ 4,77,910.85 करोड़ रुपये पर पहुंच गया। शीर्ष 10 कंपनियों की सूची में रिलायंस इंडस्ट्रीज पहले स्थान पर कायम रही। उसके बाद क्रमशः टीसीएस, एचडीएफसी बैंक, इन्फोसिस, आईसीआईसीआई बैंक, हिंदुस्तान यूनिलीवर, आईटीसी, एचडीएफसी, एसबीआई और भारती एयरटेल का स्थान रहा।

चालू वित्त वर्ष में 300 अरब डॉलर से अधिक रहेगा सेवा निर्यात : एसईपीसी

नई दिल्ली, एजेंसी

सेवाओं का निर्यात अच्छी गति से बढ़ रहा है। चालू वित्त वर्ष 2022-23 में सेवा निर्यात 300 अरब डॉलर का आंकड़ा पार कर जाने की उम्मीद है। सेवा निर्यात संवर्द्धन परिषद (एसईपीसी) के महानिदेशक अभय सिन्हा ने रविवार को यह संभावना जताते हुए कहा कि वैश्विक अवसरों का लाभ उठाकर भारत वर्ष 2030 तक 1,000 अरब डॉलर का सेवा निर्यात लक्ष्य हासिल कर सकता है। उन्होंने कहा कि आगामी विदेश व्यापार नीति (एफटीपी) में समर्थन उपायों से सेवाओं का निर्यात और बढ़ाने में मदद मिलेगी। सिन्हा ने कहा कि आईटी और संबद्ध क्षेत्र, पर्यटन और स्वास्थ्य सेवा के बूते सेवाओं का निर्यात अच्छी वृद्धि दर्ज कर रहा है। उन्होंने कहा, मौजूदा दर के हिसाब से चालू वित्त वर्ष में सेवाओं का निर्यात 300 अरब डॉलर को पार कर जाएगा। वाणिज्य मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार, चालू वित्त वर्ष के पहले 10 माह (अप्रैल-जनवरी) के दौरान सेवा निर्यात 272 अरब डॉलर रहा है, जो इससे पिछले वित्त वर्ष की समान अवधि में 206.28 अरब डॉलर था। वित्त वर्ष 2021-22 में सेवा निर्यात 254 अरब डॉलर के उच्च स्तर पर पहुंच गया था। सेवा निर्यात में 40 से 45 प्रतिशत हिस्सा आईटी और आईटीईएस क्षेत्रों का है। इसके बाद यात्रा, पर्यटन, शिक्षा और बैंकिंग जैसी वित्तीय सेवाओं और लेखांकन का नंबर आता है। सिन्हा ने कहा कि 2030 तक 1,000 अरब डॉलर का लक्ष्य महत्वाकांक्षी नहीं है। उद्योग सरकार के सहयोग से इसे हासिल कर सकता है।

जीमेल ने एंड्रॉइड फोल्डेबल्स पर 2-पेन व्यू किया शुरू

सैन फ्रांसिस्को, एजेंसी। टेक दिग्गज गूगल ने घोषणा की है कि उसने एंड्रायड फोल्डेबल्स के लिए जीमेल पर 2-पेन व्यू शुरू किया है। टेक जायंट ने वर्कस्पेस अपडेट्स ब्लॉगपोस्ट में कहा, बड़ी स्क्रीन डिवाइस पर टॉप क्लास यूजर्स एक्सपीरियंस प्रदान करने के हमारे मिशन के हिस्से के रूप में, एंड्रॉइड फोल्डेबल-डिवाइस यूजर गूगल मीट और जीमेल के लिए 2 पेन व्यू तक पहुंच बनाने में सक्षम हैं।

ब्लॉगपोस्ट में आगे कहा गया, हम यह घोषणा करते हुए उत्साहित हैं कि इसमें जीमेल ऐप में चैट टैब भी शामिल है। इस महीने की शुरूआत में, टेक दिग्गज ने घोषणा की थी कि वह जीमेल में एक नई सुविधा शुरू कर रहा है जो एडमिन को स्पैम फिल्टर को अक्षम करने और सभी यूजर्स के लिए या सेंडर्स की एक विशिष्ट अनुमत सूची के लिए वॉर्निंग बैनर छिपाने की अनुमति देगा। कंपनी ने कहा था, अपने अंतिम यूजर्स के साथ एंटी-फिशिंग ट्रेनिंग आयोजित करते समय आप इन चेतावनियों को बंद करने पर विचार कर सकते हैं।

भारत, ब्रिटेन के वित्त मंत्री एफटीएफ पर आगे बढ़ने को सहमत

लंदन। भारत और ब्रिटेन के बीच मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) पर जारी वार्ता को आगे बढ़ाने और अगली द्विपक्षीय आर्थिक और वित्तीय बातचीत को जल्द करने के लिए दोनों देश सहमत हो गए हैं। ब्रिटिश सरकार ने यह बात कही है। भारत और ब्रिटेन के बीच हाल ही में सातवें चरण की वार्ता पूरी हुई है। भारत की अध्यक्षता में जी-20 वित्त मंत्रियों और केंद्रीय बैंक गवर्नरों की बैठक के समापन में ब्रिटेन के वित्त मंत्री जेरेमी हंट पहुंचे थे। उन्होंने यहां भारत की वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण के साथ वार्ता में द्विपक्षीय आर्थिक और वित्तीय संबंधों को मजबूत करने पर चर्चा की। ब्रिटेन के वित्त विभाग ने शनिवार को कहा, वित्त मंत्री सीतारमण से वार्ता के दौरान दोनों पक्ष ब्रिटेन-भारत एफटीए पर और द्विपक्षीय आर्थिक और वित्तीय संबंधों को और मजबूत करने पर राजी हुए। विभाग ने कहा, वे अगली ब्रिटेन-भारत आर्थिक और वित्तीय वार्ता की दिशा में आगे बढ़ने के लिए सहमत हो गए हैं। ब्रिटेन के वित्त मंत्री के रूप में अपने पहले अंतरराष्ट्रीय दौरे के दौरान हंट ने बेंगलुरु में व्यापारिक नेताओं से मुलाकात की और बहुराष्ट्रीय प्रौद्योगिकी कंपनी विप्रो के कार्यालयों का दौरा किया। ब्रिटेन में विप्रो में लगभग चार हजार लोग नौकरी करते हैं।

नीलामी में बेची गई ज्यादातर कोकिंग कोयला खानों से उत्पादन 2025 तक शुरू होगा

नई दिल्ली। निजी क्षेत्र को पिछले दो साल के दौरान नीलामी के जरिये बेची गई 10 कोकिंग कोयला खानों में से ज्यादातर में 2025 तक उत्पादन शुरू होने की संभावना है। कोयला मंत्रालय ने यह बात कही है। मंत्रालय ने कच्चे कोकिंग कोयले का उत्पादन बढ़ाने के लिए निजी क्षेत्र को 10 ब्लॉकों की नीलामी की है। लौह और इस्पात विनिर्माण का यह प्रमुख कच्चा माल है। कोयला मंत्रालय ने 2022 की अपनी उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए कहा, इनमें से अधिकांश ब्लॉकों से 2025 तक उत्पादन शुरू होने की उम्मीद है। इन खानों की अधिकतम रेटेड क्षमता (पीआरसी) 2.25 करोड़ टन है। घरेलू स्तर पर कच्चे कोकिंग कोयले का उत्पादन 2030 तक 14 करोड़ टन पर पहुंचने की उम्मीद है। कोल इंडिया (सीआईएल) ने मौजूदा खानों से कच्चे कोकिंग कोयले के उत्पादन को 2.6 करोड़ टन तक बढ़ाने की योजना बनाई है। साथ ही सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनी ने 2.2 करोड़ टन पीआरसी वाली नौ नई खानों की पहचान की है। देश के कोयला उत्पादन में कोल इंडिया की हिस्सेदारी 80 प्रतिशत की है।

सैमसंग गैलेक्सी जेड फोल्ड 5 में चीनी फोल्डेबल पैनल का नहीं होगा इस्तेमाल

सैन फ्रांसिस्को। टेक दिग्गज सैमसंग कथित तौर पर अपकमिंग गैलेक्सी जेड फोल्ड 5 स्मार्टफोन के लिए चीनी फोल्डेबल पैनल का इस्तेमाल नहीं करेगी। सैममोबाइल की रिपोर्ट के अनुसार, तकनीकी दिग्गज को अपने अपकमिंग फोल्डेबल्स के लिए पैनल बनाने की उम्मीद है। कंपनी के अपने अपकमिंग गैलेक्सी जेड फोल्ड 5 और गैलेक्सी जेड फ्लिप 5 डिवाइस के लिए टियरड्रॉप हिंज डिजाइन का उपयोग करने की संभावना है। 2023 के लिए कंपनी की पहली प्राथमिकता अपने फोल्डेबल फोन को पतला बनाना है। पिछले हफ्ते डिस्प्ले एनालिस्ट रॉस यंग ने भी दावा किया था कि सैमसंग अपने अपकमिंग फोल्डेबल डिवाइसेज के लिए डिस्प्ले बनाएगी। इस बीच, पिछले महीने यह बताया गया था कि गैलेक्सी जेड फोल्ड 5 में ड्रॉपलेट स्टाइल हिंज होगा, जो इसके डिस्प्ले क्रीज को कम करेगा। टिपस्टर आइस यूनिवर्स के मुताबिक, नए जेड फोल्ड 5 में नए हिंज के साथ भी वाटर रेजिस्टेंस फीचर होने की उम्मीद है। यह भी अफवाह थी कि गैलेक्सी जेड फोल्ड 5 में 108 एमपी का प्राइमरी रियर कैमरा और इन-बिल्ट स्टाइलस पेन (एस पेन) स्लॉट होगा।

आईफोन 15 प्रो मैक्स में होगी मोटी बॉडी, कोई फिजिकल बटन नहीं

सैन फ्रांसिस्को। टेक दिग्गज एप्पल के अपकमिंग आईफोन 15 प्रो मैक्स के 3डी मॉडल ऑनलाइन लीक हो गए हैं। इसमें पता चला है कि स्मार्टफोन मोटी बॉडी के साथ आएगा और इसमें फिजिकल बटन नहीं होंगे। शनिवार को एक ट्वीट में टिपस्टर आइस यूनिवर्स ने 3डी मॉडल पोस्ट किए और लिखा, 14 प्रो मैक्स की तुलना में फ्रेम पतला है। फ्रॉस्टेड प्रक्रिया के साथ टाइटेनियम अलॉय मिडल फ्रेम, टाइप-सी, कोई फिजिकल बटन डिजाइन नहीं। इससे पहले, यह अफवाह थी कि आईफोन 15 प्रो मैक्स स्मार्टफोन में सैमसंग का 2,500 निट्स डिस्प्ले पैनल होगा। पिछले महीने, यह बताया गया था कि आने वाले आईफोन 15 प्रो मैक्स में एक पेरिस्कोप फोल्डिंग जूम कैमरा होगा, हालांकि इसे केवल टॉप-एंड आईफोन मॉडल में शामिल किया जाएगा। इस बीच, एक अन्य रिपोर्ट में उल्लेख किया गया है कि आईफोन 15 प्रो और आईफोन 15 प्रो मैक्स मॉडल में हैप्टिक फीडबैक के साथ सॉलिड-स्टेट बटन, एक टाइटेनियम फ्रेम और बढ़ी हुई रैम जैसी नए फीचर्स शामिल होने की संभावना है।

बीटा यूजर्स के मैसेज को गायब होने से बचाएगा व्हाट्सऐप

सैन फ्रांसिस्को। मेटा-स्वामित्व वाला मैसेजिंग प्लेटफॉर्म व्हाट्सऐप कथित तौर पर एक नया फीचर शुरू कर रहा है, जो यूजर्स के आईओएस और एंड्रॉइड बीटा पर मैसेजों को गायब होने से बचाएगा। डब्ल्यूबीटाइंफो की रिपोर्ट के अनुसार, प्ले स्टोर और टेस्ट फ्लाइट ऐप से एप्लिकेशन के लेटेस्ट बीटा वर्जन को इंस्टॉल करने के बाद यह सुविधा कुछ बीटा टेस्टर्स के लिए शुरू की गई है। नई सुविधा के साथ, बीटा टेस्टर अब कीप ऑप्शन का इस्तेमाल कर कुछ गायब होने वाले मैसेज को बचा सकते हैं। चैट बबल के भीतर रखे गए मैसेज को एक बुकमार्क आइकन के साथ चिन्हित किया जाता है और वे रखे गए मैसेज सेक्शन में भी सूचीबद्ध होते हैं। इसके अलावा, बातचीत में शामिल यूजर्स इस फीचर्स को कंट्रोल करने में सक्षम होंगे। यूजर्स अनकीप ऑप्शन का इस्तेमाल कर चैट में मैसेज को हटा सकते हैं, हालांकि, ग्रुप एडमिन केवल वे लोग हो सकते हैं जिनके पास मैसेज को गायब होने से रोकने की क्षमता है। रिपोर्ट में कहा गया है कि मैसेज को गायब होने से बचाने की क्षमता वर्तमान में कुछ बीटा टेस्टर्स के लिए उपलब्ध है, और आने वाले दिनों में और भी अधिक यूजर्स के लिए रोल आउट होने की उम्मीद है।

गिरावट सरसों, सोयाबीन और बिनौला जैसे देशी तेल-तिलहनों का खपना लगभग मुश्किल हो गया है। सस्ते आयातित तेलों के बीच आगे सूखे मेवे की हैसियत रखने वाली मूंगफली पर भी असर पड़ा है...

बीते सप्ताह अधिकांश खाद्य तेल, तिलहन कीमतों में गिरावट का रुख

नई दिल्ली, एजेंसी

बीते सप्ताह दिल्ली तेल-तिलहन बाजार में कारोबार में गिरावट का रुख रहा। सरसों एवं सोयाबीन तेल-तिलहन और बिनौला तेल कीमतों में भारी गिरावट देखने को मिली। इसके साथ भारी मात्रा में आयात और लिवाल कम होने से पामोलीन दिल्ली तेल में मामूली गिरावट आई। जबकि मूंगफली तेल-तिलहन, कच्चे पामतेल (सीपीओ) एवं पामोलीन तेल कीमतें पिछले सप्ताहांत के स्तर पर बनी रहीं। सस्ते दाम पर वैश्विक मांग होने से केवल पामोलीन कांडला तेल का भाव मामूली सुधार दशार्ता बंद हुआ।

बाजार के जानकार सूत्रों ने कहा कि समीक्षाधीन सप्ताह में मंडियों में सरसों की आवक धीरे-धीरे बढ़ना शुरू हो गयी है लेकिन सस्ते आयातित तेलों की भरमार के बीच लिवाली कम है। सरसों, सोयाबीन और बिनौला जैसे देशी तेल-तिलहनों का खपना लगभग मुश्किल हो गया है। सस्ते आयातित तेलों के बीच आगे सूखे मेवे की हैसियत रखने वाली मूंगफली पर भी असर पड़ा है। हालांकि, हल्की स्थानीय मांग के अलावा निर्यात की साधारण मांग होने से इसके तेल-तिलहन के भाव पिछले सप्ताहांत के स्तर पर

पूर्ववत बने रहे। कच्चा पामतेल (सीपीओ) और पामोलीन तेल सस्ता होने के कारण इसकी वैश्विक मांग है और इस कारण इनकी कीमतों में कोई विशेष घट-बढ़ नहीं दिखी। इस स्थिति के बीच सीपीओ और पामोलीन दिल्ली के भाव पूर्वस्तर पर बने रहे जबकि पामोलीन कांडला तेल के भाव मामूली लाभ के साथ बंद हुए।

सूत्रों ने कहा कि देश में जरूरत से कहीं ज्यादा खाद्य तेलों का आयात हो रखा है जिसकी वजह से देशी तेल-तिलहन पस्त हैं। देश की मंडियों में सरसों की आवक शनिवार को बढ़कर 8-8.25 लाख बोरी हो गयी। मध्य प्रदेश के सागर में पिछले साल के बचे सरसों की बिक्री 4,500 रुपये प्रति क्विंटल के भाव पर हुई जो 5,000 रुपये प्रति क्विंटल के न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) से काफी कम है। इस पुराने सरसों के स्टॉक में तेल की मात्रा थोड़ी कम होती है। सस्ते आयातित तेलों पर नकेल नहीं लगाई गई तो सरसों की नई फसल भी एमएसपी से नीचे बिक सकती है और तिलहन उत्पादन बढ़ाने का सपना प्रभावित हो सकता है। सूत्रों ने कहा कि देश में एक फरवरी, 2022 को आयात किये जाने वाले खाद्य तेलों का स्टॉक पाइपलाइन में लगभग 18 लाख टन का था जो एक फरवरी, 2023 में बढ़कर 34.5 लाख टन हो गया जो एक रिकॉर्ड ही है। इसपर होने वाले विदेशी मुद्रा खर्च वर्ष 2020-21 में 1.17 लाख करोड़ रुपये था जो 2021-22 में बढ़कर लगभग 1.57 लाख करोड़ हो गया जो लगभग 34 प्रतिशत की वृद्धि को दशार्ता है।सूत्रों ने कहा कि देश में प्रति व्यक्ति खाद्य तेल की खपत लगभग 1.5 लीटर प्रति माह की है। जबकि दूध की प्रति व्यक्ति खपत लगभग 8-10 लीटर प्रतिमाह की है। यदि खाद्य तेल कीमतें महंगी हैं तो ऐसे में देश में तिलहन उत्पादन बढ़ जाना चाहिये था क्योंकि किसानों के लिए इसकी खेती में अधिक फायदा होता। लेकिन यदि ऐसा नहीं है और तिलहन उत्पादन बढ़ने के बाद भी हमारा आयात क्यों बढ़ रहा है?

सूत्रों के मुताबिक, पिछले सप्ताहांत के मुकाबले बीते सप्ताह सरसों दाने का थोक भाव 355 रुपये टूटकर 5,480-5,530 रुपये प्रति क्विंटल पर बंद हुआ। सरसों दादरी तेल भी समीक्षाधीन सप्ताहांत में 870 रुपये घटकर 11,280 रुपये प्रति क्विंटल पर बंद हुआ। वहीं सरसों पक्की घानी और कच्ची घानी तेल की कीमतें भी क्रमशः 120-120 रुपये घटकर क्रमशः 1,830-1,860 रुपये और 1,790-1,915 रुपये टिन (15 किलो) पर बंद हुईं।

सूत्रों ने कहा कि समीक्षाधीन सप्ताह में सोयाबीन दाने और लूज के थोक भाव भी क्रमशः 45-45 रुपये घटकर क्रमशः 5,405-5,535 रुपये और 5,145-5,165 रुपये प्रति क्विंटल पर बंद हुए।

इसी तरह समीक्षाधीन सप्ताहांत में सोयाबीन दिल्ली, सोयाबीन इंदौर और सोयाबीन डीगम तेल के भाव भी क्रमशः 470 रुपये, 530 रुपये और 280 रुपये की भारी गिरावट के साथ क्रमशः 11,780 रुपये, 11,550 रुपये और 10,320 रुपये प्रति क्विंटल पर बंद हुए। समीक्षाधीन सप्ताह में मूंगफली तेल-तिलहनों कीमतों के भाव पिछले सप्ताहांत के स्तर पर ही बने रहे। मूंगफली तिलहन का भाव 6,775-6,835 रुपये प्रति क्विंटल पर बंद हुआ। समीक्षाधीन सप्ताह में मूंगफली तेल गुजरात 16,550 रुपये प्रति क्विंटल और मूंगफली साल्वेंट रिफाइंड का भाव 2,540-2,805 रुपये प्रति टिन पर पूर्ववत बंद हुआ। सूत्रों ने कहा कि समीक्षाधीन सप्ताह में कच्चे पाम तेल (सीपीओ) का भाव 8,900 रुपये प्रति क्विंटल पर पूर्ववत रहा। जबकि पामोलीन दिल्ली का भाव मामूली गिरावट के साथ 10,440 रुपये पर बंद हुआ। सस्ता होने के कारण मांग निकलने से पामोलीन कांडला का भाव 20 रुपये का लाभ दशार्ता 9,480 रुपये प्रति क्विंटल पर बंद हुआ। देशी तेल-तिलहन की तरह बिनौला तेल भी समीक्षाधीन सप्ताह में 420 रुपये टूटकर 10,280 रुपये प्रति क्विंटल पर बंद हुआ।

एफपीआई ने फरवरी में अबतक शेयरों से 2,300 करोड़ रुपये निकाले

नई दिल्ली, एजेंसी। अमेरिकी केंद्रीय बैंक फेडरल रिजर्व की बैठक का ब्योरा जारी होने से पहले विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों (एफपीआई) ने सतर्क

इंग्लैंड के खिलाफ न्यूजीलैंड की फॉलोऑन खेलते हुए शानदार बल्लेबाजी

वेलिंग्टन, एजेंसी

वेलिंग्टन में खेले जा रहे दूसरे टेस्ट के तीसरे दिन का खेल खत्म होने तक न्यूजीलैंड ने फॉलोऑन खेलते हुए अपनी दूसरी पारी में 83 ओवर में 202/3 का स्कोर बना लिया था। टीम अभी भी इंग्लैंड के स्कोर से 24 रन पीछे है। इससे पहले आज न्यूजीलैंड की पहली पारी 209 के स्कोर पर सिमट गई थी और टीम इंग्लैंड के स्कोर से 226 रन पीछे रह गई थी। इंग्लैंड ने कीवी टीम को फॉलोऑन खेलने पर मजबूर किया।

कल के स्कोर 138/7 से आगे खेलते हुए न्यूजीलैंड के लिए कप्तान टिम साउदी और टॉम ब्लंडेल ने काफी देर तक मोर्चा संभाला और इस दौरान साउदी ने बेहद आक्रामक अंदाज में बल्लेबाजी की। दोनों के बीच 86 गेंदों में 98 रनों की साझेदारी हुई और न्यूजीलैंड ने 200 का स्कोर हासिल किया। साउदी ने शानदार अर्धशतक जड़ा और सिर्फ 49 गेंदों में पांच चौके और छह छक्के की मदद से 73 रन जड़े। इस दौरान उन्होंने टेस्ट क्रिकेट में सर्वाधिक छक्के लगाने के मामले में एमएस धोनी, केविन पीटरसन और मिस्बाह उल हक को पीछे छोड़ दिया। कुछ देर बाद ब्लंडेल भी 38 रन बनाकर 208 के स्कोर पर आउट हो गए। मैट हेनरी को 6 के निजी स्कोर पर स्टुअर्ड ब्रॉड ने आउट कर न्यूजीलैंड की पारी को समेट दिया। इंग्लैंड के लिए स्टुअर्ट ब्रॉड ने चार विकेट चटकाए। वहीं, जेम्स एंडरसन और जैक लीच को तीन-तीन सफलताएं मिली।

दूसरी पारी खेलते हुए न्यूजीलैंड ने लंच तक 19 ओवर में बिना किसी नुकसान के 40 रन बनाये। टॉम लैथम और डेवन कॉनवे की जोड़ी ने दूसरे सेशन में भी बेहतरीन बल्लेबाजी की और शतकीय साझेदारी करने में सफल रहे। चाय तक दोनों बल्लेबाजों ने स्कोर को 128 रनों तक पहुँच दिया था। अंतिम सेशन में यह साझेदारी 149 रनों पर टूटी और कॉनवे 61 रन बनाकर जैक लीच की गेंद पर आउट हुए। लैथम को जो रुट ने अपना शिकार बनाया और वह 83 रन बनाकर पवेलियन लौटे। विल यंग कुछ खास नहीं कर पाए और 8 रन बनाकर चलते बने। यहाँ से केन विलियमसन और हेनरी निकोल्स ने स्टंप्स तक और कोई विकेट नहीं गिरने दिया। विलियमसन 25 और निकोल्स 18 रन बनाकर नाबाद थे।

टिम साउदी ने एमएस धोनी को सबसे ज्यादा छक्के लगाने के मामले पीछे छोड़ा, टॉप 10 में शामिल हुए

नई दिल्ली। न्यूजीलैंड टीम के टेस्ट कप्तान और दिग्गज तेज गेंदबाज टिम साउदी ने बल्लेबाजी विभाग में एक नया कीर्तिमान हासिल कर लिया है। इंग्लैंड के खिलाफ चल रही टेस्ट सीरीज के दूसरे मुकाबले में टिम साउदी ने अपनी 73 रनों की पारी के दौरान 6 छक्के जड़े और टीम का स्कोर 200 के पार पहुंचा दिया। इस पारी में जड़े छक्कों की मदद से टिम साउदी टेस्ट क्रिकेट में सबसे ज्यादा छक्के लगाने की सूची में 10वें नंबर पर आ गए है। उन्होंने इस दौरान चार दिग्गज बल्लेबाजों को पीछे छोड़ दिया है, जिसमें एमएस धोनी का भी नाम शामिल है। इंग्लैंड के खिलाफ पहली पारी में टिम साउदी जब बल्लेबाजी करने आये तो उनके नाम टेस्ट क्रिकेट में 76 छक्के थे लेकिन 2 छक्के लगाते ही वह एमएस धोनी के रिकॉर्ड के बराबर पहुँच गए और उसके बाद उन्होंने चार छक्के और लगाये, जिसमें एमएस धोनी समेत केविन पीटरसन, मिस्बाह-उल-हक को पीछे छोड़ दिया है। जबकि मैथ्यू हेडन के रिकॉर्ड की बराबरी कर ली है। टिम साउदी ने यह कारनामा अपने 92 टेस्ट मैच पूरा किया और न्यूजीलैंड टीम को मुश्किल हालातों से निकाला है। पहली पारी में न्यूजीलैंड एक समय पर 103/7 स्कोर पर था लेकिन यहाँ से टिम साउदी ने तूफानी बल्लेबाजी की और टॉम ब्लंडल के साथ मिलकर 98 रनों की साझेदारी कर डाली। हालांकि इसके बाद टीम जल्दी सिमट गई और इंग्लैंड ने फॉलो ऑन लेने के बाद एक बार फिर कीवी टीम को बल्लेबाजी करने का न्योता दिया है।

टेस्ट क्रिकेट में सबसे ज्यादा छक्के लगाने वाले टॉप 3 बल्लेबाज

इंग्लिश टेस्ट टीम के मौजूदा कप्तान बेन स्टोक्स ने हाल ही में एक बड़ा कीर्तिमान अपने नाम किया था। स्टोक्स ने टेस्ट फॉर्मेट में सबसे ज्यादा छक्के लगाने का रिकॉर्ड अपने नाम कर लिया है, जो पहले न्यूजीलैंड के दिग्गज बल्लेबाज ब्रेंडन मैकलम के नाम दर्ज था। स्टोक्स ने 91 मैचों में 109 छक्के, मैकलम ने 101 मैचों में 107 छक्के और एडम गिलक्रिस्ट 100 छक्कों के साथ टॉप तीन में बने हुए है।

संक्षिप्त खबरें

भारतीय टीम का कोई उप कप्तान नहीं होना चाहिए : रवि शास्त्री

नई दिल्ली। टीम इंडिया के पूर्व कोच रवि शास्त्री का मानना है कि टीम इंडिया को कभी भी अपना उप कप्तान नहीं नियुक्त करना चाहिए। रवि शास्त्री के मुताबिक उप कप्तान नियुक्त करके चीजों को और कठिन नहीं बनाना चाहिए। उन्होंने ये बयान केएल राहुल को उप कप्तानी से हटाए जाने को लेकर दिया। दरअसल ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ टेस्ट सीरीज के बचे हुए दो मैचों के लिए किसी भी खिलाड़ी को उप कप्तान नहीं बनाया गया है। इससे पहले केएल राहुल उप कप्तान थे लेकिन अब उन्हें हटा दिया गया है। हालांकि चौंकाने वाली बात है कि किसी दूसरे खिलाड़ी के नाम का ऐलान नहीं किया गया है। रवि शास्त्री के मुताबिक उप कप्तान ना बनाना ही सही फैसला है। आईसीसी रिव्यू पोडकास्ट पर उन्होंने केएल राहुल को लेकर कहा, टीम मैनेजमेंट ये फैसला लेगी कि उप कप्तान कौन होगा। उन्हें केएल राहुल के फॉर्म के बारे में पता है और उनके माइंडसेट को भी वो जानते हैं। उन्हें ये भी पता है कि शुभमन गिल को वो किस तरह से देख रहे हैं। मेरा हमेशा से ये मानना रहा है कि भारतीय टीम का कभी कोई उप कप्तान ना बनाओ। इसकी बजाय मैं अपनी बेस्ट इलेवन के साथ मैदान में जाऊंगा और अगर कप्तान को मैदान से बाहर जाना पड़ता है तो फिर आपके पास कोई ऑप्शन नहीं रहेगा और कोई भी ये रोल ले सकता है। ये सिंपल है क्योंकि आप चीजों को मुश्किल नहीं बनाना चाहते हैं। आपको बता दें कि पूर्व क्रिकेटर सबा करीम का मानना है कि ऋषभ पंत की वजह से भारत के नए उप कप्तान के नाम का ऐलान नहीं किया गया है। उन्होंने कहा कि टीम मैनेजमेंट शायद पंत का इंतजार कर रही है। उन्होंने ये भी कहा कि एक्सीडेंट से पहले पंत को एक कप्तान के तौर पर ग्रूम भी किया जा रहा था।

डेविड वॉर्नर को लेकर फैसला लिया जाना चाहिए : मार्क टेलर

सिडनी, एजेंसी

ऑस्ट्रेलिया के पूर्व कप्तान मार्क टेलर ने चयनकताओं से आग्रह किया है कि वो डेविड वॉर्नर के फ्यूचर को लेकर स्पष्ट फैसला लें। मार्क टेलर के मुताबिक डेविड वॉर्नर की टीम में जगह को लेकर काफी ज्यादा कंफ्यूजन है और तुरंत ये फैसला लिया जाना चाहिए कि उन्हें टीम में बनाए रखना है या नहीं रखना है।

डेविड वॉर्नर का प्रदर्शन भारत के खिलाफ बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी के पहले दो मैचों में अच्छा नहीं रहा। नागपुर टेस्ट में बाएं हाथ का यह बल्लेबाज दोनों पारियों में सिर्फ 11 रन बना पाया था, जबकि दूसरे टेस्ट की पहली पारी में उन्होंने 15 रन बनाये थे। वॉर्नर के सिर पर दिल्ली टेस्ट के पहले दिन के खेल के दौरान बल्लेबाजी करते हुए गेंद लग गई थी। इसके बाद कनकशन रिप्लेसमेंट के तौर पर उनकी जगह मैट रेनशॉ को शामिल किया गया था। उनकी ये चोट इतनी गहरी है कि अब पूरी सीरीज से ही बाहर होना पड़ा है। वो वापस सिडनी लौट चुके हैं। मार्क टेलर के मुताबिक सेलेक्टर्स को वॉर्नर को लेकर कोई फैसला करना चाहिए। उन्होंने नाइन स्पोर्ट्स से बातचीत में कहा, क्या फ्यूचर के बारे में सोचने का ये सही समय है ? आप आमतौर पर एशेज के समय ये नहीं करते हैं। आप एशेज खत्म होने के बाद ये सब करते हैं। नॉर्मली इंग्लैंड में आप काफी सेटल टीम लेकर जाते हैं जिसमें से आपको लगता है कि एक बल्लेबाज फ्यूचर का बल्लेबाज होने वाला है। इसी तरह की टीम आप सेलेक्ट करते हैं। हालांकि टीम को पता नहीं है कि वो किस दिशा में जा रहे हैं। आपको बता दें कि वॉर्नर ने खुद अपने टेस्ट फ्यूचर को लेकर बड़ी प्रतिक्रिया दी थी। उन्होंने हाल ही में कहा था कि वो 2024 तक खेलेंगे। अगर चयनकताओं को लगता है कि मैं अपने स्थान के योग्य नहीं हूं, तो ऐसा ही हो।

जेम्स एंडरसन का पैट्रोल खत्म ही नहीं हो रहा है : आकाश चोपड़ा

नई दिल्ली। पूर्व क्रिकेटर आकाश चोपड़ा ने इंग्लैंड के दिग्गज तेज गेंदबाज जेम्स एंडरसन के 40 साल की उम्र में दुनिया का नंबर एक गेंदबाज बनने को लेकर बड़ी प्रतिक्रिया दी है। रविचंद्रन अश्विन और पैट कमिंस को पीछे छोड़कर जेम्स एंडरसन अब दुनिया के नंबर एक गेंदबाज बन गए हैं। आकाश चोपड़ा के मुताबिक जेम्स एंडरसन का पैट्रोल खत्म होने का नाम ही नहीं ले रहा है। जेम्स एंडरसन की अगर बात करें तो इस वक्त वो अपना 179वां टेस्ट मुकाबला खेल रहे हैं और अभी तक उन्होंने 25.94 की औसत से 685 विकेट चटका दिए हैं। इस दौरान उन्होंने 32 बार पांच विकेट हॉल और तीन बार 10 विकेट हॉल अपने करियर में लिए हैं। टेस्ट क्रिकेट में सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले गेंदबाजों की लिस्ट में वो इस वक्त तीसरे नंबर पर हैं। उनसे आगे मुथैया मुरलीधरन और शेन वॉर्न का नाम आता है। हालांकि तेज गेंदबाजों में जेम्स एंडरसन पहले नंबर पर हैं। स्टुअर्ट ब्रॉड 571 विकेटों के साथ दूसरे और ग्लेन मैक्ग्रा 563 विकेटों के साथ तीसरे पायदान पर हैं। अपने यू-ट्यूब चैनल पर शेयर किए गए वीडियो में आकाश चोपड़ा ने जेम्स एंडरसन को लेकर प्रतिक्रिया दी। उन्होंने कहा, जेम्स एंडरसन काफी अच्छा काम कर रहे हैं। 40 साल की उम्र में भी वो नंबर वन रैंकिंग के गेंदबाज बन गए हैं, जबकि वो एक तेज गेंदबाज हैं। उनका पैट्रोल खत्म ही नहीं हो रहा है। मैं 45 साल का हूं और मुझे क्रिकेट छोड़े हुए कई साल हो गए हैं जबकि मैं एक बल्लेबाज था।

शाहीन के खिलाफ खेलना एक चुनौती होती है : बाबर आजम

कराची, एजेंसी। पाकिस्तान टीम के कप्तान बाबर आजम ने पीएसएल के दौरान दिग्गज तेज गेंदबाज शाहीन शाह अफरीदी के खिलाफ खेलने को लेकर बड़ी प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने कहा कि अफरीदी के खिलाफ खेलना काफी बड़ी चुनौती होती है लेकिन वो जब भी मैदान में उतरते हैं तो अपना बेस्ट देने की कोशिश करते हैं। बाबर आजम के मुताबिक कभी अफरीदी डॉमिनेट करते हैं और कभी मैं डॉमिनेट करता हूं। दरअसल रविवार को बाबर आजम की पेशावर जाल्मी का सामना शाहीन अफरीदी की लाहौर कलंदर्स टीम के साथ होगा। इस दौरान फैंस को शाहीन अफरीदी और बाबर आजम के बीच एक बेहतरीन मुकाबला देखने को मिल सकता है। इस मैच से पहले बाबर आजम प्रेस कॉन्फ्रेंस के लिए आए और उनसे शाहीन अफरीदी के खिलाफ खेलने को लेकर सवाल पूछा गया। एक पत्रकार ने बाबर आजम से पूछा कि आप सबसे हंसकर मिलते हैं लेकिन अब आपका सामना शाहीन से है। इस पर बाबर आजम ने कहा, तो मैं क्या रोकर मिलूं उनसे? क्या करें? ना खेलें फिर? आप बताएं। जब भी हम शाहीन या लाहौर के खिलाफ खेलते हैं तो कोशिश हमेशा यही होती है कि अपना बेस्ट दिया जाए।

रमीज राजा ने उड़ाया शोएब अख्तर का मजाक, कहा - पहले ग्रेजुएट तो हो जाए

- टीवी शो के एंकर ने रमीज राजा से पूछा कि अख्तर अपनी बातों में हमेशा कहते है कि मैं पीसीबी का चेयरमैन होता तो ये करता या वो करता, जिसपर रमीज राजा ने अख्तर को बुरी तरह ट्रोल करते हुए बड़ी बात बोल दी
- शोएब अख्तर के बड़ा सुपरस्टार होने पर सवाल उठाए हैं। रमीज राजा के मुताबिक शोएब अख्तर को भारत के पूर्व क्रिकेटरों से सीखना चाहिए कि सार्वजनिक तौर पर कैसे बात की जाती है।

कराची, एजेंसी। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) के पूर्व चेयरमैन और दिग्गज बल्लेबाज रमीज राजा ने शोएब अख्तर को आड़े हाथों लिया है। उन्होंने हाल ही में अख्तर को एक भ्रमित सुपरस्टार बताया था। उनके मुताबिक पाकिस्तान में हर कोई ब्रांड बन सकता है लेकिन रमीज राजा ने उन्हें सलाह दी कि उससे पहले इन्सान बनना सीखिए। इसके बाद रमीज राजा ने शोएब अख्तर की शिक्षा को लेकर मजाक बना दिया। टीवी शो के एंकर ने रमीज राजा से पूछा कि अख्तर अपनी बातों में हमेशा कहते है कि मैं पीसीबी का चेयरमैन होता तो ये करता या वो करता, जिसपर रमीज राजा ने अख्तर को बुरी तरह ट्रोल करते हुए बड़ी बात बोल दी।

दरअसल, शोएब अख्तर अपने वीडियो में अक्सर पाकिस्तान टीम और क्रिकेट बोर्ड की आलोचना करते हुए दिखाई देते है और साथ ही यह भी कहते है कि पीसीबी को औसत लोगों की जरूरत नही है। यहाँ ऊपर सोच के बन्दे होने चाहिए। इसलिए अगर मैं पीसीबी का चेयरमैन होता तो यह करता या वह करता और अंत में कहते है कि पाकिस्तान क्रिकेट को ऊपर ले जाता। उनके इन बयानों पर पूर्व चेयरमैन रमीज राजा ने चुटकी लेते हुए कहा कि, 'उन्हें पीसीबी चेयरमैन के पद पर उपयुक्त होने के लिए सबसे पहले ग्रेजुएट होने की जरूरत है।'

रमीज राजा ने इससे पहले पूर्व दिग्गज तेज गेंदबाज शोएब अख्तर पर निशाना साधा था। उन्होंने शोएब अख्तर के बड़ा सुपरस्टार होने पर सवाल उठाए हैं। रमीज राजा के मुताबिक शोएब अख्तर को भारत के पूर्व क्रिकेटरों से सीखना चाहिए कि सार्वजनिक तौर पर कैसे बात की जाती है। रमीज राजा ने आगे कहा 'इंडिया में कभी ऐसा नहीं होता है कि सुनील गावस्कर ने राहुल द्रविड़ को लेकर कुछ भला-बुरा कहा हो, या सचिन तेंदुलकर ने सौरव गांगुली के बारे में कमेंट किया हो। ये केवल पाकिस्तान में होता है कि जिसका काम है उसे करने नहीं दिया जाता है।'

बांग्लादेश के खिलाफ वनडे सीरीज के लिए इंग्लैंड ने की टॉम एबेल की रिप्लेसमेंट की घोषणा

लंदन, एजेंसी

1 मार्च से बांग्लादेश की मेजबानी में इंग्लैंड को वनडे सीरीज का आगाज करना है। इस सीरीज के लिए इंग्लैंड ने स्क्वाड की घोषणा पहले ही कर दी थी लेकिन अनकैप्ड ऑलराउंडर टॉम एबेल चोटिल होकर बाहर हो गए थे। ऐसे में उनकी रिप्लेसमेंट के तौर पर दाएं हाथ के बल्लेबाज विल जैक्स को मौका मिला है। हाल ही में श्रीलंका ए के खिलाफ खेली गई अनाधिकारिक वनडे सीरीज के पहले मुकाबले के दौरान अपने तीसरे ओवर की पहली गेंद के दौरान समरसेट की कप्तानी करने वाले एबेल को बाएं हिस्से में स्ट्रेन हुआ और इसके बाद उन्हें मैदान से बाहर भी जाना पड़ा। उन्होंने अपने पूरे ओवर नहीं डाले और न ही रन चेस में बल्लेबाजी के लिए आये। बाद में उनका स्कैन हुआ, जिसमें चोट की पुष्टि हुई और रिकवरी के लिए उन्हें घर लौटना पड़ा।

ईसीबी ने रिप्लेसमेंट की घोषणा करते हुए कहा, विल जैक्स को टीम में बुलाया गया है और उनको आज शाम ढाका पहुंचा हैं। जैक्स हमारी टेस्ट टीम के साथ न्यूजीलैंड में हैं।

इंग्लैंड टीम के मीडिया मैनेजर मैट सोमरफोर्ड ने रिलीज के बाद क्रिकबज को बताया, पिछले हफ्ते श्रीलंका दौरे के दौरान इंग्लैंड लायंस के साथ साइड इंजरी के बाद टॉम एबेल सीरीज से पहले बाहर हो गए थे। एबेल की जगह जैक लेंगे। बता दें कि टॉम एबेल टी20 स्क्वाड का भी हिस्सा थे लेकिन पहले ही स्पष्ट कर दिया गया था कि इसके लिए रिप्लेसमेंट की घोषणा नहीं की जाएगी।

इंग्लैंड की टेस्ट टीम न्यूजीलैंड में हैं, इसी वजह से एक अलग टीम का चुनाव बांग्लादेश के खिलाफ वनडे सीरीज के लिए किया गया है। इंग्लैंड की टीम 24 फरवरी को बांग्लादेश पहुँच गई थी और उन्होंने 25 फरवरी को ढाका में अभ्यास भी किया। 2016 के बाद से इंग्लिश टीम ने पहली बार बांग्लादेश का दौरा किया है। तीन मैचों की वनडे सीरीज की शुरूआत 1 मार्च से ढाका में होगी और वनडे सुपर लीग का हिस्सा होगी। इसके बाद 9 से 14 मार्च के बीच तीन टी20 मैचों की सीरीज होगी।

बांग्लादेश दौरे के लिए इंग्लैंड का स्क्वाड

वनडे : जोस बटलर (कप्तान), विल जैक्स, रेहान अहमद, मोइन अली, जोफ्रा आर्चर, सैम करन, साकिब महमूद, डेविड मलान, आदिल राशिद, जेसन रॉय, फिल साल्ट, रीस टॉपली, जेम्स विंस, क्रिस वोक्स, मार्क वुड।

टी20 : जोस बटलर (कप्तान), रेहान अहमद, मोईन अली, जोफ्रा आर्चर, सैम करन, बेन डकेट, विल जैक्स, क्रिस जॉर्डन, डेविड मलान, आदिल राशिद, फिल साल्ट, रीस टॉपली, क्रिस वोक्स, मार्क वुड।

लीग 2 यूएई ने काफी धीमी बल्लेबाजी की और पूरे 50 ओवर खेलने के बावजूद वह 175 का आंकड़ा भी नहीं छू सके...

नामीबिया की वनडे मैच में एकतरफा जीत, प्रमुख बल्लेबाज ने खेली धुआंधार पारी

नई दिल्ली, एजेंसी

आईसीसी मेंस क्रिकेट वर्ल्ड कप लीग 2 के आठवें राउंड के आखिरी बचे हुए मैच में नामीबिया ने यूएई को सात विकेट से हराया। यूएई ने पहले खेलते हुए 50 ओवर में सिर्फ 166/9 का स्कोर बनाया, जिसके जवाब में नामीबिया ने 29वें ओवर में ही तीन विकेट खोकर जीत हासिल कर ली। माइकल वैन लिंगेन को 53 गेंदों में 71 रनों की तेज पारी के लिए प्लेयर ऑफ द मैच चुना गया।

टॉस हारकर पहले खेलते हुए यूएई को शुरूआती झटके लगे और उससे वह उबर नहीं सके। यूएई ने काफी धीमी बल्लेबाजी की और पूरे 50 ओवर खेलने के बावजूद वह 175 का आंकड़ा भी नहीं छू सके। कप्तान सी रिजवान ने 140 गेंदों में 60 रनों की धीमी लेकिन अहम पारी खेली और टीम को 150 के पार पहुंचाया। नामीबिया की तरफ से बेन शिकोंगो, टी लुंगामेनी और कप्तान गेरहार्ड इरास्मस ने दो-दो विकेट लिए। लक्ष्य के जवाब में आठवें ओवर में शुरूआती झटका लगने के बाद माइकल वैन लिंगेन ने लो-हांड्रे लॉरेंस (47) के साथ दूसरे विकेट के लिए 76 रनों की साझेदारी निभाई। वैन लिंगेन ने नाबाद रहते हुए टीम को 130 गेंद शेष रहते एकतरफा जीत दिला दी। वर्ल्ड कप लीग 2 में नामीबिया ने 36 मैचों में 19 जीत हासिल की और 39 अंकों के साथ तीसरे स्थान पर रहे।

स्कॉटलैंड और ओमान की टीम वर्ल्ड कप क्वालीफायर के लिए क्वालीफाई कर चुकी है, वहीं लीग के अंत में अंक तालिका में तीसरे स्थान पर रहने वाली टीम भी वर्ल्ड कप क्वालीफायर के लिए सीधे क्वालीफाई कर जाएगी। यूएई की टीम 28 मैचों में 29 अंक के साथ पांचवें स्थान पर हैं, लेकिन उनके पास टॉप 3 में पहुंचने का मौका है। यूएई के 8 मैच बचे हुए हैं, जिसमें उन्हें कम से कम 5 जीत हासिल करनी है। नेपाल की टीम 8 मैचों में 26 अंकों के साथ छठे स्थान पर हैं और उनके पास भी टॉप 3 में पहुंचने का मौका है।

दिनेश कार्तिक की शानदार बल्लेबाजी के बावजूद टीम की रोमांचक हार, फाइनल में मुंबई इंडियंस के खिलाड़ी की जबरदस्त मैच जिताऊ पारी

मुंबई, एजेंसी। डीवाई पाटिल टी20 कप के फाइनल मुकाबले में रिलायंस 1 ने डीवाई पाटिल ग्रुप बी को फाइनल मुकाबले में 1 रन से रोमांचक तरीके से हराते हुए खिताब अपने नाम किया। पहले बल्लेबाजी करते हुए रिलायंस ने 19.5 ओवर में 153/10 का स्कोर बनाया, जवाब में डीवाई पाटिल की टीम पूरे ओवर खेलते अपने सभी विकेट खोकर 152 रन ही बना पाई और मुकाबला हार गई। टॉस जीतकर डीवाई पाटिल ग्रुप बी ने फील्डिंग चुनी और उनका फैसला शुरूआत में सही भी साबित हुआ। रिलायंस ने दूसरे ही ओवर में ओपनर कृष्णा का विकेट गंवाया, जो 4 रन बनाकर 16 के स्कोर पर आउट हुए। तिलक वर्मा को अपना खाता खोलने का भी मौका नहीं मिला और उन्हें बलतेज सिंह ने चलता किया। यहाँ से रोहित रायडू और ऋतिक शौकीन ने पारी को आगे बढ़ाया और स्कोर को 77 तक ले गए। रायडू 43 रन बनाकर आउट हुए। शौकीन ने धमाकेदार बल्लेबाजी की और 34 गेंदों में चार चौके और तीन छक्के की मदद से 53 रनों की पारी खेली। निहाल वढेरा ने 20 और विष्णु विनोद ने 16 रन बनाये। निचले क्रम से कुछ खास योगदान नहीं आया और टीम एक गेंद शेष रहते ही आउट हो गई। डीवाई पाटिल ग्रुप बी की तरफ से बलतेज सिंह ने चार और विनीत सिन्हा ने तीन विकेट लिए। जवाबी पारी खेलते हुए डीवाई पाटिल की शुरूआत भी कुछ खास नहीं रही और टीम को 20 के स्कोर पर पहला झटका लगा। 32 के स्कोर पर यश ढुल भी 7 रन बनाकर चलते बने। यहाँ से हार्दिक तमोरे और चिन्मय सुतार स्कोर को 80 के पार ले गए। चिन्मय ने 23 और हार्दिक ने 43 रनों की पारी खेली। दिनेश कार्तिक ने भी 18 गेंदों में पांच चौके लगाते हुए 27 रन बनाये। कुछ और विकेट गिरे और मामला आखिरी ओवर तक पहुँच गया। आखिरी ओवर में जीत के लिए 7 रनों की दरकार थी लेकिन टीम सिर्फ 5 रन बना पाई और मुकाबला हार गई। रिलायंस के लिए मधवाल ने तीन विकेट अपने नाम किये।

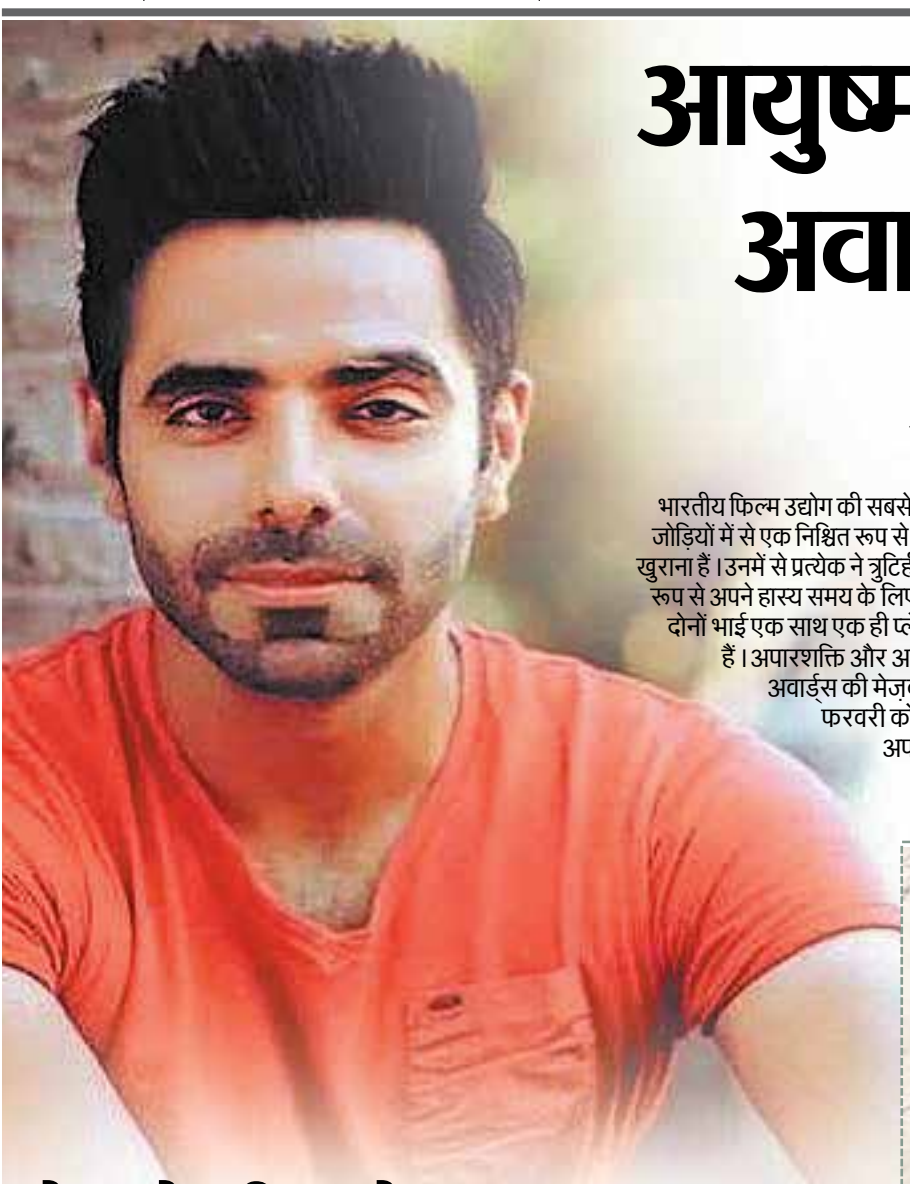

आयुष्मान के साथ जी सिने अवार्ड्स को होस्ट करेंगे अपारशक्ति खुराना

भारतीय फिल्म उद्योग की सबसे प्रतिष्ठित और यादगार भाई जोड़ियों में से एक निश्चित रूप से अपारशक्ति और आयुष्मान खुराना हैं। उनमें से प्रत्येक ने त्रुटिहीन अभिनय कौशल, विशेष रूप से अपने हास्य समय के लिए अपनी छाप छोड़ी है। अब दोनों भाई एक साथ एक ही प्लेटफार्म पे नज़र आने वाले हैं। अपारशक्ति और आयुष्मान इस साल ज़ी सिने अवार्ड्स की मेज़बानी करेंगे। दोनों भाई 26 फरवरी को मुंबई में होने वाले मंच पर अपना बेस्ट देने की तैयारी में जुट गए हैं। अपारशक्ति कहते हैं, भाई के साथ काम करना हमेशा शानदार रहा है। हमने पहले एक साथ एक और शो की मेज़बानी की थी और वह बहुत मज़ेदार था। जब काम की बात आती है, तो हम जानते हैं कि यह एक पेशेवर प्रतिबद्धता है और हम एक साथ ज़्यादा नहीं आते हैं। लेकिन हमारी व्यक्तिगत बैकग्राउंड को देखते हुए यह निश्चित रूप से शो में आकर्षण और मस्ती की एक परत जोड़ता है और मुझे आशा है कि हम इसे मंच पर ला लोगो के सामने ला सके। हम उम्मीद करते है अवार्ड को शाम को यादगार बजाए और हम दोनों उस पर अपना सर्वश्रेष्ठ परफोर्मेंस करने जा रहे हैं। यह पहली बार नहीं है जब अपारशक्ति और आयुष्मान मंच संभाल रहे हैं।

शालीन भनोट, ईशा सिंह और मोनालिसा बेकाबू में मुख्य भूमिका में नजर आएंगी

मनोरंजन इंडस्ट्री के जाने-माने चेहरे शालीन भनोट, ईशा सिंह और मोनालिसा को नए फैंटेसी ड्रामा बेकाबू में मुख्य भूमिका निभाने के लिए अनुबंधित किया गया है। इसमें जैन इमाम और शिवांगी जोशी भी प्रमुख भूमिकाओं में हैं। शालीन भनोट ने कहा कि मैं अपने दर्शकों को बिग बॉस 16 में मेरे कार्यकाल के दौरान मुझे बहुत प्यार करने के लिए धन्यवाद देना चाहता हूं। मैं आभारी हूं कि एकता कपूर ने मुझे घर से बाहर निकलने से ठीक पहले बेकाबू में मुख्य भूमिका की पेशकश की। मुझे लगता है कि विजेता की घोषणा से पहले ही मैंने शो जीत लिया। शो का हिस्सा बनने के बारे में बात करते हुए शालीन ने कहा कि फैंटेसी रिवेंज ड्रामा जेनरे (रचना-पद्धति या शैली) की खोज करना मेरे लिए पहली बार है और मैं एक राक्षस की भूमिका निभाते हुए नजर आऊंगा, जो अपने वंश के रहस्यों की खोज करने वाला है। यह शो फैंटेसी शैली को फिर से नया रूप देने वाला है और इसे टीवी पर एक बिल्कुल नए स्तर पर ले जाने वाला है। रिपोर्ट के अनुसार, यह शो परियों और राक्षसों की दो अलग-अलग दुनिया के इर्द-गिर्द घूमता है। शो में परी की भूमिका निभाने को लेकर अपनी उत्तेजना व्यक्त करते हुए, एक था राजा एक थी रानी की अभिनेत्री ईशा सिंह ने साझा किया, मैं परी की भूमिका निभाने को लेकर रोमांचित हूं। यह एक ड्रीम रोल है, जो चैनल में मेरी घर वापसी का प्रतीक है, जिसने टेलीविजन पर फैंटेसी जेनरे को अग्रणी बनाया है। दूसरी ओर कई भोजपुरी, हिंदी, बांग्ला, ओडिया, तमिल, कन्नड़ और तेलुगू भाषा की फिल्मों में काम करने वाली मोनालिसा ने कहा कि वह एक नई शैली को खोजने और एक नकारात्मक किरदार निभाने में खुश हैं। मुझे पूरी तरह से अलग लुक में देखा जाएगा और मैं यह जानने के लिए इंतजार नहीं कर सकती कि दर्शक इसके बारे में क्या सोचते हैं। मोनालिसा को नजर, नमक इस्क का, नच बलिए 8, स्मार्ट जोड़ी और कई अन्य टीवी शो में भी देखा गया था। बेकाबू जल्द ही कलर्स पर प्रसारित होगा।

हेरा फेरी 3 में संजय दत्त करेंगे विलेन का रोल, अक्षय और सुनील से होगा टकराव

फिरोज नाडियाडवाला की फिल्म हेरा फेरी-3 इन दिनों सिने गलियारों में सर्वाधिक चर्चा का विषय बनी हुई है। अक्षय कुमार की ना-नुकूर के चलते यह फिल्म पहले से ही चर्चाओं में थी और अब इस चर्चा फिल्म के निर्देशक और खलनायक को लेकर हो रही है। निर्देशन फरहाद सामजी को फिल्म से बाहर करने के लिए सोशल मीडिया यूजर्स ने कैंपन शुरू कर दिया है वहीं दूसरी ओर अक्षय कुमार की लगातार असफलताओं को देखते हुए फिरोज नाडियाडवाला ने संजय दत्त को फिल्म में खलनायक के रूप में शामिल करके फिल्म को बॉक्स ऑफिस पर सफल बनाने का कदम उठा लिया है।

बॉलीवुड हंगामा की रिपोर्ट के मुताबिक, फिल्म हेरा फेरी 3 में विलेन का रोल निभाने के लिए संजय दत को चुना गया है। इस फिल्म में संजय दत्त का रोल काफी दिलचस्प होगा जो लोगों पागल करने वाला होगा। रिपोर्ट में बताया गया है कि फिल्म हेरा फेरी 3 में संजय दत्त का रोल अंधे व्यक्ति का और काफी अजीब होगा। संजय दत्त ने इस फिल्म को करने के लिए हां कर दी है और वह विलेन का किरदार निभाएंगे। मीडिया रिपोर्ट में बताया गया था कि अक्षय कुमार, सुनील शेट्टी और परेश रावल ने फिल्म हेरा फेरी 3 की शूटिंग शुरू कर दी है। फिल्म का निर्देशन फरहाद सामजी करर रहे हैं। जब से यह खबर सोशल मीडिया पर वायरल हुई है तब से यूजर्स ने हेरा फेरी-3 से फरहाद सामजी को बाहर करने की मुहिम छेड़ दी है। समाचारों में यह भी बताया गया है कि फिल्म हेरा फेरी 3 में अक्षय कुमार कैसे लौटे हैं, इसको लेकर कोई जानकारी नहीं है। पूर्व में यह कहा जा रहा था कि अक्षय कुमार अनीस बज्मी के विचारों से सन्तुष्ट नहीं थे, वे इसकी पटकथा में कुछ बदलाव चाहते थे, जिनके लिए अनीस बज्मी तैयार नहीं थे। शायद इसी कारण से अनीस बज्मी को बाहर का रास्ता दिखा दिया गया और उनके स्थान पर फरहाद सामजी को लिया गया। साथ ही इस बात के समाचार भी हैं कि हेरा फेरी 3 में अक्षय द्वारा सुझाए गए बदलावों को मान लिया गया है। इस बात की अटकलें लगाई जा रही हैं कि अक्षय कुमार को वापस लाने में फिरोज नाडियाडवाला और सुनील शेट्टी का योगदान है।

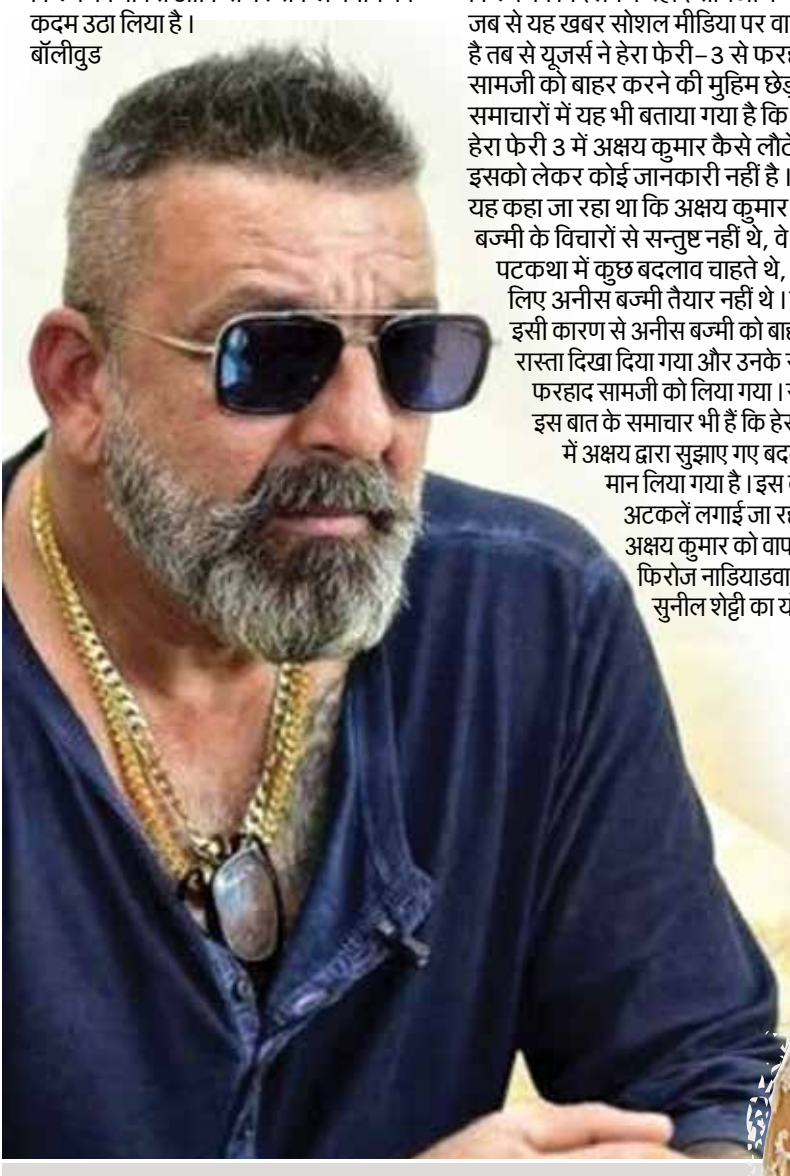

अक्षय कुमार ने करियर में कई बार अपने उतार चढ़ाव फेस किया है। एक बार तो बैक टू बैक 16 फिल्में फ्लॉप दी थी। अब एक बार फिर अक्षय कुमार मुश्किल वक्त से जूझ रहे हैं। जहां बैक टू बैक 3-4 फिल्में फ्लॉप दे चुके हैं। ऐसे में अक्षय कुमार ने फ्लॉप होती फिल्मों की जिम्मेदारी ली है और बोला है कि ये उनकी गलती है।

बैक टू बैक फ्लॉप हुई फिल्में तो बोले अक्षय कुमार- मेरी गलती है

अक्षय कुमार दमदार अभिनेता ही नहीं बल्कि बेबाक इंसान भी हैं। जो सीधी सपाट बात करने में विश्वास रखते हैं। बैक टू बैक फ्लॉप फिल्मों के चलते अक्षय कुमार के करियर पर लगातार सवाल खड़े हो रहे हैं। कुछ उन्हें रिटायरमेंट की सलाह दे रहे हैं तो कुछ उनके काम करने के स्टाइल पर सवाल खड़े कर रहे हैं। ऐसे में बिंदास अक्षय कुमार ने लगातार फ्लॉप होती फिल्मों पर जवाब दिया है। उन्होंने फ्लॉप होती फिल्मों की जिम्मेदारी ली। बता दें हाल में ही अक्षय कुमार की एक्टर इमरान हाशमी के साथ सेल्फी रिलीज हुई। ये फिल्म भी पहले दिन बॉक्स ऑफिस पर सुस्त ओपनिंग कर पाई। जिसके बाद कंगना रनौत ने भी उनकी फिल्म को फ्लॉप बताया था। अक्षय कुमार की आखिर हिट फिल्म की बात करें तो रोहित शेट्टी की कॉप यूनिवर्स की सूर्यवंशी थी जिसने 198 करोड़ का बिजनेस कर हिट का तमगा हासिल किया था। मगर इसके बाद से बैक टू बैक अक्षय कुमार की कई फिल्में फ्लॉप हुई हैं। इस बीच उन्हें ओटीटी का भी सहारा लेना पड़ा।

सिलेक्ट करने और फिल्म की कमियों को दूर करना होगा

आजतक के साथ बातचीत में लगातार तीन-चार फ्लॉप फिल्मों पर बात करते हुए अक्षय कुमार ने कहा- ये मेरे साथ पहली बार नहीं हो रहा। करियर में मैंने पहले भी एक साथ 16 फ्लॉप फिल्में दी हैं। एक वो भी समय था जब बैक टू बैक मेरी 8 फिल्में प्लॉप हुई थीं। अब वो समय है जब मेरी 3-4 फिल्में हैं जो बॉक्स ऑफिस पर फेल साबित हुई हैं। इन सबके पीछे मेरी गलती है। फिल्म का न चलना पूरी तरह से मेरी गलती है। अब दर्शक बदल गए हैं। तो आपको भी बदलना होगा। उनकी जरूरत बदल गई है तो आपको भी उसी हिसाब से काम करना होगा।

अक्षय ने 100 प्रतिशत अपनी गलती मानी

अक्षय कुमार ने करियर के बारे में बात करते हुए कहा कि ये समय मेरे लिए अलार्म की तरह है। आपकी फिल्म नहीं चल रही तो गलती आपकी है। मैं कोशिश कर रहा हूं वही कर सकता हूं। मैं सभी से ये भी कहना चाहता हूं कि अगर आपकी फिल्में नहीं चल रही तो आप ऑडियंस या किसी और को कसूरवार नहीं ठहरा सकते। ये मेरी गलती है। 100 प्रतिशत। अगर आपकी फिल्में नहीं चल रही इसका मतलब ये है कि आप क्या सिलेक्ट कर रहे हैं। संभव है कि आपकी फिल्म में सबकुछ उचित मात्रा में न हो। इसकी नाकामयाब हो रही हों।

अक्षय कुमार की हिम्मत की भी तो दाद दीजिए

बता दें कोरोना काल में अक्षय कुमार ऐसे पहले एक्टर थे जिन्होंने हिम्मत दिखाते हुए पहली फिल्म बेलबॉटम थिएटर में रिलीज की। इसके बाद वह सूर्यवंशी में नजर आए जो कि सुपरहिट साबित हुई। मगर इसके बाद रक्षाबंधन, सम्राट पृथ्वीराज, रामसेतु से अब सेल्फी तक फिल्मों को दर्शकों का प्यार नहीं मिला है।

आशिकी 3 की जोड़ी हुई कंफर्म? सारा-कार्तिक एक बार फिर साथ आ सकते हैं नजर!

बॉलीवुड एक्टर कार्तिक आर्यन की फिल्म आशिकी 3 को लेकर एक बड़ा अपडेट सामने आया है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक मेकर्स कई दिनों से फिल्म के लिए एक एक्ट्रेस की तलाश कर रहे थे। हालांकि अब उनकी तलाश पूरी होती दिखाई दे रही है। कहा जा रहा है कि इस फिल्म में सारा अली खान और कार्तिक आर्यन एक साथ नजर आ सकते हैं।

मेकर्स ने किया आशिकी 3 के लिए सारा को एप्रोच

आशिकी 3 के मेकर्स कार्तिक के अपोजिट सारा को कास्ट करना चाहते हैं और उनसे बातचीत भी कर रहे हैं। अगर सारा, कार्तिक के साथ स्क्रीन स्पेस शेयर करने का ऑफर एक्सेप्ट करती हैं, तो ये दोनों के फैंस के लिए किसी विजुअल ट्रीट से कम नहीं होगा। हालांकि, इस बात पर अभी तक मेकर्स की तरफ से किसी भी तरह की ऑफिशियल अनाउंसमेंट नहीं की गई है। अगर सारा इस ऑफर को एक्सेप्ट करती हैं, तो ये कार्तिक-सारा की एक साथ दूसरी फिल्म होगी। इससे पहले दोनों 2020 में आई इम्तियाज अली की फिल्म लव आज कल 2 में साथ नजर आए थे। वहीं बॉलीवुड हंगामा का ये भी है कि फिल्म के मेकर्स किसी तीसरी फीमेल एक्ट्रेस की भी तलाश कर रहे हैं।

सारा-कार्तिक कर चुके हैं एक-दूसरे को डेट

सारा और कार्तिक एक दूसरे को डेट भी कर चुके हैं। सारा ने कुछ साल पहले कॉफी विद करण में अपने पिता सैफ अली खान के सामने कहा था कि उन्हें कार्तिक पर क्रश है। साथ ही सारा ने कार्तिक को डेट करने की इच्छा भी जताई थी। ऐसे में जब दोनों ने लव आज कल 2 में साथ काम किया तो उनके अफेयर को लेकर अफवाहें जोर पकड़ने लगीं। हालांकि, फिल्म की रिलीज के बाद दोनों के अफेयर की खबरें भी हवा हो गईं।

कार्तिक-सारा के अपकमिंग प्रोजेक्ट्स

कार्तिक को हाल ही में रोहित धवन अभिनीत फिल्म शहजादा में देखा गया था, जो बॉक्स ऑफिस पर असफल रही। इसके अलावा कार्तिक कैप्टन इंडिया और सत्यप्रेम की कथा में भी नजर आएंगे। वहीं सारा के पास करीब 3-4 फिल्में हैं। वो पहले लक्ष्मण उटेकर की अनटाइटल्ड फिल्म में दिखाई देंगी। इस फिल्म में उनके साथ विक्की कौशल भी नजर आएंगे। उसके बाद वो ऐ वतन मेरे वतन में भी नजर आएंगी।

कंगना रनौत ने अक्षय कुमार की सेल्फी को बताया फ्लॉप

बॉलीवुड एक्ट्रेस कंगना रनौत ने एक बार फिर फिल्म निर्माता करण जौहर पर निशाना साधा और धर्मा प्रोडक्शन की फिल्म सेल्फी को फ्लॉप करार देते हुए इसके पहले दिन की कमाई की तुलना अपनी फिल्म धाकड़ से की। कंगना ने अपनी स्टोरी पर लिखा- करण जौहर की फिल्म सेल्फी ने पहले दिन मुश्किल से 10 लाख कमाए हैं, मैं एक भी ट्रेडर या मीडियाकर्मी को इसके बारे में बात करते हुए नहीं देखती हूं, जिस तरह से वे मुझे परेशान करते हैं, उनका मजाक उड़ाना या धमकाना तो भूल ही जाइए। अपनी अगली पोस्ट में कंगना ने एक आर्टिकल को फिर से शेयर किया है, जिसका टाइटल था, कंगना रनौत का मेल वर्जन! उन्होंने कैप्शन में लिखा, मैं सेल्फी फ्लॉप के बारे में न्यूज ढूंढ रही थी, मैंने पाया कि सभी न्यूज मेरे बारे में हैं। ये भी मेरी ही गलती है, वाह भाई करण जौहर वाह। सेल्फी मलयालम फिल्म ड्राइविंग लाइसेंस का आधिकारिक हिंदी रीमेक है। यह मैजिक फ्रेम्स, पृथ्वीराज प्रोडक्शंस, केप ऑफ गुड फिल्म्स और स्टार स्टूडियोज के साथ करण जौहर के धर्मा प्रोडक्शन द्वारा समर्थित है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, संपादक देवन प्रसाद द्वारा आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, ए-24, सेक्टर-8, नोएडा, उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं - बी-126, मायापुरी इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली-110064 से प्रकाशित। सह संपादकः रंजीत राय फोन नं-011-45795464 (नोटः प्रकाशित सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं और किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा दिल्ली उच्च न्यायालय में ही किया जाएगा।) RNI. No. DELHIN/2010/32488, Email: news@pratahkiran.com, मो. 9212228045, 8130691216, 9971557129